शाश्वत धर्म

फरवरी १९९२

आ.श्री कैलास
श्री महावीर जैन

संपादक - जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,
* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणीगुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृर्ति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा. * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद. • श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छ जैन संघ-आणंद

1313

शाश्वतधर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक - व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

संपादक : जे. के. संघवी

सहसंपादक : शांतिलाल सुराना

: संपर्क सूत्र :

☎ 5340724

शाश्वतधर्म कार्यालय,

जामली नाका, थाने - ४०० ६०१. (महाराष्ट्र)

सदस्यता शुल्क

बीस वर्षीय	– तीन सौ रूपये
पांच वर्षीय	– एक सौ रूपये
वार्षिक	– पच्चीस रूपये

विज्ञापन शुल्क (एकबार)

पूरा पृष्ठ	– ३००/- रूपये
आधा पृष्ठ	– १७५/- रूपये
पाव पृष्ठ	– १००/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	– ५००/- रूपये

(विशेषांक पर यह दर लागू नहीं है।)

वर्ष : ३९ ★ अंक ९ ★ फरवरी १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

आ.श्री ... जि. गांधीनगर

शाश्वत धर्म फरवरी १९९२

अनुक्रम

सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
वन्दन .... श्री मनोहरलाल कांठेड़ ४
श्री पारदर्शी ४
वन्दना .... श्री प्रकाश कांठेड़ ६
रहो अचल आबाद गुरुवर गादी .... शा. इन्द्रमल भगवानजी ७
बातचीत (साक्षात्कार) .... आ. जयंतसेनसूरिजी ९
बात आ पहुंची है यहां तक .... डॉ. नीलम जैन १५
श्री राजेन्द्र वचनामृत .... संकलित १६
(गीत) जयबोलो .... डॉ. तेजसिंह गौड़ १७
जिन प्रतिमा की यात्रा .... स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी म. सा. १९
(धारावाहिक) श्री श्रेयांसनाथजी जिनस्तवन (११) .... मुनि श्री जयानंदविजयजी २३
सरेराह चलते–चलते .... 'मुसाफिर' २५
ज्ञान कसौटी (११) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी २७
बिदाई के अवसर पर पुत्री को शिक्षा .... श्री आशय कासलीवाल २८
पशुओं का उत्पीड़न : हमारा मनोरंजन .... डॉ. श्री पन्नालाल मुंदड़ा २९
गुरुजयंत – कैसे तेरे गुण गाऊँ .... श्री नरेन्द्र पोरवाल ३०
शब्दसागर इनामी स्पर्धा (७) .... श्री प्रदीप एम. जैन ३१
शासन प्रभावना के स्वर्णिम पृष्ठ (५) .... श्री महेन्द्र जैन ३५
समाचार दर्शन ३९

गुजराती विभाग

प्रेरक वाणी पूज्यवरनी .... मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी ५७
परम्परा अने परिवर्तन .... मुनि श्री भुवनचंद्रजी ६०
निर्दोष पशुओंनी बेफाम कतलने रोकवा .... श्री सेवंतीलाल संघवी ६१
स्वास्थ्य चर्चा .... धर्ममित्र ६४

• लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है। •

---

१ अप्रैल १९९२ के पूर्व ग्राहक बनकर लाभ उठावें

'शाश्वतधर्म' की सदस्यता में माह अप्रैल १९९२ से शुल्क वृद्धि की जायेगी, अतः सभी ग्राहकों, प्रतिनिधियों एवं शुभेच्छकों से निवेदन है कि ३१ मार्च तक ग्राहक बनकर / बनाकर वर्तमान शुल्क प्रचलित शुल्क में ही सदस्य बनने के अवसर का लाभ उठावें। – **सम्पादक**

सम्पादकीय

जरूरत है जागृत होने की!

आझादी के बाद की केन्द्र एवं राज्य सरकारों की नीतियों का निष्पक्ष मूल्यांकन करें तो सूर्य के प्रकाश की तरह यह स्पष्ट है कि प्रजा विरोधी गलत राह अपनाने के कारण आज हमारा देश बर्बादी के कगार पर आकर खड़ा है। अर्थतंत्र की हालत जर्जरीत हो गयी है। हमारे सिर पर विदेशी कर्ज बढ़ रहा है।

देश के लाखों गांव सूनसान हो गये हैं। रोजी–रोटी के लिये प्रजा शहरों की ओर आ रही है। पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण से हमारे चुने हुए शासकों ने बड़े बड़े उद्योगों की स्थापना रोजगार उपलब्धि के नाम पर की। थोड़े से बेकारों को नौकरी दी, उधर गांवों के लाखों कारीगर बेकार हुए। रासायनिक खाद के उपयोग से जमीन को ज्यादा पानी की जरूरत पड़ने लगी एवं जमीन खराब होने से क्रमशः ज्यादा खाद एवं विविध जंतुनाशक दवाओं की आवश्यकता महसूस होने लगी। परिणाम स्वरुप जमीन की उर्वरा शक्ति निरंतर कम होती गयी, अनाज में से पोषक तत्व घटते गये एवं अनाज लागत खर्च बढ़ने से महंगा होता गया।

सात–सात पंचवार्षिय योजनायें निष्फल गयी है। नागरीकों द्वारा भरे गये टेक्स एवं बाहर से लायी गयी कर्ज राशि द्वारा आधुनिक विज्ञान एवं टेक्नोलोजी के नाम पर विदेशी वस्तुएं एवं विदेशी उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहित किया गया। विकास के भ्रमजाल में विदेशी कर्ज बराबर बढता गया। किसान जो पूर्ण रुप से स्वावलंबी था, उसे आधुनिकता के नाम पर बिजली, खाद, पानी के लिये आजीजी करनी पड़ती है। मध्यम वर्ग के लोगों को रहने के लिये नगरों में मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है। पंचवर्षीय योजनाओं के बावजूद करोड़ों लोग बेकार हैं।

विभिन्न प्रकार के कानूनों की कतार बनाकर व्यापारी वर्ग को परेशान किया जा रहा है।

देश के पशुधन का बेहद कत्ल हो रहा है, फलतः देश का पर्यावरण संतुलन भी खतरे में पड़ गया है। नये–नये कत्लखाने खोलकर देश की पशुसंपदा को समाप्त करने की ओर तुली सरकार पर सोचने लगते हैं तो कंपायमान हो जाते हैं कि यदि यही नीतियॉं रहीं तो आने वाला कल कैसा होगा? स्वदेशी अर्थतंत्र के लिये उपयोगी पशुओं के कत्ल को बंद करवाने के लिये, अब ज्यादा दुष्परिणाम हमारे सामने आये उसके पूर्व, जनता को जागृत होने की जरुरत है। अन्यथा वर्तमान नीतियॉं हमारी संस्कृति, संस्कारों को नष्ट कर देंगी।

J. K. Sanghvi

[जे. के. संघवी]

वन्दन

श्री मद् जयन्त सेन सूरीश्वर "मधुकरजी"
पावन चरणों मे वन्दन झुक कर जी ॥
मां भारती के हृदय के तुम सार हो।
भव सिन्धु से तीरने की पतवार हो ॥

धन्य है उस जननी को जिसने यह लाल दिया।
धन्य है उस गुरु को जिसने इनको ज्ञान दिया ॥
हजारों माईल चल कर धर्म की ज्योत जलाई है।
जिसने डग डग और पग पग सद् राह दिलाई है ॥

मासिक 'शाश्वत धर्म' प्रेरणा तुम्हारी पा प्रकाशित होता है ॥
जो भी पढ़े पत्रिका हृदय से वह सब कुछ पा जाता है ॥
वाणी और कलम में आश्चर्य सा जादू लगता है।
केवल चरण स्पर्श से आनन्द ही आनन्द पाता है ॥

क्षणक्षण में उपलब्धियों के बांधे वन्दनवार।
साहित्य संस्कृति से किया सामाजिक श्रृंगार ॥
जीवन के मूल्यो को आध्यात्म से समझाया।
धर्म निष्ठा से ही मानव कल्याण जतलाया ॥

अनुशासन, मर्यादा, सद्गुणों से समृद्ध पुरुष।
मताग्रह से उपर समग्रता के प्रमुख वक्ता ॥
भविष्य के युगदृष्टा, सृजन के सूत्रधार।
राष्ट्र के नैतिक चारित्रिक चेतना के वक्ता ॥

हे आचार्य प्रवर जग को जरुरत है तुम से जीवन की।
जिसमें भरा ज्ञान ही ज्ञान ऐसे जयन्तसेन सूरीश्वर की।
पुरी शताब्दी तक लाभान्वित हो आपसे संसार।
सौ बसन्त तक रहे प्राण की वीणा में झंकार ॥

श्री मनोहरलाल कांठेड (नागदा)

आचार्य पदारोहण, जयन्तसेन सूरिजी,
माघ सुदी तेरस का, शुभ दिन आया है।
पुण्य-कर्म जागे भारी, बड़े बाल-ब्रह्मचारी,
'मधुकर' नवकार, मंत्र मन भाया है।
मधुर व्याख्याता गुरु, तीर्थ प्रभावक गुरु,
साहित्य-मनीषी सदा, ज्ञान ही लुटाया है।
पाददर्शी-मनाते हैं, आठवीं ये वर्ष-गाँठ,
कोटि-कोटि वन्दनाएँ, गुरु गुण गाया है।

"पारदर्शी"

जिनवाणी की शुभ ज्ञान ज्योति दे रहे गुरूवर सदा,
उन्मार्गगामी मनुज को सन्मार्ग दाता सर्वदा।
सूरिवर राजेन्द्र पथ का अनुसरण स्वीकार है,
ऐसे गुरू जयन्त को नित नमन बारंबार है।

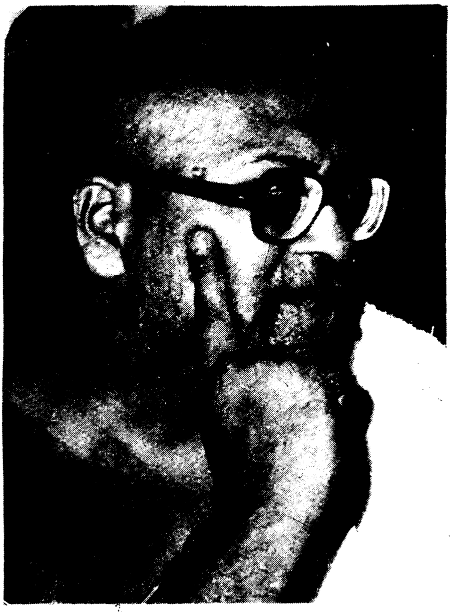

राष्ट्रसंत जैनाचार्य, साहित्य मनीषी, मधुर व्याख्याता
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' की
माहसुदि १३ को आचार्य पदारोहण की
८ वीं वर्षगांठ पर
कोटि–कोटि वंदनायें
शाश्वत धर्म एवं परिषद परिवार

– वन्दना –

रवि–किरणों सी चमके, गुरू मुख पर आभा निराली,
शान्त–स्वभावी, सरल हृदयी हैं गुरूवर प्रतिभाशाली।

पार्वती–स्वरुप नंदन आज हम सब करते अभिनन्दन,
धीर–गंभीर गहन, करतें हैं हम आपके चरणों में वंन्दन।

गच्छ के नायक हे गुरू आपनें कभी न पद–अनुराग किया,
अद्भुत संगठन क्षमता से सब जन का मन मोह लिया।

पूरे भारत वर्ष में घूम घूम कर 'राजेन्द्र ज्ञान प्रदान' किया,
सर्वत्र धर्म पताका फहराकर है शुभ कार्य महान किया।

राजेन्द्र–धन भूपेन्द्र हमारे यतीन्द्र विद्या जयन्त है पाये,
*हे आशा यही **प्रकाश** की 'राजेन्द्र किर्ती' जयन्त सेन चमकायें।*

प्रकाश कांठेड – जावरा

शाश्वत धर्म के सम्बन्ध में तथ्य संबंधी घोषणा

फार्म ४ (नियम ९) रजिस्टार आफ न्यूज पेपर्स के आदेशानुसार

प्रकाशन स्थान	: जामली नाका, थाने (महाराष्ट्र)
प्रकाशन अवधि	: मासिक
मुद्रक, प्रकाशक	: जे. के. संघवी
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: जामली नाका, थाने.
स्वामित्व	: अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद केन्द्र, मोहनखेड़ा तीर्थ.

मै जे. के. संघवी एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सत्य है।

जे. के. संघवी
सम्पादक

रहो अचल आबाद गुरुवर गादी

शा. इन्द्रमल भगवानजी (बागरा)

सूरिश्वर राजेन्द्र हुए सत्यवादी।
रहो अचल आबाद गुरूवर गादी॥

महा तपी जपी सद्ज्ञानीव्रती जयकारी।
श्रुत सागर नागर अति कृति मति सारी॥
मिथ्यामत जीपक गणदीपक सुविचारी।
समकित उचरा कई तार लिए नर नारी॥
नित रहे अप्रमत अडिग निडर अप्रमादी
रहो अचल आबाद गुरुवर गादी॥१॥

निस्पृही तथा निर्मायी स्थाइ जिन पंथी।
मोहकोह अरुलोभ की भेदी ग्रन्थी॥
किए तत्व ग्रहण परिपूर्णज्ञानोदधि मंथी।
जगतारक गुणधारक गुरूवर निर्ग्रन्थी॥
खल दल बल खंडन खास,अमितहित वादी।
रहो अचल आबाद गुरूवर गादी॥२॥

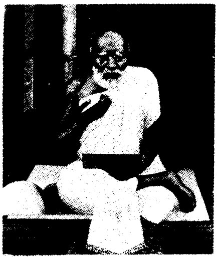

इस गादी पर **धनचद्रसूरिवर** नामी।
नितध्यान-ज्ञान में लीन रहे निष्कामी॥
तत्त्वज्ञ,प्रतिज्ञ,कृतज्ञ तज्ञ गुणधामी।
निज धर्म कर्म में तत्पर आतम रामी॥
जनगण मन में गुरू गण की रहो नितयादी।
रहो अचल आबाद गुरूवर गादी॥३॥

तद्नंतर **सूरी भूपेन्द्र** गच्छ पट्टधारी।
जो थे गरिमामय ज्ञान-आगम अधिकारी॥
साहित्य विशारद् परम प्रबुध्द कहाए।
वे शान्त दान्त पारंगत श्रमण सुहाए॥
ये ही दीपमुनि संपादक कोश सहभागी।
रहो अचल आबाद गुरूवर गादी॥४॥

सूरियतीन्द्र हुए फिर इसी गच्छ पट्टधारी।
गंभीर गिरा युत वाचस्पति व्यारव्यानी॥
श्रुत-अर्जन-सर्जन हितव्यस्त रहे अविरामी।
तलस्पर्शी मेधा धनी अजयी सद्वाग्म्मी॥
अमिधान कोश सह सम्पादक बड़भागी
रहो अचल आबाद गुरूवर गादी॥५॥

फिर सुकवि **विद्याचन्द्र सूरि** पट्टधारी।

रहे सेवा सुश्रूषा लीन पद्य गति प्यारी॥
कवि,पंडित जनगण प्रोत्साहक सुविचारी।
निज पद्गुरूता को नाथ सरलता धारी॥
पुण्यवंत सुधी शिष्यवृन्द के स्वामी।
रहो अचल आबाद गुरूवर गादी॥६॥
संप्रति **सूरिवरश्री जयन्तसेन** पट्टधारी।
गुरू-शासन कीर्ति सर्वाधिक विस्तारी॥
गुरू यतीन्द्र वपित परिषद-पादप विकसाया।
संगठित समाज कर उज्ज्वल भावि दरसाया॥
खल-दल-बल-बादल बिखर छिपे सब बागी।
रहो अचल आबाद गुरूवर गादी॥७॥

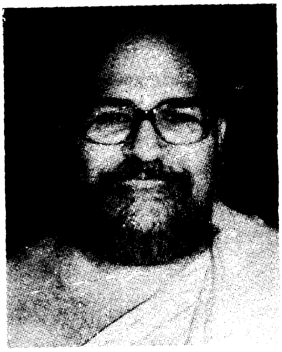

हे अभ्युदय गुरु गच्छ, अवश्य परिलक्षित।
तुम में गुरुगण-सामर्थ्य हुए परितिष्ठित॥
प्रतिबिम्बित तुममें राजेन्द्र सा समकित।
धनचंद्र गुरु सी जोड़कला भी विकसित॥
तुम शांत धीर भूपेन्द्र गुरु से रागी।
रहो अचल आबाद गुरुवर गादी॥८॥
गुरु यतिन्द्रसूरि सी कर्मठता है पायी।
सूरि विद्याचन्द्र सी विनय सरलता भायी॥
अदम्य साहसी अमानी शिष्टाचारी।
व्युत्पन्न मति कृत निश्चयी उग्रविहारी॥
वर चिंतन-लेखन-मनन मधुर व्याख्यानी।
रहो अचल आबाद गुरुवर गादी॥९॥
अवशिष्ट रहे गुरुवर को काज सुधारो।
भ्रमित-चलित-भटकों के भूत निवारो॥
(भूलको)
शोषित-पतित-दलितों की हो सुनवाई।
गुरुवर की क्रांति ज्योत बढ़ो अधिकाई॥
वह इन्द्रध्वजा सी अणनम रहो अबाधी।
रहो अचल आबाद गुरुवर गादी॥
श्री जयंतसेन सूरीश्वर रहो सतरागी।
गुरुवर की क्रांति ज्योत रहो नित जागी॥

आहार की मर्यादा व आहार-शुद्धि का ध्यान दोनों ही बातें व्यक्ति के जीवन निर्माण में सहायक हुयी हैं, होती हैं व होंगी

-आचार्य जयन्तसेनसूरिजी

स्थल : स्वर्णगिरितीर्थ; दि. २७-५-९१ समय शाम ४ बजे

जे. के. संघवी - आहार का शरीर पर क्या प्रभाव पडता है ?

आचार्य जयंतसेनसूरि - पार्थिव शरीर आहार के प्रभाव से प्रभावित रहता है। हम जिस प्रकार का आहार करते हैं; उसी प्रकार शरीर की सारी स्थितियाँ एवं स्वरूप का निर्माण होता रहता है, इसीलिये आहार शरीर की समस्त प्रकार की व्यवस्था में सहायक है। आहार की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित ढंग से अपनाया जाय तो शरीर स्वस्थ रह सकता है जिससे सारे कार्य करने में स्फूर्ति एवं अनेक प्रकार की आन्तरिक शक्तियों का प्रगटिकरण होता है।

जे. आहार विषयक उल्लेख किन जैनागमों में उपलब्ध है ?

आ. - आहार की मर्यादा व आहार शुद्धि का ध्यान दोनों ही बातें व्यक्ति के जीवन निर्माण में सहायक सिद्ध हुयी हैं, होती हैं व होंगी इसलिये उपासगदशांग, पिण्डनियुक्ति, ओघनिर्युक्ति, दशवैकालिक सूत्र, अंतगडदशांग व आचारांग आदि जैनागमों में आहार प्रणाली को पूर्ण रुप से समझाया गया है। समस्त जैनागमों में जहाँ-जहाँ आहार का विषय या प्रकरण आया है वहाँ आहार विधि व व्यवस्था को समझाया गया है।

जे. - आगम सूत्रों में मुनियों को बयालीस दोष टालकर गोचरी के लिये क्यों कहा गया है ?

आ. - दोष मानस पर असर करने वाली स्थिती को कहा गया है। दोष मुक्त आहार ग्रहण करने से मुनि के मानस पर एक विशुद्ध प्रभाव पड़ता है। दोष मानस को कलुषित कर सकता है, निर्दोष आहार मानस को निर्मल कर सकता है, इसी कारण से मुनियों की आहार विधि एवं

आहार ग्रहणविधि अलग से बतायी गयी है। आहार लेना और आहार करना दोनों की स्थिती का ध्यान रखने वाले मुनि निश्चित अपनी आंतरिक एवं बाह्य समस्त प्रकार की ऋद्धि और सिद्धि पाने में सफल होते हैं। आहार जितना गरिष्ठ होगा, तो वह तन-मन को प्रमत्तभाव वाला बना देगा। आहार जितना निर्मल, निर्दोष होगा, वह हमें प्रमत्तभाव से मुक्त बनाने वाला होगा। आहार करना है, शरीर को मात्र टिकाने के लिये, आहार इसलिये नहीं करना है कि जिससे हमारी अंतरबाह्यस्थिती प्रमत्तभाव युक्त हो जाये और हम आलस्य में समय व्यतीत कर दें। प्रमत्तभाव में मुनिजीवन के साधना की स्थिती समाप्त हो जाती है, इसीलिये जैनागमों में जैन मुनियों को दोष टालकर आहार करने का संदेश/आदेश दिया गया है। ऐसे आदेश का पालन करने वाला मुनि निश्चित ही बाह्य-अभ्यंतर स्थिती में निर्मल व अप्रमत्त बन सकता है।

जे. - जैनागमों में निशि भोजन (रात्रि भोजन) का निषेध क्यों किया गया है ?

आ. - हमारे तेजसकाय की ग्रंथियाँ सूर्य प्रकाश से जागृत होती है और किये गये आहार के पाचन में सहायक बनती है। सुर्य किरणे पाचन शक्ति को बल देती हैं। प्रकाश में आहार करने से शरीर में विकृति नहीं आती। अंधेरे में भोजन करने से भोजन में कितनी ही चीजें आ सकती है जिसे हम आंखों से देख नहीं सकते। सूर्य की गर्मी/रोशनी में कई सूक्ष्म जंतुओं का उद्भव नहीं होता वहीं अंधकार में/शीतकाल में उत्पन्न होकर भोजन में सम्मिलित हो जाते हैं जो शरीर में नाना प्रकार की व्याधियों के उत्पन्न करने में सहायक बनते हैं।

जे. - क्या बिजली के प्रकाश में भोजन करना उचित है ?

आ. - बिजली की रोशनी में बैठकर भोजन करने से अंधेरे के किटाणु तो हमारे निकट आते ही हैं लेकिन प्रकाश के किटाणु और नये उत्पन्न होते हैं। वे अग्निकाय जीवों के कीटाणु भी हमारे भोजन में सम्मिलित हो जाते हैं, जो और ज्यादा हानि करने में सहायक बन जाते हैं। सूर्य की किरणों वाली विशेषता बिजली के प्रकाश में नहीं होती जो हमारे आसपास आने वाले समस्त किटाणुओं को दूर कर सके। इस प्रकार बिजली की रोशनी में या रात्रि में भोजन करना स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद नहीं कहा जा सकता।

जे. - अर्थात् दिन में भी यदि लाइट (बिजली के प्रकाश) में भोजन करते हैं तो क्या वह रात्रिभोजन के अंतर्गत आता है ?

आ. - दिन में यदि भोजन करें तो लाइट करके भोजन करने की आवश्यकता नहीं रहती, सूर्य प्रकाश में ही बैठकर भोजन करना चाहिये। रात्रि भोजन त्याग वाले के लिये कहा गया है कि रात को बनाया हुआ रात को नहीं खाना, रात को बनाया हुआ दिन में नहीं खाना, दिन में बनाया हुआ रात को नहीं खाना, दिन में बनाया हुआ दिन में खाना, यही स्वास्थ्य के लिये उपयुक्त व सही भोजन कहा जा सकता है। अंधेरे में लाइट करने से अंधेरा तो बना हुआ है ही, लाइट करने से वहाँ भोजन करना लाभप्रद नहीं होता। दिन में भी जहाँ प्रकाश मिल रहा हो वहाँ भोजन करना उपयुक्त है।

जे. - जैनागमों में आहार के विषय को काफी गहराई से लिया गया है। पानी छानकर पीने का प्रावधान है, उससे क्या लाभ होता है व उसका समयकाल क्या है ?

आ. - पानी में प्रतिसमय जीवोत्पत्ति होती रहती है। पानी को एक-एक प्रहर के बाद नहीं तो मध्यान्ह के बाद तीसरे प्रहर में पानी को अवश्य छानना चाहिये। किन्तु पानी यदि उबालकर पिया जाता है, जो उसमें तीन प्रहर तक जीवोत्पत्ति की संभावना नहीं रहती, इसीलिये जैन मुनि मर्यादानुसार गर्म पानी का ही उपयोग करते हैं। पानी छानकर पीने से उसमें बाहर से आने वाले जीवजंतुओं से अपने को

बचाया जा सकता है एवं उनके जीवन की भी रक्षा होती है।

जे. - एक प्रश्न यह भी उठता है कि पानी उबालने से जीव मरते हैं फिर यह कैसे उपयुक्त है?

आ. - स्वास्थ्य दृष्टि के साथ हमारे यहाँ सैद्धान्तिक दृष्टि है। एक सिद्धान्त है- 'अल्प पाप, अधिक निर्जरा'। गर्म पानी करते वक्त एक बार जरूर जीवों की हानि हुयी किन्तु क्षण क्षण कच्चे पानी में जीवोत्पत्ति होती है और उससे लगने वाले दोष से बचा जा सकता है। इस प्रकार अल्प पाप जरूर हुआ है लेकिन दिन भर की निर्जरा के लाभ को ध्यान में रखते हुए गर्म पानी पीने का मार्गदर्शन दिया गया है।

जे. - क्या गर्म पानी स्वास्थ्य की दृष्टि से भी लाभदायक है?

आ. - गर्म पानी स्वास्थ्य के लिये परम लाभप्रद है। डाक्टर भी गर्म पानी के उपयोग की सलाह देते हैं। पानी गर्म करने से उसका भारीपन एवं विकृतियों का समाप्तीकरण होता है जिसे वह निर्मल व स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद बन जाता है।

जे. - द्विदल के विषय में समझाइये।

आ. - कठोल के अंतर्गत जैसे चना, मूंग, चवले आदि जिनकी दो फाड होती हो एवं उसमें से तेल न निकलता हो ऐसे पदार्थ कच्चे दूध, दही या छास के साथ मिश्रीत करने से उसमें जीवोत्पत्ति हो जाती है, इसलिये उन्हें त्याज्य कहा गया है। किन्तु यदि दूध दही या छास को इतनी गर्म करें कि हम उसमें अपनी अंगूली नहीं डाल सकें तो उनमें जीवोत्पति की शक्ति समाप्त हो जाने से कोई आपत्ति नहीं।

जे. - भक्ष्य-अभक्ष्य की व्याख्या समझाइये।

आ. - खाने योग्य वस्तु को भक्ष्य कहा जाता है एवं जो खाने योग्य नहीं है, हमारे लिये त्याज्य है, उसे अभक्ष्य कहा गया है। बावीस अभक्ष्य एवं बत्तीस अनंतकाय को त्याज्य माना गया है जिसका अलग-अलग विस्तृत वर्णन हमारे यहाँ मिलता है। जिसको जानकर उससे बचने वाला व्यक्ति दोष से मुक्त बनकर स्वास्थ्य की दृष्टि से वह अपने आपको सुरक्षित रख सकता है।

जे. - क्या बावीस अभक्ष्य के अंतर्गत ही अनन्तकाय आ जाता है?

आ. - हाँ, बावीस अभक्ष्य अनंतकाय के अंतर्गत ही है।

जे. - अनंतकाय का अर्थ?

आ. - एक शरीर के अंदर अनंत जीवों का रहना अनंतकाय है। जैसे आलू-जो एक पिंड है। एक पिंड में अनंत जीवों की स्थिती को ज्ञानियों ने माना है। आप कहेंगे कि इतने छोटे से पिंड में अनंतजीव कैसे रह जाते हैं? अनंत को अलग-अलग करके क्या दिखाया जा सकता है? ऐसा संभव नहीं। वैध के पास से गोली हम लाते हैं, छोटी सी गोली होती है। राई के दाने जितनी गोली में वैद्य कहता है कि इसमें पच्चीस वस्तुओं का मिश्रण है, किन्तु उन पच्चीस वस्तुओं को अलग-अलग करके दिखाना संभव नहीं है। इसीलिये इस विषय में ज्ञानियों के कथन को विश्वास, आस्था व अनुभव के आधार पर मानना चाहिये।

प्रकृति की रमणीय स्थली
गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा उद्धरित
श्री लक्ष्मणतीर्थ आलीराजपुर, जिला झाबुआ (म.प्र.)
दर्शनार्थ अवश्य पधारें।

जे. - अनंत व असंख्य में क्या फर्क है ?

आ. - संख्या के माध्यम से जो संख्या बाहर गये वे असंख्य है, संख्यातीत हो गये वे असंख्य है। जो अंतातीत हो गये वे अनंत हैं।

जे. - अनंतकाय को असंख्यकाय क्यों नहीं कह सकते ?

आ. - असंख्य भले ही संख्यातीत हो गये, वो संख्या जिसे हम गिन नहीं सकते अत: असंख्य कह दिया लेकिन असंख्य अनंत में समाविष्ट नहीं हो सकते क्योंकि अनंत अर्थात् जिसका अंत ही नहीं है। ज्ञानवान भी देखने बैठे तो उसके स्वरुप का अंत नहीं बता सकते अत: उसे अनंत कहते है।

जे. - तिल खाने योग्य हैं या नहीं ?

आ. - तिल को अभक्ष्य रूप में नहीं माना गया है। लेकिन उसकी समय मर्यादा है। उसे कार्तिक पूर्णिमा से फाल्गुनी पूर्णिमा तक भक्ष्य माना गया है। उसके बाद उपयोग वर्जित है।

जे. - क्या टमाटर बहुबीज है ?

आ. - इस विषय में दो मत चल रहे हैं। जिस समय बहुबीज कि व्याख्या की गयी, उस समय भारत में इसका प्रचलन नहीं था।

जे. - जमीकन्द का त्याग करने वालों को सूंठ हलदर वापरने में दोष लगता है ?

आ. - जीभ के स्वाद के लिये खाने को सर्वथा त्याग करने के लिये कहा है। जमीकन्द की अन्य चीजों की अपेक्षा सूंठ और हलदर स्वाद की दृष्टि से खा नहीं सकते। खाने योग्य न होते हुए भी स्वाद की दृष्टी से बहुलता में न खाकर दवाई की तरह थोडे प्रमाण में उपयोग होने से त्यागने की प्रक्रिया नहीं चल रही है।

जे. - जैनागमों में प्रत्येक वस्तु के उपयोग की कालमर्यादा बतायी गयी है। अमुक समय के बाद वह अभक्ष्य बन जाती है, ऐसा क्यों ?

आ. - ऋतु के अनुसार हवा चलने से उसमें जीवोत्पत्ति का कारण ज्ञानियों ने देखा है। हवा, प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ पर असर होता है, जिससे वह वस्तु अपने आप में भोग्य या अभोग्य बन जाती है।

जे. - उसका स्वाद उस समय बदल जाता है।

आ. - उसका स्वाद स्पर्श बदल जाता है उसमें विकृति आ जाती है। जैसे आद्रा नक्षत्र के बाद आम का सेवन नहीं करना चाहिये, इस बात को वैज्ञानिकों ने भी माना है। आद्रा नक्षत्र के बाद चाहे बरसात आये या न आये उससे प्रकृति व हवा में परिवर्तन आ जाता है। आद्रा नक्षत्र के बाद में आम के फल में हमेशा विकृति आ जाती है।

जे. - कई बार वर्षा आद्रा नक्षत्र के पूर्व भी आती है और यह निश्चित है कि वर्षा के बाद आम के स्वाद में फर्क भी पड़ जाता है तो ऐसे स्थिति में क्या आम पहले भी अभक्ष्य हो जाता है ?

आ. - हमारे यहाँ आद्रा नक्षत्र के बाद आने वाली हवा या बरसात की असर को ज्ञानियों ने माना है एवं चलित रस हो जाने के बाद कोई भी पदार्थ किसी भी समय त्याज्य हो जाता है

जे. - पापड़,वडी आदि वस्तुओं की समय मर्यादा कितनी कही गयी है ?

आ. - जहाँ वस्तु के स्वभाव, स्वाद में परिवर्तन आ जाता है, वह वस्तु त्याज्य बन जाती है।

जे. - विगई व महाविगइ की व्याख्या समझाइये ?

आ. - जो मानस, स्वास्थ्य, प्रकृति में विकृति पैदा कर दे उसे विगइ कहते हैं। जो हमे व्यवहार से भूलाते हैं, निश्चय से भटकाते हैं एवं हमें धर्म से दूर कर देते हैं ऐसी विकृति करने वाली महाविगइ है। उन महाविगइ का सर्वथा त्याग करने के लिये ज्ञानियों ने कहा है। महाविगइ के अंतर्गत मांस, मदिरा, मक्खन, मधु ये चार चीजें आती है। महाविगइ का जिसने सर्वथा त्याग किया, वह निश्चित ही महाविकृति से बचा है

दूध, दही, घी, तेल, गुड-शक्कर व

तली हुयी वस्तु- ये छः प्रकार की विगई कही गयी है। हमारी प्रकृति पर इनकी असर होती है। हमारे अपने विचारों में विषयों-कषायों का किसी तरह प्रकटीकरण करती है। इन विषयों-कषायों का प्रकटीकरण न हो इसीलिये ज्ञानियों ने कहा कि विगइ का भी हमेशा त्याग करते रहना चाहिए। विगइ त्याग से विकृति का त्याग होगा जिससे अपनी प्रकृति सही होती जायेगी। जिससे जीवन स्थिती निश्चित ही सफलता दायक बनेगी।

जे. - छः विगइ में प्रतिदिन एक विगइ छोडने का भी प्रावधान है, इससे हमे क्या आत्मिक लाभ होता है ?

आ. - एक वस्तु के छोडने से उस पर से हमारा ममत्व ही समाप्त हो जाता है। ममत्व समाप्त होना ही आत्मा के लिये सबसे बड़ा लाभ है। जहाँ ममत्व समाप्त होता है वहाँ समत्व प्राप्त होता है। एक-एक विगइ का त्याग भी हमारे अंदर त्याग की शक्ति को पैदा करता है।

जे. - अणाहारी पदार्थों की व्याख्या बताते हुए इसके उपयोग की विधि समझाइये ?

आ. - जिसके खाने से पेट नहीं भरता हो, जीभ को स्वाद नहीं मिलता हो एवं जिसके सेवन से मन में किसी प्रकार की विकृति पैदा नहीं होती है वे अणाहारी चीजें है। इनका उपयोग दिन,रात या तपश्चर्या में कहीं भी कभी भी हो सकता है। लेकिन लेने की विधि में इसे बिना पानी से लेना चाहिये, लेकर पानी नहीं पीना चाहिए। इनके सेवन से कोई दोष नहीं लगता है। अनुभव से देखा गया है कि अणाहारी पदार्थ मानसिक, वाचिक व कायिक स्थिति को शुद्ध करती है। अणाहारी वस्तुयें साधना में सहायक बनती हैं।

जे. - इसके लेने की प्रक्रिया किस प्रकार से है, जैसे इसके सेवन के साथ पानी नहीं लेना चाहिये किन्तु कितने समय पहले या बाद पानी का उपयोग हो सकता है ?

आ. - अणाहारी पदार्थ सेवन के अडतालीस मिनट बाद पानी पी सकते हैं।

जे. - क्या शिवाम्बु अणाहारी है ?

आ. - हाँ, अणाहारी है।

जे. - पर्व तिथि को वनस्पति हरी सब्जी आदि का त्याग करने के लिये विशेष रुप से क्यों कहा गया है ?

आ. - हर आदेश या मार्गदर्शन के पिछे भावना है हमारी आत्मा को निर्मल बनाने की। पर्व तिथियाँ (दूज, पंचमी, अष्टमी, अग्यारस, चतुर्दशी) आराधना कि तिथियाँ है। आराधना कि तिथि में हम किसी भी जीव को कष्ट/किलामणा न पहुंचाकर हमारी आराधना करें यह विशेष उपादेय है, इसी कारण पर्व तिथि में वनस्पति काय के जीवों कोजीवनदान देने कि प्रक्रिया बनाये रखें तो हमारी साधना सफल हाती है। पर्व निथि ज्ञानशुद्धि, दर्शनशुद्धि, चरित्रशुद्धि हेतु आराधना/साधना की तिथि है। इन तिथियों में स्वाद की वस्तुओं से दूर रहने से इंद्रियों को नियंत्रित करने में बल मिलता है, इसलिये हरी चीजों का उपयोग न करें।

जे. - पच्चक्खाण की व्याख्या समझाइये।

आ. - पच्चक्खाण को प्रत्याख्यान भी कहते हैं। अर्थात् स्वयं के प्रति स्वयं कि स्थिति को व्यवस्थित करने में जो हमे बाध्य करे उसका नाम है प्रत्याख्यान। हम अपने आप की ओर गतिशील होवें/मुडें और देखें कि हम कहाँ हैं कैसे रहना है, कैसे चलना है, हमारी स्थिति को कैसे बनाना है, इन सारी बातों को प्रत्याख्यान के माध्यम से हम समझते है।

. -आयंबिल में एक समय भोजन म; च विगइ का त्याग किया जाता है, क्या वह शारीरिक दुष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण ?

आ. - आयंबिल शारीरिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। जितना आयंबिल करने का व्यक्ति प्रयास करता है अर्थात् लूखा और फिका भोजन करने से उसकी पाचनशक्ति को बहुत मिलता है। गरिष्ठ भोजन से पाचन क्रिया को कष्ट देखना पडता है। लूखे और फीके भोजन से पाचनक्रिया व्यवस्थित व शुद्ध होती है। शरीर में

कोई तकलीफ न होकर शक्ति बढती है। गरिष्ठ पदार्थ से शरीर बढता है, आयंबिल से शरीर स्वस्थ रहता है एवं मनोबल बढ़ता है।

जे. - कंदमूल खाने के लिये भी मना किया गया है, क्या अन्य दर्शनो में भी ऐसे कोई प्रमाण उपलब्ध हैं ?

आ. - अधर्मो में भी कलमूंद नहीं खाना चाहिए ऐसा लिखा है, ऐसी गाथायें हैं। वे गाथायें अभी मौखिक मुझे याद नहीं, लेकिन मैंने पढा है कि अन्य धर्मों में भी कंदमूल त्यागने का स्पष्ट लिखा है।

जे. - कंदमूल त्याग करने का मुख्य कारण। ?

आ. - त्याग का कारण है कि उनकी उत्पत्ति अंधेरे में हुयी है। प्रकाश में पैदा न होने के कारण इनका सेवन हमारी प्रकृति को विकृत बनाती है। धार्मिक दृष्टि से कंदमूल अनन्तकाय का पिण्ड होने से अनंतकाय के जीवों को कष्ट पहुंचाने का कारण बनता है।

जे. - जैनशासन में तपश्चर्या का बहुत महत्व बताया गया है, कृपया शारीरिक एवं अध्यात्मिक दृष्टिकोण से इदका महत्व बतलाइये ?

आ. - तप कर्मों से मुक्त होने के लिये परम सहकार्य माना गया है। तप अर्थात शरीर में तप की अग्नि हमें सहायता देती है, दूसरी और स्वास्थ की दृष्टि स्वस्थता में सहायक है और व्यवहारिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी तप सहायक बनता है। तप से जीवों को अभयदान मिलता है। तप के कारण व्यक्ति आरंभ- समारंभ के पाप से भी बच जाता है, रसना लोलुपता को भी पाता है।

जे. - तप का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रभाव बताइये ?

आ. - तप का मतलब है अपने कार्यं में /लक्ष्य में जुट जाना। जो व्यक्ति सब कुछ भूलकर जितना अपने लक्ष्य में जुटता है उतना वह उसमें सफल होता है। चारों ओर से अपने आप को मुक्त रखकर एक लक्ष्य कि साधना में जो लग गया है वह निश्चित सफल हुआ है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी यही बात है कि तुम चारों ओर से सब कुछ भूलो और अपने एक लक्ष्य में लग जाओ वो तुम्हारी साधना बनेगी, वो तुम्हारा तप होगा। वह तुम्हारे अपने लक्ष्य में सफलता प्रदान कराने वाला बनेगा।

जे. - रासायनिक खाद के सहयोग से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं का हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पडता है ?

आ. - जो रसायन किटाणुओं को मारने का भाव रखते हैं उनके सम्मिश्रण या सहयोग से पैदा हुआ अन्न है, उसमें भी उस रासायनिक प्रक्रिया का असर अवश्य होता है और वह अन्न पैदा होकर हमारे स्वास्थ्य में निश्चित ही हानि करने का कार्य करता है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आज अधिकतर शरीर की व्याधि से युक्त जीव दिखायी देते हैं।

जे. - क्या फास्ट फूड या तैयार भोजन का सेवन उपयुक्त है ?

आ. - तैयार माल उपयोग के बिना बनाया जाता है और उपयोग रहित बने हुए पदार्थ का सेवन हमारे लिये कभी लाभप्रद नहीं बन सकता।

जे. - क्या उनमें हिंसा या जीवोत्पति का होना संभव है।

आ. - हमेशा बिना सोचे या बिना उपयोग से बनी कोई भी चीज होगी उसमें जीवोंत्पत्ति का संभव है ही। उपयोग रहित कोई भी कार्य या प्रवृत्ति में हिंसा का होना स्वाभाविक है। उपयोग ही धर्म है, उपयोग ही अहिंसा है।

जे. - वर्तमान जैन चौके में अभक्ष्य वस्तुओं का आगमन बडे जोर्तों से हो रहा है, उसके रोकधाम का क्या उपाय है ?

आ. - जैन शासन में तो ज्ञानियों ने सुंदर बारह व्रतों एवं चौदह नियमों का निर्धारण किया है। अधिकाधिक लोगों को इनके पालन करने की प्रेरणा करे, उन्हें समझाये। यदि व्यक्ति इन

नियमों को अपना ले तो भक्ष्य- अभक्ष्य का विवेक जागृत होने से सारी परिस्थितीयों से बचा जा सकता है।

जे. - प्रतिष्ठादि धार्मिक प्रसंगो में भी अभक्ष्य वस्तुयें बनती है, उसे रोकने के क्या उपाय है ?

आ. - धार्मिक प्रसंगो में अभक्ष्य वस्तु सेवन करने का कार्य बनता है तो वहाँ उपस्थित समाज के प्रमुख कार्यकर्ता अथवा उस स्थान के लोगों को ज्ञात नहीं है तो उस बात के ज्ञाता वहाँ पहुंचे एवं इस बात के लिये उन्हें सचेत करें एवं बचाने का प्रयत्न करना चाहिये।

बात आ पहुँची है यहाँ तक

हमें शर्म आती है उन जैन धर्मानुयायियों के कुत्सित विचारों को सुन कर, जो जैन सिद्धान्तों की अवहेलना कर, चारित्रिक हीनता के पथ पर अग्रसर होते हुए प्रगतीशीलता का दम भरते हैं तथा जैन सिद्धान्तों का दृढ़ता से पालन करने वालों का उपहास करना अपना परम कर्तव्य समझते है- यह मेरा अपना अनुभव है।

सन् १९७० में मैं देहरादून महादेवी गर्ल्स छात्रावास में रहती थी। वहाँ भोजन रात्रि में ही मिलता था। हमारी रात्रि- भोजन- त्याग- प्रतिज्ञा को हमारे पापा ने वार्डन को बताया। वार्डन ने हॉस्टल की सभी जैन छात्राओं को बुलाया जो कुल मिला कर तीन ही थीं, उनसे भी जब रात्रि- भोजन के विषय में वार्डन ने पूछा तो एक लड़की, जो सीनियर थी और बी. एस्सी. में पढ़ रही थी, तत्काल बोली- 'मैडम, जैनी दो प्रकार के होते हैं: एक, परम्परावादी; दूसरे, प्रगतिशील। हम तो प्रगतिशील हैं, अण्डे भी खाती हैं। मैंने तत्काल ही उस लड़की के मुख पर हाथ रखा और वार्डन से कहा- 'दीदी, आप हमारी चिन्ता न करें, हमें भोजन एक बार ही पर्याप्त रहेगा'। खैर, मुझे दृढ़- प्रतिज्ञ देख कुछ समय पश्चात् दिन में ही भोजन की व्यवस्था हुई; परन्तु अत्यन्त दुःख हुआ उस लड़की की प्रगतिशीलता को देख, अब ऐसी- ऐसी घटनाओं के बाद जैनेतर समाज के बीच हमारे धार्मिक सिद्धान्तों का क्या प्रभाव होगा तथा हमारे आचरणों का क्या हस्र होगा

-डॉ. नीलम जैन

दलौदा (म. प्र.) जिला-मंदसौर में निर्माणाधीन

श्री शीतलनाथ भगवान जिन मंदिर में आर्थिक सहयोग प्रदान किजिये।

(ड्राफ्ट - श्री शीतलनाथ राजेन्द्र जैन चेरीटेबल ट्रस्ट-दलौदा के नाम से पेईज एकाउंट का बनवायें।)

विनीत - डॉ. सोहनलाल सुराणा

श्रीराजेन्द्र वचनामृत

● आग्रही व्यक्ति कल्पित तथ्यों की पुष्टि के लिए इधर-उधर की कुयुक्तियाँ खोजते हैं और उन्हें अपने मत की पुष्टि में संयोजित करते हैं, मध्यस्थदृष्टि-सम्पन्न व्यक्ति शास्त्र-सम्मत और युक्ति-संगत वस्तु-स्वरुप को मान लेने में तनिक भी हठाग्रह नहीं करते हैं।

● जिन अपराधों के लिए एक बार क्षमा माँगी जा चुकी है उन्हीं के लिए पुन: क्षमा माँगना प्रमाद है और उन्हे फिर न होनें देना सच्ची क्षमा है।

● क्षमा शुभ विचारों को जन्म देती है, शुभ विचार सुसंस्कार बनते हैं, और सुसंस्कारों के माधूयम से जीवन का उत्तरोत्तर विकास होता है, जिसमें ये धर्म रुप बन जाते हैं।

● खाली लोकदिखाऊ औपचारिक क्षमा माँगना और जहाँ के तहाँ बने रहना क्षमा याचना नहीं, धूर्तता है।

● मन को विरोध या वैमनस्य की दुर्भावना से सर्वथा हटा लेना और फिर कभी वैसी भावना न आने देना; क्षमा का निर्मल स्वरुप ही आत्मा का विकास करने वाला है।

● जैसे तुम्बे का पात्र मुनिराज के हाथ में सुपात्र बन जाता है, सगीतज्ञ के द्वारा विशुद्ध बाँस से जुड़ कर मधुर संगीत का साधन बन जाता है, डेरियों से बन्धकर समुद्र तथा नदी को पार करने का निमित्त बन जाता है और मदिरा-मासार्थी के हाथ पड़कर रुधिर-माँस का भोजन बन जाता है; वैसे ही कोई भी मनुष्य सज्जन या दुर्जन की संगति में पड़कर गुण या अवगुण का पात्र बन जाता है।

● विष-मिश्रित भोजन देखकर चकोर अपने नेत्र मूँद लेता है, हंस कोलाहल करने लगता है, मैना वमन करने लगती है, तोता आक्रोश में आ जाता है, बन्दर विष्टा करने लगता है कोकिल मर जाता है, क्रौंच नाचने लगता है, नेवला और कौआ प्रसन्न होने लगते है; अत: जीवन को सुखी रखने के लिए सावधानी से संशोधन कर भोजन करना चाहिये।

● व्यभिचार कभी सुखदायी नहीं है अन्तत: इससे अनेक व्याधियों और कष्टों से घिर जाना पड़ता है।

● रात्रि भोजन के चार भांगे है : दिन को बनाया, दिन में खाया। दिन को बनाया, रात में खाया; रात में बनाया, दिन में खाया; अन्धेरे में बनाया और अन्धेरे में खाया। इनमें से पहला रुप ही शुद्ध है।

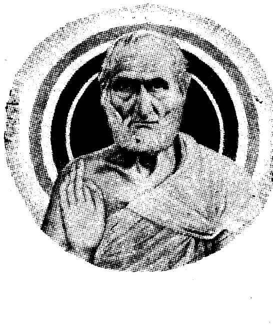

● समय की गति और लोक-मानस की ढलान को भली-भाँति परख कर जो व्यक्ति अपना व्यवहार निश्चित करता है, वह कभी किसी तरह के पसोपेश में नहीं पड़ता; किन्तु जो हठाग्रह या अल्पमति के वश में होकर समय या लोकमत की अवहेलना करता है, वह किसी का भी प्रेम सम्पादित नहीं कर पाता।

गीत

जय बोलो .....

--- डा. श्री. तेजसिंह गौड़

जय बोलो जयंत गुरूवर की ।
ज्ञानी, ध्यानी गुणीवर की ।।१।।
पेपराल में जनम लिया ।
पूनम इनको नाम दिया ।।
तांत स्वरूप का रूप लिया ।
माता पर्वती ने ध्यान दिया ।।
हर्षित सब ग्राम नर नारी है ।
सूरत कितनी सुन्दर प्यारी है ।।
छवि यह तो है अवतारी की ।
पर दुःख कातर महिमाधारी की ।।
मिली कृपा इनको गुरूवर की ।
जय बोलो जयंत गुरूवर की ।।२।।
सुरि यतीन्द्र से दीक्षा पाई ।
इनसे ही तो शिक्षा पाई ।।
दत्त चित्त हुए फिर अध्ययन में ।
रहे सावधान ये संयम में ।।
वैय्यावच्य में भी आगे आये ।
नहीं तनिक भी ये घबराये ।
गुरूवर ने ही रूप संवारा है ।
तभी जयंत सभी का प्यारा है ।।
सब ही देन पूज्य गुरूवर की ।
मेरा तेरा ये सब झगड़े है ।
राग द्वेष के सब रगड़े है ।।
सोये हुए सब प्राणी जागो ।
जय बोलो जयंत गुरूवर की ।।३।।
समता पालो ममता त्यागो ।।
समय कीमती पल-पल जाता ।
मानव फिर भी समझ न पाता ।।
फसां हुआ है उलझन में भारी ।
नहीं अभी है ममता मारी ।
गूँजी ध्वनि यह 'मधुकर' की ।
जय बोलो जयंत गुरूवर की ।।४।।
हैं बड़े मनस्वी ये ।
हैं बड़े तपस्वी ये ।।
आगम के ये पंडित हैं ।
पूर्ण ज्ञान से मंडित हैं ।।
वाणी अमृत बरसाती हैं ।
जन-जन का दर्द मिटाती हैं ।।
सहनशील भी ये भारी हैं ।
जनता में अचरजकारी हैं ।।
जय बोलो इन गुणीवर की ।
जय बोलो जयंत गुरूवर की ।।५।।
सदा प्रसन्न मुख रहते हैं ।
क्रोध कभी नहीं करते हैं ।।
दया धर्म समझाते हैं ।
भेद पाप-पुण्य का बताते हैं ।।
सबको ज्ञानामृत पिलवाते है ।
परित्रस्त हृदयों को समझाते हैं ।
जो भी सेवा में इनकी आते हैं ।
सुख से हर्षित सब हो जाते हैं ।।
शीतल छॉव ज्यों तरूवरकी ।
जय बोलो जयंत गुरूवरकी ।।६।।
ऊँच नीच का भेद मिटाते ।
वैरभाव को दूर भगाते ।।
आपस में हैं मेल कराते ।
शांति रस का पान करते ।।
वाणी जब कानों में पड़ जाती ।
हृदय लगी कलिमा धुल जाती ।।
गाँव नगर का मोह छुड़ाया ।
सब को नेह का पाठ पढ़ाया ।।

जय बोलो जयंत गुरूवर की ।।७।।
नहीं पर दुःख देखा जाता ।
स्वयं दुःखी मन भी हो जाता ।।
तन मन सेवा में लग जाता ।
तोष सेवा से मन पा जाता ।
शिष्यों का भी रखते पूरा ध्यान ।
सेवा की महिमा बतलाते ज्ञान ।।
मानव सेवा है मिश्री की डली ।
गुरूवर से तो यही सीख मिली ।।
लम्बी कथा है करूणाकरकी ।
जय बोलो जयंत गुरूवरकी ।।८।।
दयानिधे ! तुम करूणाकर हो ।
क्षमाशील तुम सागर सम हो ।।
संयम का तुम मार्ग बताते हो ।
तुम मर्यादा की सीख सिखाते हो ।।
परिग्रह का तुम दोष बताते हो ।
दान धर्म की महिमा गाते हो ।।
जिनवाणी के तुम गायक हो ।
हम सबही के तुम नायक हो ।।
सब महिमा है उन जिनबर की ।
जय बोलो जयंत गुरूवर की ।।
दक्षिण जाकर धूम मचा दी ।
करी प्रतिष्ठा और दीक्षा दी ।।
पावन कुल में कुल आया ।
समवेत स्वर में निर्णय पाया ।।
पद सूरि इन को ही देना है ।
नहीं किसी को कुछ कहना है ।
नई लहर संघ में आई है ।
भांडवकर में ज्योति जगाई है ।
ज्योति नई यह मरूधर की ।
जय बोलो जयंत गुरूवर की ।।१०।।

●●●

बिखरे मोती

● *कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता ।*

● *नारी हृदय धरती के समान है जिससे मिठास भी मिल सकती है, कड़ुवापन भी ।*

● *आज पढ़ना सब जानते हैं, पर क्या पढ़ना चाहिए यह कोई नहीं जानता ।*

● *अपनी अज्ञानता का आभास हो बुद्धीमता के मन्दिर का प्रथम सोपान है।*

● *क्रुद्ध होने का अर्थ है दूसरों की त्रुटियों का प्रतिरोध स्वयं लेना ।*

जो हंसना – मुस्कराना जानता है दुःख और संकट उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाते ।

● *सत्य का उपासक सदा अपनी आलोचना का स्वागत करता है ।*

● *मनुष्य का सत्यव्रत जीवन पर्यन्त अटल रहना चाहिये । जीवन में यदि मनुष्य एक सत्य का आश्रय लिये रहे तो वह सत्य स्वयं ही सारे प्रश्नों का निराकरणकर देता है पर जब मनुष्य सत्य का आश्रय छोड़ मिथ्याभाषण का आसरा लेता है तभी तरह-तरह के प्रश्न उठ खड़े होते हैं ।*

● *प्यार और घृणा, राग और विराग का विरोध करने वाली धारणाओं का सामना करते हुए जो उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता है वही परमात्मा का सच्चा भक्त है ।*

स्थानकवासी—मान्य बत्तीस सूत्रों के मूल पाठ की साक्षी से

जिनप्रतिमा की यात्रा, दर्शन और पूजन करने का अधिकार

स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा.

१—विज्जाचारणस्सणं भंते! तिरियं केवइए गइविसए पण्णत्ते?, गोयमा! से णं इओ एगेणं उप्पाए णं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइआइं वंदइ वंदित्ता वितिएणं उप्पाएणं नन्दीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ करेइत्ता तहिं चेइआइं वंदइ, वंदिता तओ पडिनियत्तइ, पिडनियत्तइत्ता इहमागच्छइ आगच्इछत्ता इहं चेइआइं वदइ।

—भगवन्! विद्याचरण मुनि की तिरछी गति का विषय कितना कहा है?, गौतम ! विद्याचरण मुनि यहाँ से उत्पाद (डगल) से मानुषोत्तर पर्वत पर उतरते हैं, उतर कर वहाँ रहे हुए जिन मन्दिरों को वन्दन करते हैं। वन्दन किये बाद वहाँ से द्वितीय उत्पाद से नन्दीश्वर द्वीप में उतरते हैं, उतर के वहाँ रहे हुए जिनमन्दिरों को वंदन करते हैं। वन्दन किये बाद वहाँ से एक उत्पाद से यहाँ आते हैं और यहाँ के जिनचैत्यों (जिनालयों) को वन्दन करते हैं।

विज्जाचारणस्सणं भंते। उड्ढं केवइए गइविसए पण्णत्ते? गोयमा! सेणं इओ एगेणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणंकरेइ। करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदित्ता वितिएणं उप्पाएण पंडगवणे समोसरणं करेइ, करेइइत्ता तहिं चेइयाइंवंदइ। वंदित्ता तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तइत्ता इहमा गच्छइ, आगच्छइत्ता इहं चेइआइं वंदइ।

—भगवन्!विद्याचरण मुनि की ऊर्ध्वगति का विषय कितना कहा है? गौतम! वेद्याचरणमुनि यहाँ से एक उत्पाद से नन्दनवन में उतरते हैं, उतर कर वहाँ के जिन चैत्यों को वन्दन करते हैं। वन्दन करके द्वितीय उत्पाद से पंडकवन में जाते हैं और वहाँ रहे हुए जेनमदिन्रों को वन्दन करते हैं। बाद में वहाँ से लौट कर एक उत्पाद से यहाँ के जिन मन्दिरों को वन्दन करते हैं।

२ जङ्घाचारणस्सणं भंते! तिरियं केवइए गइविसए पण्णत्ते ! गोयमा! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं रूयगवरे दीवे समोसरणं करेइ।करेइत्ता तहिं चेइयाइवंदइ वंदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे वितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, करित्ता तहिं चेइयाइं वंदइ। वंदित्ता इहमागच्छइ आगच्छइत्ता ईहं चेइआइ वंदई।

जङ्घाचारस्सणं भंते। उड्ढं केवईए गइविसए पण्णत्ते गोयमा। से णं

इओ एगेणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ, करित्ता तहिं चेईआइं वंदई। वंदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितीएणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेई। करित्ता तहिं चेइआइं वंदई। वंदईत्ता, ईहमाच्छई आच्छईत्ता ईहं चेईयई।

—भगवन्! जंघाचारण मुनि की तिरछी गति का विषय कितना कहा हैं? गौतम! जंघाचारण मुनि यहाँ से १ उत्पाद से रूचकवर द्वीप में उतरते हैं। उतर के वहाँ के जिनमन्दिरों को वन्दन करते हैं। वहाँ से निकल के द्वितीय उत्पाद से नन्दीश्वर द्वीप में जाते हैं और वहाँ रहे हुए जिनमन्दिरों को वन्दन करते हैं। वहाँ से एक उत्पाद से यहाँ आते हैं और यहाँ के जिनचैत्यों का वन्दन करते हैं।

—भगवन्! जंघाचारणमुनि की ऊर्ध्वगति का विषय कितना कहा हैं? गौतम! जंघाचारण मुनि यहाँ से १ उत्पाद से पांडुकवन में जाते हैं और वहाँ के जिनचैत्यों को वन्दन करते हैं। द्वितीय उत्पाद से नन्दन वन में जाते हैं और वहाँ के जिन चैत्यों को नमस्कार करते हैं। वहाँ से लौट कर एक उत्पाद से यहाँ आते हैं और यहाँ के जिन चैत्यों को वन्दन नमस्कार करते हैं।

—श्रीभगवतीसूत्र मूलपाठ २० वाँ शतक, ९ वा उद्देशा ६८३-६८४ सूत्र

३ अबडस्स णं णो कप्पई अन्नउत्थिया वा, अण्णउत्थियदेवयाणि वा, अण्णउत्थियपरिग्गहियाणि वा, चेइयाइं वंदित्तए वा, णमंसित्तए वा, जाव पज्जुवासित्तए णण्णत्थ अरिहंते अरिहंतचेइयाणि वा।

—अंबड़ परिव्राजक को नहीं कल्पे अरिहन्त और अरिहंत प्रतिमा सिवाय अन्य मतावलम्बियों के देवों, अन्य मति ग्रहित जिनप्रतिमाओं और अन्य मत के श्रमणों का वन्दन करना, नमस्कार करना यावत् पूजा सेवा करना अर्थात् अन्य मत को छोड़ कर अरिहंत और अरिहंत की प्रतिमा की स्तवना पूजा तथा वन्दन करना कल्पे।

—श्रीउववाइसूत्र मूल पाठ पत्र ९७, अम्बडाधिकार

४ णो खलु मे भंते! कप्पई अज्जप्पभिइं अन्नउत्थिए वा, अन्नउत्थियदेवयाणि वा, अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतेइयाणि वा वंदित्तए वा णमंसित्तए वा पुव्विं अणालवित्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा।

हे भगवन्! आज से मुझे नहीं कल्पे अन्यतीर्थियों के देवों तथा अन्यतीर्थियों की ग्रहण की हुई जिनप्रतिमा व अन्यतीर्थिक श्रमणोंको वंदन नमस्कार करना। इसी तरह अन्यतीर्थियों के बिना बोलाए उनके साथ एक या अनेक बार बोलना भी नहीं कल्पे। अन्यमति के देव और अन्यमतिग्रहित जिनप्रतिमा के सिवाय अरिहन्त देव उनकी प्रतिमा और उनके श्रमणों को वन्दन नमन करना कल्पता हैं।

—श्रीउपासकदशांकसूत्र मूल पाठ (आनन्दश्रावकाध्ययन)

५ णण्णत्थ अरिहंते वा अरिहंतचेईयाणि वा अणगारे वा भावियप्पणो निस्साए उड्ढं वा उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो

(चमरेंद्राधिकार)

—अरिहन्त, अरिहन्त चैत्य[१] और तप संयम में भावित आत्मा वाले अणगार (मुनि) इन तीनों का शरण लिऐ बिना असुरकुमारेन्द्र यावत् सौधर्म देवलोक तक ऊर्ध्व गमन नहीं कर सकता। अर्थात् अरिहन्तदेव उनकी प्रतिमा और मुनिराज की निश्रा से वह ऊँचा जा सकता हैं।

श्रीभगवती सूत्र मूलपाठ ३ शतक, २ उद्देशा

६-नो चेव णं समणोवासगं पच्छाकडं बहुस्सुयं वज्जागमं पासेज्जा; जत्थेव सम्मं भावियाइं चेईयाइं पासेज्जा; कप्पई से तस्संतिए आलोईत्तए वा जाव पडिवज्जित्तए वा।

जो साधु अयोग्य स्थान का आचरण करके उसकी शुध्दि के लिए आलोयणा लेना चाहे तो उसको संयम-पतित बहुत आगम का ज्ञाता श्रावक नहीं मिले तो सुहिताचार्य प्रतिष्ठित चैत्य (जिन प्रतिमा) के पास आलोयणा यावत् प्रायश्चित्त लेना कल्पे।

श्रीव्यवहारसूत्र मूल पाठ १ उद्देशा

७-दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छई उवागच्छित्ता ण्हायाकयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुध्दप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवराइं पवराइं परिहिया। मज्जणधराओ पडिनिक्खमई पडिनिक्खमइत्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छई। उवागच्छित्ता जिणघरं अणुपविसइ। अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ, करेइत्ता लोमहत्तयं परामुसइ। एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेई तहेव भाणियव्वं। जाव धूवं डहई धूवं डहित्ता वामं जाणुं अंचेई, दाहिणं जाणुं धरणि तलंसि णिवेसेई। णिवेसित्ता तिखुत्तो मुध्दाणं धरणितलंसि नमेई। नमेइत्ता ईसिं पच्चुण्णमई, पच्चुण्णमित्ता करयल जाव कट्टू एवं वयासी नमुत्थुणं अरिहंताण भगवंताण जाव संपत्ताणं वंदई नमंसई, नमंसित्ता जिणघराओ, पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ।

—द्रौपदी राजवर कन्या जहाँ स्नान-घर था वहाँ आई, आकर स्नान किया, बलि कर्म किया, और कौतुक मङ्गल रुप प्रायश्चित किया। बाद में जिनघर में प्रवेश करने योग्य उत्सव मङ्गलादि सूचक शुद्ध वस्त्र पहिन कर मज्जन-घर से बाहर निकल कर जहाँ जिन-मन्दिर था वहाँ आई जिनघर में प्रवेश करके जिनप्रतिमा को नमस्कार किया और मोरपिच्छ से जिन प्रतिमा का प्रमार्जन किया। इस प्रकार जैसे सूर्याभदेव ने जिनप्रतिमा की पूजा की उसी प्रकार द्रौपदी ने भी धूपोत्क्षपण पर्यन्त पूजा की बाद में डावा गोड़ा ऊचाँ और जीमना गोड़ा जमीन पर स्थापन करके ३ बार मस्तक नमाकर किंचित् अवनत आसन से हाथ जोड़कर नमुत्थुणं० के पाठ से स्तवन, वन्दन (नमस्कार) किया। बाद में द्रौपदी राजकन्या जिनघर (जिनमन्दिर से बाहर निकल कर निज अंतेउर (निज घर) में वापस आई।

श्री ज्ञाता सूत्र मूलपाठ १६ अध्ययन २१३ पत्र

८ तत्थणं बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा

चाउम्मासियपडिवएसु संवच्छरिएसु वा अन्ने सु यबहुसु जिणजम्मण-निक्खमण-नाणुपत्ति परिनिव्वाणमाइसु देव कज्जेसु य देवसमुदाएसु य देवसमितिसु य देवसमवाएसु य देवपओयणेसु य एगतओ सहिता समुवगता समाणा पमुदियपक्कीलिया अट्ठाहियारूवाओ महामहिमाओ करेमाणा पालेमाणा सुहं सुहेण विहरंति।

—नन्दीश्वर द्वीप में रहे हुए जिनमन्दिरों में भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक एवं चार निकाय के देव कार्तिकी प्रमुख अट्ठाइयों में, पर्यूषण महा पर्व के दिवसों में, दूसरे भी जिनेश्वरों के जन्म, दीक्षा, केवल मोक्षकल्याणक दिवसों में देवकार्य के लिए इकट्ठे होते हैं और अतिशय आनन्दित और क्रीड़ापरायण हो करके अष्टाह्निका महोत्सव करते हुए सुखपूर्वक विचरण करते हैं।

श्रीजीवाभिगमसूत्र मूल पाठ ३ प्रतिपत्ति २ उद्देशा

१. 'चैत्यं जिनौकस्तद्‌बिम्बं' जिनेन्द्र का मन्दिर और जिनेन्द्र की प्रतिमा को चैत्य कहते है। 'अनेकार्थसंग्रह' श्लोक ३६६ 'चैत्यं विहारो जिनसद्‌मनि' चैत्य शब्द विहार और जिनमन्दिर इन दो अर्थ में है, 'अभिधानचिंतामणिकोश' भूमिकांड

२. सा दोवइ कच्छुल्लनारयं असंजयविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मं ति कुट्ट नो आढाति, नो परियाणए, नो अब्भुट्ठेति, नो पज्जुवासति।'' द्रौपदी ने कच्छुल्लनारद को असंयति अविरती, अपच्चक्खाणी जान कर आदर दिया नहीं, उसके आगमन को अच्छा जाना नहीं सेवाभक्ति की नहीं और खड़ी हुई नहीं। (यह पाठ द्रौपदी के सम्यक्त्व की दृढ़ता का प्रतिपादक है।)

श्रीज्ञातासूत्र मूलपाठ १६ अध्ययन २१३ पत्र

इस प्रकार स्थानकवासी सम्प्रदाय की मान्यता वालों के निज ३२ (बत्तीस) सुत्रों (आगमों) के मूल सूत्र (मूल पाठों) में उपर दिये गये प्रमाणों के अनुसार जिनेश्वर देवों के मन्दिरों की यात्राएँ करना साथ ही जिनप्रतिमाओं (मूर्तियों) की विस्तार पूर्वक विधिवत् दर्शन करना एवं अट्ठाईमहोत्सव आदि धर्मोत्सव श्रद्धापूर्वक करने का विस्तृत विवरण कई जगह मिलता है। प्रस्तुत पुस्तक में स्थायीभाव से केवल कुछेक प्रमाण दिये हैं जो दिग्दर्शन मात्र है। विशेष जानने की इच्छा वालों (जिज्ञासुओं) को बत्तीस सूत्रों का ही अवलोकन करना चाहिये।

छपते – छपते

- **श्री मोहनखेडा तीर्थ** – श्री राजराजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन का भूमि पूजन श्री मोतीलालजी हरण (राजगढ़) एवं खातमुहूर्त श्री समीरमलजी जैन (टाण्डा) के करकमलों से माहसुदि ११ शुक्रवार १४ फरवरी को सम्पन्न होगा। स्मरण रहे, प्रस्तावित योजना राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा से साकार होने जा रही है।
- **बीजापुर** – आचार्यदेव श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी, जयशेखरसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप की आराधना में १५० आराधकों ने भाग लिया।

  आचार्य श्री सोलापुर, बार्शी, अहमदनगर होकर शिर्डी पधार रहे हैं, जहाँ आपकी निश्रा में २० एप्रिल को नूतन जिन मंदिर की प्रतिष्ठा व अंजनशलाका सम्पन्न होगी।

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी कृत चतुर्विंशति जिन स्तवन (धारावाहिक)

"श्री श्रेयांसनाथजी जिन स्तवन" (११)

विवेचन - मुनिराज श्री जयानंदविजयजी

("मोतीड़ा नी .... राग)

श्रेयांस जिन जग जननां स्वामी, प्रीतम प्रेमे परतिख पामी ।
साहिबो सस्नेही सिद्ध मोहना मन मेरे ॥टेर॥

गुरूदेव श्री एकादशम जिन की स्तवना करते हुए कहते हैं कि हे प्रीतम श्रेयांस जिन ! आप जगत के प्रत्येक आत्मा के हित की प्रबल भावना के द्वारा तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जनकर जगत जीव के स्वामी बने हैं । मैंने आपके शासन को प्राप्त कर आपकी प्रीत को प्रत्यक्ष प्राप्त कीया है ।

आप जगत जीव के सस्नेही हैं । सिद्धिगति में बीराज मान होने से सिद्ध है एवं भाव्यात्मा के मनोरथ पूर्ण करने वाले होने से भी आप सिद्ध हैं । आप श्री ने मेरे मन को मोहित कर लिया है ।

कुमति, कुलिंग, कुरीलनो कुसंग, नहीं करशुं हुं कबह असंग । सा. ॥१॥
चाल कुचाल ए पंचमकाल, छोडी ने राखीशुं छेल छोगाल ।सा.।
सुख समप्पे संगमें रीजे, पल एक भोगश्युं प्रेम पती जे । सा. ॥२॥

हे जगत के स्वामी अब मैंने आप से पूर्ण प्रीति कर ली है । अतः अब में कुमतियुक्त, कुलिंगी यानि विपरीत वेश युक्त एवं मानसिक कुटीलता युक्त मायाचारी आत्माओं का संग कभी भी नहीं करूंगा । आप जैसे स्नेही मिलने के बाद दूसरों का संग कभी भी प्रिय नहीं लगता । अतः हे श्रेयांस जिन ! उन कुलिंगीयों की चाल, कुचाल के अन्तर्गत है । ऐसे पंचमकाल के कुलिंगीयों की चाल को छोड़कर हे छेल छोगाल अब मैं आप के संग में ही रहूंगा ।

आपके संग में जो - जो आत्माएँ आनंदित होती हैं, उनको आप श्री सुख समर्पित कर देते हो । पल मात्र भी आपके प्रति जो प्रेम कर लेता है, वह आत्मा सुख समाधि को प्राप्त कर लेता है ।

भोग जोग भक्ति मैं भाली, तन नाचे उपशम देई ताली । सा. ।
आसन, द्रढ अति अधिक आराधे, मदन मोदता मोक्ष में बाधे ॥३॥

हे देवाधि देव ! भव्यात्माओं के सस्नेही ! आपश्री के संसारी एवं साधकावस्था के जीवन को देखकर भोग, योग एवं भक्ति का ज्ञान अच्छी प्रकार से ज्ञात कर लिया है । कर्मोदय से भोग सामग्री प्राप्त हुई है । कर्मोदय से अना सक्ततभाव से भोग का भोगोपभोग करना, स्वशक्ति अनुसार योग का पालन करना (कर्मक्षय हेतु साधना करनी) एवं यथाशक्ति आज्ञा की आराधना रूप भक्ति करनी ।

योग एवं भक्ति की आराधना के कारण मेरे मन में चल रही संसार मोह की आंधी उपशम / शांत हो गई है । जिससे मेरा शरीर भावशुध्दि रूप तालियाँ बजाता हुआ नाच रहा है । योग एवं भक्ति की प्राप्ति के हर्ष को दर्शा रहा है । भाव विशुद्धता से मेरा आसन अर्थात मन (साधना को रहने का स्थान) अति दृढ़ हो गया है अतः आराधना अधिक हो रही है । आराधना की अधिकता का आनंद मोक्ष मार्ग में आनंद प्रद हो रहा है ।

सेवश्युं ये पति सु सखी साथे, मनशुं आणा अम मन साथे । सा.।
छोडश्युं नहीं ए छेल-छबीलो, रूचियो मन शिवरमणी रंगीलो । सा. ४ ॥

भव्यात्माओं के लिए देवाधिदेव पति रूप में है अतः गुरूदेव श्री कहते हैं कि श्री श्रेयांस जिन रूप पतिदेव सुमति सखी को साथ में रखकर आज्ञा की आराधना रूप सेवा मनपूर्वक करूंगा । श्री श्रेयांस जिन जैसे छेल छबिले पति रूप परमेश्वर शिवरमणी में आसक्त होते हुए भी मेरे मन में इतने अत्याधिक रूचिकर लगे है कि अब मैं आपका संग जीवन भर नहीं छोडूंगा । इतनी याचना भी करता हूँ भवोभव आपका संग रहे । आपका और मेरा बिछुड़ना कभी न हो ।

सूरि राजेन्द्र पति मनवसियो, शील सुरंगी बख्तर कसियो । स.।
अरजी गरजी-नी अलबेला, चाहुं तुम रति माता चेला । सा. । ५॥

आचार्यों के राजा गणधर, गणधरों के इन्द्र तीर्थकर देवाधिदेव हे श्रेयांस जिन ! आपश्री मेरे मन में बस गये हैं, मैंने आपको मेरे मन मंदिर में बिठा दिये हैं और आप मेरे मन मंदिर में से बाहर न चले जाओ इस हेतु मन मंदिर के चारों ओर सदाचार रूपी बख्तर कस कर बांध दिया है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब तक सदाचार रूपी बख्तर मन मंदिर के चारों ओर है तब तक आप श्री मेरे मन मंदिर में से बाहर नहीं जायेंगे ।

हे अलबेला जिनेश्वर ! आप के पास जो मोक्ष सुख है उस मोक्ष सुख को पाने का मै गरजुं हूँ ऐसा में गर्जवान व्यक्ति अर्ज करता हूँ कि मैं आप से प्रीति रूप माता का शिष्य बना रहूँ । अर्थात वह प्रीति रूप माता मुझे आप से कभी दूर न होने दे । गुरूदेवश्री कह रहे हैं कि तेरी आज्ञा पालनता रूप योग एवं भक्ति का इतना प्रेमी हूँ कि आपके प्रति मेरी श्रध्दा सतत बनी रहे ।

गुरूदेव श्री ने इस स्तवन में कुलिंगी आदि शास्त्र विरूद्ध वर्तन करने वालों का संग सहवास त्याग कर योग एवं भक्ति का वास्तविक स्वरूप समझकर देवाधिदेव के प्रति अंतिम समय तक श्रद्धा को जीवंत रखने हेतु प्रयत्नशील रहने का निर्देश दिया है ।

वेद कुरान और गीता सार : शाकाहार शुद्ध आहार

इसी अंक में पृष्ठ २१ पर प्रकाशित ज्ञान कसौटी ११ के उत्तर

(१) सुरदेव/सुपार्श्व/सुव्रत (२) सुधर्मास्वामीजी (३) सुबाहु/सुजात/सुविशाल (४) सुषमासुषम (५) सुंदरी (६) सुघोषा घंट (७) सूयगडाग (८) सुनंदा - सुमंगला (९) सुपार्श्वनाथ (१०) सुभद्रा (११) सुवर्ण (१२) सुकोशल (१३) सुदर्शन (१४) सुलसा (१५) सुयशा (१६) सुदेव-सुगुरू-सुधर्म आदरूं (१७) सुर्यकांता (१८) सूरिपद (१९) सुहराई-सुहदेवसि (२०) सुधर्मास्वामी (२१) सुखशाता (२२) सुभूम (२३) सुपुत्र (२४) सुवर्णकमल (२५) सुंसस्कार

शाश्वत धर्म के नये संरक्षक ➜ श्री सौधर्मवृहत्पोगच्छीय जैन संघ-जावरा

सरे राह चलते – चलते

★ **हम पर कर्ज कितना!** भारत देश कर्ज में डूब जाए, ऐसी दशा आजादी के बाद निरन्तर हमारे शासकों ने की है। देश की आजादी के समय ब्रिटीश सरकार जमा रकम यहाँ छोड़ गयी थी, किन्तु हमारे नेताओं ने विकास के नाम पर स्वयं की प्रगति, स्वयं के परिवार की प्रगति या अपने पक्ष की प्रगति के लक्ष्य को लेकर विदेशी कर्ज लेते रहकर स्थिती यहाँ तक पहुंच गयी है कि अभी अवमूल्यन के पूर्व भारत के प्रत्येक नागरिक पर १२०० रुपये का विदेशी कर्ज था, जो अवमूल्यन के कारण ३०० रुपये बढकर १५०० रुपये हो गया एवं अभी–अभी जो नया कर्ज और लिया गया है। उसके बाद प्रत्येक भारतीय पर २००० रूपये का कर्ज हो गया है। अर्थात् यहाँ जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति दो हजार रुपये के विदेशी कर्ज के साथ ही जन्म लेता है। अर्थात् एक ही वर्ष में प्रति नागरिक ८०० रूपये का कर्ज बढ गया है।

★ **सरकार द्वारा खर्च में कटौती :** सरकार द्वारा प्रशासन में खर्च कम करने की सुचना भले ही की गयी हो किन्तु अलग–अलग गुप्तचर विभागों में प्रति वर्ष २८ अरब रुपये खर्च किये जाते है, उसमें एक रुपये की भी कटौती नहीं होगी..... शायद बढ़ सकता है। राष्ट्रपति भवन का प्रतिवर्ष खर्च बढ़कर अब ४ करोड़ हो गया है। विज्ञान भवन की पुनः सजावट में ११ करोड़ खर्च होंगे। अभी प्रधानमंत्री जी द्वारा यह जाहिर किया गया कि कुछ पद कम किये जा रहे हैं, लेकिन मात्र जाहिर करने से कुछ नहीं होता, यह सरकारी नियम है कि जब तक उनके पास कुछ भी लिखीत रूप में नहीं आता तब तक वह बात मानी नहीं जाती। किसी भी मंत्रालय या विभाग की एक भी जगह अभी तक तो निरस्त होने की जानकारी नहीं है।

★ **विश्व बाजार में किमतों का चित्र :** विश्व बाजार में क्रुड तेल के भाव जो आसमान में चढ़ गये थे अब १६–१७ डॉलर प्रति बेरल पर पहुंच गये हैं, यदि उत्पादन नहीं घटाया गया तो भाव और कम हो सकते हैं। सोने के भाव दिसम्बर ९१ में एक औंस के ३६९ डॉलर थे वे सन् ९२ के प्रारंभ में ३५८ डॉलर हो गये हैं। चांदी दिसम्बर ९१ में प्रति औंस ४.०६ डॉलर से ३.८५ डॉलर हो गयी है। भारत में रूई के भाव आसमान छू रहे है जब कि विश्व में पिछले छः महिनों में प्रति पौंड २० सेन्ट घटे हैं। चाय के भाव सन ९१ में प्रति रतल एक डॉलर एक सेन्ट थे अब ७४ सेन्ट हो गये हैं। टीक लकड़े के प्रति एक हजार बोर्ड फीट के २४६ से १८१ डॉलर हो गये हैं। सन् १९९२ के प्रारंभ का विश्व का चित्र एक तरफ रखकर हम अपने यहॉ के भावों को देखते हैं कि वे किस प्रकार दिन दुगुने व रात चौगुने बढते जा रहे है। क्या सरकार की गलत नीतियों के ही यह परिणाम नहीं है?

★ **महंगाई कहाँ–कितनी बढ़ी ?** सन १९९२ के प्रारंभ में पिछले वर्ष की महंगाई की दर के आंकडे इस प्रकार हैं – जापान ३.३ प्रतिशत; अमेरिका ५.४ प्रतिशत; कनाडा ४.४ प्रतिशत; ब्रिटेन ४.१ प्रतिशत; पाकिस्तान ६ प्रतिशत; साउदी अरेबीया २ प्रतिशत एवं चीन २.१ प्रतिशत; जब कि प्रसिद्ध हुए आंकडों के अनुसार भारत में १३.६ प्रतिशत।

★ **जाहिर क्षेत्र (सरकारी उद्योग) :** सरकार द्वारा संचालित जाहिर उद्योग व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण अधिकांश नुकसान में चल रहे हैं, उस नुकसानी को अनेकानेक प्रकार के टेक्सों द्वारा हमारी और आपकी जेब पर केंची चलाकर पूरा किया जाता है। सिर्फ एक राज्य उत्तर प्रदेश में जाहिर क्षेत्र के कुल ६४ विभाग प्रतिदिन एक करोड़ का नुकसान कर रहे हैं...... उसमें भी सिर्फ ९ विभागों ने अभी तक १२ अरब ३५ करोड़ का नुकसान किया है। समाजवाद एवं ट्रेड युनियनों की दादागीरी के कारण नेहरू से लगाकर चन्द्रशेखर तक किसी भी प्रधान मंत्री ने इस पर कठोर निर्णय नहीं लिया। अभी नरसिंहराव की सरकार द्वारा क्रम बद्ध ऐसे नुकसान कर रहे उद्योगों को कामगार बेकार न बने इस प्रकार बंद करने का अथवा बेचने का निर्णय लिया तो साम्यवादियों, यूनियन के नेताओं, आदि ने हल्ला मचा दिया। साम्यवाद, रशियनवाद, मार्क्सवाद आदि वादों के जाल में यदि सरकार नहीं उलझती तो जाहिर क्षेत्र के गड्ढे में गिरने से देश बच गया होता और हमें न तो विदेशी कर्ज करना पडता एवं न ही कटोरा लेकर दुनियाँ में फिरना पड़ता। वास्तव में इस प्रकार के उद्योगों की स्थापना नेता स्वयं के, अपने पक्ष के लोगों एवं संबंधियों को सीधे लाभ पहुंचाने की दृष्टि से ही की जाती है।

क्या हमारे प्रशासक इनसे बोध पाठ लेकर अपने कार्यप्रणाली की इमानदारी से समीक्षा करेंगे ?

'मुसाफिर'

आपका पत्र मिला

नवम्बर–दिसम्बर ९१ सुन्दर अंक मल्यो – आनंद थयो। सम्पादकीयनो तमारो लेख पण खुबज सुन्दर रह्यो। अनुष्ठान ना आडंबर करतां पाठशाला वीगेरेना पायाना कामनेज महत्व आपवुं जोईए। हुं तमारा विचारो साथे सहमत छुं। अंक नी बीजी पण दरेक माहिती सभर मेटर सारी छे – **जयन्ति एन. वोरा – नवसारी**

पत्रिका मिली। उसमें से सुन्दर व मन के अन्तराल को छूनेवाला आपका सम्पादकीय लेख है। हर बार आपका सम्पादकीय विशिष्ट रहता है।

मुनीलाल भंडारी – रानी बेन्नुर (आ.प्र.)

ज्ञान कसौटी (११)

----- श्री महेन्द्र जे. संघवी -- थाने

(स्वाध्यायी पाठक निम्मांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखे, फिर इसी अंक में पृष्ठ **२४** पर दिये गए उत्तरों से मिलान करें ---- सम्पादक)

(नोट - सभी प्रश्नों के उत्तर 'स' अक्षर से शुरू होते है ।)

(१) आनेवाली चौबीशी के एक तीर्थंकर भगवान का नाम ....है ।

२) श्रमण भगवान महावीर परमात्मा के पंचम गणधर .... थे ।

३) महाविदेह क्षेत्र में विचरते एक विहरमान तीर्थंकर का नाम ? (..............)

४) कालचक्र के एक आरे का नाम ? (............)

५) भगवान ऋषभदेव की पुत्री .... ने साठ हजार वर्ष आयंबिल किये थे ।

६) भगवान के जन्म के समय में हरिणगमैषि देव .... बजाता है ।

७) पेंतालीस आगम में एक आगम का नाम ? (...........)

८) मरूदेवी माता की पुत्रवधु का नाम .... एवं .... था ।

९) स्वस्तिक लांछन से शोभित तीर्थंकर परमात्मा का नाम .... है ।

१०) चम्पानगरी के द्वार खोलने वाली सती का नाम .... था ।

११) चंदनबाला ने भगवान महावीर को उड़द के बाकले वोहराये तब देवताओं ने ....वृष्टि की थी ।

१२) .... मुनि को शेरनी ने उपसर्ग किया था ।

१३) श्री नवकार मंत्र के प्रभाव से .... सेठ को शुली का सिंहासन बन गया था ।

१४) श्री महावीर परमात्मा ने .... श्राविका को धर्मलाभ कहलवाया था ।

१५) चौदहवे तीर्थंकर परमात्मा की माता का नाम .... था ।

१६) मुहपत्ति पडिलेहण में हाथ की पडिलेहना के समय बोला जाता है । (.............)

१७) परदेशी राजा की पत्नी का नाम .... था ।

१८) नवपदजी ओली में तीसरे दिन .... की आराधना होती है ।

१९) गुरूवंदन करते समय प्रातः .... एवं मध्यान्हके बाद ....बोला जाताहै ।

२०) शंखावृत का चिन्ह श्री .... गणधर के चरण में था ।

२१) इच्छकार सूत्र के पाठ से गुरू भगवंत की .... पूछी जाती है ।

२२) .... चक्रवर्ती मरकर सातवीं नरक में गया था ।

२३) मात-पिता की सेवा करने वाला .... कहलाता है ।

२४) तीर्थंकर परमात्मा विहार करते हैं तब देवता .... की रचना करते हैं ।

२५) पाठशाला में बालकों को .... मिलते हैं ।

बिदाई के अवसर पर पुत्री को शिक्षा

प्यारी पुत्री यदि तू इतना स्मरण रखेगी तो संसार मे बहुत सुखी रहेगी

(१) आज विवाह होने के पश्चात तू हमारी नही रहेगी। आजतक तू जिस प्रकार हमारी आज्ञा का पालन करती थी, उसी प्रकार अब अपने सास, ससूर तथा पति की आज्ञा का पालन करना।

(२) विवाहपरान्त एकमात्र पति ही तेरे स्वामी होगे। उनके साथ सदैव उच्च व्यवहार रखना और नम्रता रखना। अपने पति की आज्ञा का बराबर पालन करना ही एक नारी का श्रेष्ठ और पवित्र कर्तव्य है।

(३) अपनी ससुराल मे सदैव विनय और सहनशीलता रखना तथा कार्यकुशल बनना।

(४) ससुराल के व्यक्तियों के साथ कभी ऐसा व्यवहार मत करना, जिससे उन्हे दुख हो, यदि ऐसा करेगी तो पति का प्रेम खो बैठेगी।

(५) कभी क्रोध मत करना, पति कोई भूल करे तो मौन रखना और जब पति शान्त अवस्था में हो, तब उन्हें वास्तविक स्थिति नम्रतापूर्वक समझाना।

(६) अधिक बातें मत करना। असत्य मत बोलना। पड़ौसी की निन्दा मत करना। जो कर सके वह सेवा सबकी करना।

(७) हाथ देखने वाले ज्योतिषी से अपनी भाग्य–रेखाओं के विषय मे कभी मत पुछना। तेरा कार्य ही तेरा भाग्य निर्मित करेगा – यह निश्चय समझ लेना।

(८) परिवार मे छोटे–बडे सबकी सेवा करने से सबका प्रेम प्राप्त होगा।

(९) अपने घर का काम कौर–कसर से चलाना और सावधानीपूर्वक सब व्यवस्था करना।

(१०) अपने पिता की उच्च शिक्षा अथवा श्रीमंताई का अभिमान मत करना। पति के समक्ष अपने पिता के वैभव का गुणगान कभी मत करना।

(११) सदा लज्जाशील कपड़े पहनना। बहुत भड़कीले तथा आकर्षित करनेवाले कपड़े मत पहनना और सदा सादगी से रहना।

(१२) आतिथ्य ही घर का वैभव है, प्रेम ही घर की प्रतिष्ठा है, व्यवस्था ही घर की शोभा है, सदाचार ही घर की सुगन्ध है और समाधान ही घर का सुख है।

(१३) ऋण हो जाय इतना खर्च मत करना, पाप हो ऐसी कमाई मत करना, क्लेश हो ऐसा मत बोलना, चिन्ता हो वैसा मत करना, रोग हो वैसा मत खाना और शरीर दिखे वैसा कपड़ा मत पहनना।

(१४) बेटी! हमारी यह अन्तिम सुनहरी शिक्षा है, इसे जीवन मे उतारना। मै तेरे जीवन मे आजादी, प्रगती, समृद्धि, भक्ति, शान्ति और दीर्घायु की कामना करता हूँ।

संकलनकर्ता
आशय कासलीवाल ''आशु''

पशुओं का उत्पीडन हमारा मनोरंजन

– श्री पन्नालाल मुन्धड़ा

गांवो के स्वच्छन्द वातावरण में हरे–भरे लहलहाते खेतों के बीच से निकलती पगडंडी पर कभी किसी बैल या सांड़ को विचरण करते देखा है। उसकी आँखों में उन्मुक्त आनन्द की अनुभूति को कभी निहारा है आपने। आपने देखा है किस तरह से लाल कलंगीवाले मुर्गे शाही अन्दाज में मुर्गियों के झुन्ड में घुमते हैं, बांग लगाते हैं, और चुगते हैं दाना। कितने मनमोहक लगते हैं ये पशु और पक्षी अपने स्वाभाविक वातावरण में।

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि मनुष्य अपने मनोरंजन के लिये इन मासूम पशुओं को तरह–तरह के वीभत्स और धिनौने 'खेल' खेलने के लिए मज़बूर करता है। कॉकफ़ाईट – मुर्गबाजी – यानी मुर्गों को आपस में लड़ाना, तीतर और बटेर की लडाई, साँप और नेवले की लड़ाई, बुलफ़ाईट – बैल और सांड का मल्लयुद्ध आदि कुछ ऐसे उदाहरण है जो कि मनुष्य की विकृत मनोदशा को परिलक्षित करते हैं।

पशुओं को इस प्रकार के खेल खेलने के लिये अनेक प्रकार की यंत्रणाएं दी जाती हैं। खेल के मैदान में धकेलने के पूर्व उन्हें मादक द्रव्य पिलाए जाते हैं ताकि वे अपने होश–हवास खोकर पागलों की तरह एक दूसरे पर झपटें। परिणामतः इस प्रकार के 'मनोरंजक' खेल में जो पशु–पक्षी भाग लेते हैं, वे भीषण रुप से घायल हो जाते हैं। कॉकफ़ाईट **'मुर्गबाजी'** के खेल में तो प्रायः मुर्गी के पैरो में तेज धारवाली छुरियां बांध दी जाती हैं जिससे कि अन्ततः ये पक्षी लहूलूहान होकर धराशायी हो जाते है।

बुलफ़ाईट – अर्थात् बैल और सांड़ की लडाई के दौरान इन पशुओं को उत्तेजित करने के लिए इनके गुप्त अंगों पर प्रहार किया जाता है। कभी इनकी पूंछ को मरोड़ा जाता है तो कभी इनकी पूंछ के नीचेवाले क्षेत्र में छड़िया डाली जाती हैं। और कभी–कभी तो इनकी आँखों में मिर्च का पाउडर तक डाल दिया जाता है। यह सब मात्र इसलिए किया जाता है कि पशु अधिक से अधिक एक दूसरे पर आक्रमण करे और इसका फल बेचारा पशु घायल होकर भुगतता है।

बंदर का और भालू का नाच दिखानेवाले मदारियों को तो डमरु बजाते गली–मोहल्लों में घूमते आपने अक्सर देखा होगा। साधारण व्यक्ति की यही धारणा है कि इस प्रकार के तमाशों में पशुओं पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं होता। लोग यही समझते हैं कि बंदर या भालू स्वेच्छा से उल्लासित होकर मदारी के इशारों पर नाचता है। जबकि वास्तविकता कुछ और ही है। ये असहाय पशु तरह–तरह के कर्तब दिखाने के लिये इसलिये मज़बूर है क्योंकि उन्हें अपने मालिक की चाबुक का डर है। डमरु की तान पर यदि वे नहीं नाचे तो उन्हें प्यासा रखा जायेगा।

अत्यंत खेद का विषय है कि हम इस प्रकार के तथाकथित मनोरंजन में निहित क्रूरता की ओर तनिक मात्र भी ध्यान नहीं देते और तालियां बजा–बजा कर मजा लूटते हैं। प्रश्न केवल क्रूरता का ही नहीं है। प्रश्न पशु–प्राणियों की गरिमा का भी है। हम 'कण–कण में भगवान' की रट् लगाते हैं और भूल जाते हैं कि पशु–पक्षियों में भी वही प्राण हैं जो हमारे शरीर में हैं। पशु–पक्षियों को भी अपनी जान उतनी ही प्यारी है जितनी हमें। फिर भला हमें क्या अधिकार है कि हम उनके साथ अभद्र व्यवहार करें।

समय की पुकार कि प्रबुद्ध और संवेदनशील व्यक्ति जनमानस में व्याप्त नैतिक पथभ्रष्टता को समाप्त करने हेतु सामने आयें। आवश्यकता है एक ऐसे नवजागरण की जो मनुष्य की सुप्तावस्था को झकझोर डाले और उसमें ऐसे प्राणों का संचार करें जिससे मनुष्य अपनी मनुष्यता को पहचाने और अन्य पशु–पक्षियों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार को तुरन्त बन्द करे।

शाश्वत धर्म को विविध प्रसंगो पर सहयोग देना न भूलें। ☆☆☆☆☆☆☆

गुरु जयन्त ! कैसे तेरे गुण गाऊँ।

कहाँ से लाऊँ शब्द चयनकर, कहाँ से भाव जुटाऊँ।
कैसे सर्जन करुं काव्य का, कैसे गीत सुनाऊँ॥
गुरु जयन्त ! कैसे तेरे गुण गाऊँ।

सीमित शब्द व्यर्थ हो जाते, भाव भक्ति तक पहुंच न पाते।
कर बांधू, पग साध न देते, कैसे तुझ तक आऊँ।
गुरु जयन्त ! कैसे तेरे गुण गाऊँ।

शब्द शांत है भाव सुप्त है, काव्य अनर्गल गान गुप्त है।
अहमादिक का भाव लुप्त है, क्या खोजूँ क्या पाऊँ॥
गुरु जयन्त ! कैसे तेरे गुण गाऊँ।

जितेन्द्रीय समत्व योगी ! पास बुलाले, चरण कमल रज शीश सजादे।
रीता घट अनरीता करदे, उन्मत–नृत्य दिखाऊँ॥
गुरु जयन्त ! कैसे तेरे गुण गाऊँ।

नरेन्द्रकुमार रायचंदजी – (बागरा)

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (७)

श्री प्रदीप एम. जैन (बम्बई)

प्रस्तुत स्पर्धा (७) का उत्तर अलग फुलस्केप पेपर पर लिखकर पूर्ण नाम, पता एवं आपके शाश्वत धर्म की सदस्य संख्या के साथ कार्यालय के पते पर १० मार्च तक पहुंच जाना चाहिए।

सफल प्रतियोगियों का चयन लकी ड्रॉ द्वारा किया जाकर प्रथम विजेता को एक सौ रुपये, द्वितीय को साठ रुपये एवं तृतीय को चालीस रुपये का साहित्य भेजा जाएगा।

सभी प्रतियोगियों के नाम इनामी स्पर्धा (७) के उत्तर के साथ अप्रैल अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

पुरस्कार सौजन्य अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा जोगेश्वरी (बम्बई)

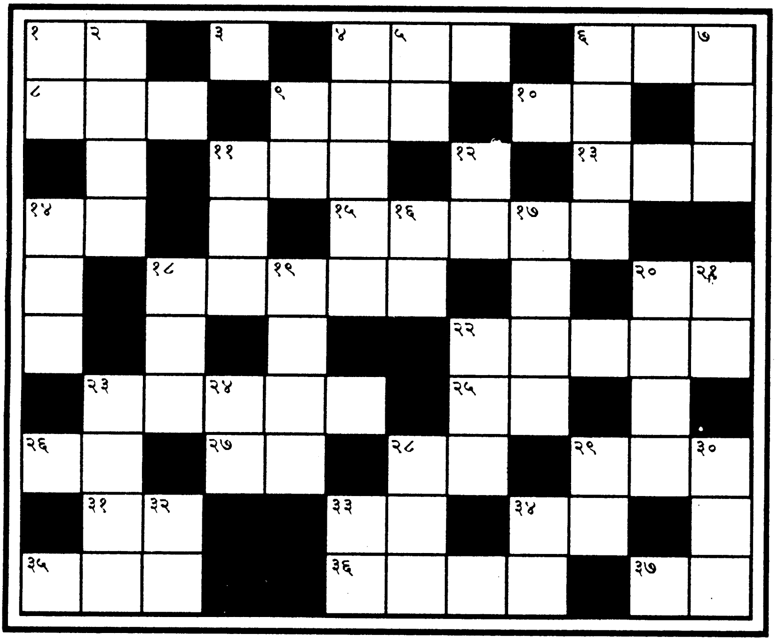

दायें से बायीं ओर –

१. चार शुद्धियों में से एक जिसका ध्यान सामायिक करते समय रखा जाता है। (२)

४. संभवनाथ भगवान का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवल ज्ञान स्थान, जिसका प्राचीन नाम कुणालनगरी व चन्द्रिकापुरी भी था। (३)

६. जिसे छु कर लोहा भी स्वर्ण बन जाए, और जिसे अपनाने से आत्मरूपी लोहा भी स्वर्ण बन सकता है, दोनों का नाम एक ही है। (३)

८. --- वाले से, बचाने वाला बड़ा होता है। (३)
९. पवित्र का पर्याय वाची शब्द ? (३)
१०. भगवान पार्श्वनाथजी के यक्ष -- (२)
११. सूरज, सूर्य, भास्कर, दिवाकर, रवि --- (३)
१३. राजस्थान में रानी स्टेशन से १० कि. मि.की दूरी पर स्थित एक प्राचीन तीर्थ, जिसका प्राचीन नाम—नन्दपुर, नर्दुलपूर आदि रह चुका है। (३)
१४. वह प्राकृत शब्द जिसके हिन्दी में तीन अर्थ होते हैं – अनंत वीतराग और आत्मा (२)
१५. काकंदी तीर्थ के मुलनायक भगवान, यही स्थान उनके च्यवन जन्म दीक्षा व केवलज्ञान स्थान भी हैं। (५)
१८. एक बहिरंग तप। (५)
२०. आत्मा—अपभ्रंश भाषा में, (२) (कृपया आधा 'प्' न लिखें)
२२. भगवान महावीर कालीन वह व्यक्ति जिसकी पत्नी पर अत्याचार होने की घटना के बाद उसके शरीर में यक्ष समा जाता है, और वह प्रतिदिन छः पुरूष और एक स्त्री की हत्या करता था, परन्तु सुदर्शन सेठ के प्रतिबोध से हत्या करना बन्द कर देता है। (५)
२३. मध्य प्रदेश में कुक्षी ग्राम के निकट भगवान आदिनाथ का तीर्थ जिसका प्राचीन नाम तारापुर और तुंगीयापत्तन भी रह चुका है। (५)
२५. आवश्यकतानुसार -- रखना अपरिग्रह (२)
२६. भगवान सुमतिनाथ को -- वृक्ष के नीचे केवलज्ञान हुआ था। (२)
२७. राजा सु -- , भगवान मुनिसुव्रतस्वामी के पिता (२)
२८. जैन दर्शनानुसार -- वे परमाणु होते हैं, जो आत्मा के वास्तविक स्वरुप पर बादल की तरह छा जाते हैं। (२)
२९. संस्कृत के ऋषभ, वृषभ शब्द के लिए प्राकृत शब्द (३)
३१. जैन दर्शन अक्षर परछाई की तरह -- को भी पुद्गल रूप मानता है। (२)
३३. भगवान महावीर के प्रति अपार श्रद्धा के कारण राजा श्रेणिक ने तीर्थंकर -- गौत्र, कर्म उपार्जित किया। (२)
३४. भगवान अनन्तनाथ के प्रथम गणधर। (२)
३५. अमर, अमिट, अनन्त (३)
३६. पश्चिमी बंगाल की पंचतिर्थी का एक तीर्थ। (४)
३७. भगवान संभवनाथ की माता -- रानी। (२)

उपर से नीचे की ओर –

१. -- शाह, राणा प्रताप के समय के एक दानवीर जैनी। (२)
२. भगवान नेमीनाथ के प्रथम गणधर (४)

३. – षमा देवी, भगवान पद्म प्रभु की माता का नाम। (१)
४. --- -- पंचमी, भगवान नेमीनाथजी की जन्मतिथी (३,२)
५. चामुण्ड -- में ध्यान लगाया शेर बड़ा खुंखार था आया। (२) (गुरूगुण इक्कीसा का अंश)
६. बाली, पाली, सेसली गोहिली, काछोली किंवरली आदि कई तिर्थों के मुलनायक भगवान (४)
७. प्राकृत शब्द 'सयल' शब्द का संस्कृत अर्थ (३)
९. इच्छाकारेणं संदिसह भगवन्! सामायिक -- यथा शक्ति (२)
११. पुद्गल का दूसरा नाम (३)
१२. कार्य करने के लिए बनाया गया व्यवस्थित मार्ग, रास्ता। (२)
१४. भगवान शांतिनाथ की माता --- रानी। (३)
१६. अनन्त -- मोहनीय कर्म के क्षय होनेपर प्रकट होता है। (२)
१७. ---- पहाड़ियों में जैन गुफाएं तीसरी शताब्दी की हैं। (४)
१८. --- गढ़, अरावली के अबुदांचल पर्वत की उच्चतम चोंटी पर राणा कुम्भा द्वारा निर्मित भगवान आदिनाथ का मंदिर है। (३)
१९. भगवान महावीर के एक गणधर। (४)
२०. कार्तिक ---- भगवान महावीर की निर्वाण तिथि। (४)
२१. एक प्राचीन भारतीय भाषा। (२)
२२. एक द्रव्य, जो पदार्थ को स्थिती प्रदान करता है। (३)
२३. ---- गिरि, शत्रुंजय पंचतिर्थी का एक तीर्थ। (४)
२४. भगवान -- नाथ का लांछन कमल है। (२)
२८. भगवान पार्श्वनाथ का पूर्व भवों को बैरी। (३)
२९. भगवान आदिनाथ ने दीक्षा पश्चात प्रथम पारणा ४०० दिनों बाद -- का रस ग्रहण करके लिया था। (२)
३०. --- पुर भगवान कुंथुनाथजी व अरनाथजी का च्यवन व जन्म स्थान। (३)
३२. पानी, जल का पर्यायवाची शब्द ? (२)
३३. पांच में सें एक इंद्रिय का नाम ? (२)
३६. सिरोही रोड़ से २२ कि. मी. की दूरी पर स्थित ६०० से भी अधिक साल पुराना भगवान आदिनाथ का मन्दिर। (२) (उल्टा चाहिए)

बधाई

बम्बई – अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सेवंतीभाई मणीभाई मोरखिया दी बम्बई मेटल मर्चेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष सन् १९९१–९२ के लिये चुने गये हैं। पूर्व में १९८७ से ९० तक भी वे इस पद पर आसीन थे।

शाश्वत धर्म एवं परिषद परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

|| श्री आदिनाथाय नमः || || श्री राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ||

श्री शत्रुंजय महातीर्थ नव्वाणुं यात्रा प्रसंगे

●○●○ भावभरा आमंत्रण ○●○●

* * *

पावन निश्रा – साहित्य मनीषी, वर्तमानाचार्यदेव, राष्ट्रसंत
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा

आयोजक – अदाणी कुंवरजीभाई देवराजभाई परिवार (धरादवाला) – सूरत

मंगल प्रारंभ – माह वदि ३ गुरुवार दिनांक २०/२/१९९२

यात्रा पुर्णाहुति – चैत्र वदि ६ सोमवार दिनांक २३/४/१९९२

स्थल – यतीन्द्र भवन धर्मशाला, तलाटी रोड़, पालीतणा (गुजरात)

आराधक भाई बहन निम्नांकित पतों पर संपर्क कर सकते हैं –

(१) **अदाणी चुनिलाल नागरदास,** ☎ ३२५०१ – २९८७१
शान्तिविला, गोपीपुरा, काजी का मैदान, **सुरत** – ३९५ ००३.

(२) **अदाणी सन्स,** ☎ ३११३५
अनुराग, लालगेट, **सुरत** – ३९५ ००३.

(३) **एम. सुरेश एन्ड कं.** ☎ ३८६१४११/३८६१४१२/३८६१४१३
४१९ पारेख मार्केट / ओपेरा हाउस / **बम्बई** – ४०० ००४

(४) **अदाणी गुणवन्तलाल गगलदास** ☎ ३५१७२८
श्री साईकृपा बिल्डिंग / दूसरा माला
खेतवाड़ी १२ वीं लेन, **बम्बई** – ४०० ००४

(५) **अदाणी छोटालाल नागरदास** ☎ ३५७४१३
रतनपोल – हाथीखाना – **अहमदाबाद** – ३८० ००१ (उ. गुजरात)

(६) **अदाणी जयंतिलाल हालचंदभाई** ☎ ८४
आंबली शेरी ना नाके, बाजार
थराद, जि. बनासकांठा –३८५ ५६५ (उ. गुजरात)

(७) **संघवी राजमलभाई मोहनलाल**
लक्ष्मी सिनेमा के पिछे
आणंद – ३८८ ००१ (उ. गुजरात)

(८) **संघवी दलपतलाल कीर्तिलाल** ☎ १५७
रसाला बाजार, **डीसा** – ३८५ ५३५, **जिला – बनासकांठा**
(उ. गुजरात)

शासन प्रभावना के स्वर्णिम पृष्ठ (५)
— संकलन महेन्द्र जैन (खाचरोद)

*[शांतमूर्ति कविरत्न आचार्य देव श्रीमद् विजय विद्याचंद्र सूरीश्वरजी के पट्ट प्रभावक मधुर व्याख्याता साहित्य मनीषी आचार्य देव श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में सम्पन्न होने वाले शासन प्रभावना के कार्योका संक्षिप्त विवरण सं. २०४० माह सुदी १३ दि. १५–२–८४ को भांडवपूर तीर्थ में पचास हजार गुरुभक्तों की उपस्थिती में आचार्य पद से अलंकृत करने के बाद देते रहे हैं। पूर्व में शाश्वत धर्म के फरवरी ८६, जनवरी ८८ के अंकों में २–२ वर्षों की एवं अप्रेल ८९ के अंक में एकवर्ष तथा जन. + फर. ९१ के अंक में २ वर्ष की झलक प्रकाशित की गई थी। अब इस अंक में २४–१–९० से १२–१–९१ (एक वर्ष) मे सम्पन्न शासन प्रभावना के कार्यों की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत है। — **सम्पादक**)*

- **पौष सुदी ८ मंगलवार १५–१२–९०**
  पू. मुनिराज श्री विनयविजयजी म. सा. का स्वर्गरोहण एवं इस निमित्त भक्तामर महापूजन शा. वस्तीमल भानाजी परिवार द्वारा कराई गई एवं पंचान्हिका महोत्सव।

- **माघ सुदी २ शुक्रवार १८–१–९१**
  श्री शंखेश्वर तीर्थ (गुजरात) पर श्रमण–श्रमणी आराधना भवन एवं गुरूराज नवकार तीर्थ पेढ़ी का भूमिपूजन एवं शिलस्थापन।

- **माघ सुदी ११ शनिवार २६–१–९१**
  थराद (गुजरात) में (१) चन्द्रिका बहन (२) अलका बहन (३) अलका बहन को भागवती दीक्षा प्रदान कर नूतन साध्वीयों का क्रमशः विनीत गुणाश्रीजी, वात्सल्यगुणाश्रीजी एवं वैराग्यगुणाश्रीजी नामकरण किया जाकर साध्वी श्री स्वयंप्रभाश्रीजी की शिष्याऐं घोषित की गई।

- **फाल्गुन सुदी २ शनिवार १६–२–९१**
  उंदराणा (गुजरात) में भगवान श्री वासुपूज्यादि जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा।

- **फाल्गुन सुदी ३ रविवार १७–२–९१**
  भोरडु (थराद–गुजरात) में श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञानमन्दिर का उद्घाटन एवं फोटो की स्थापना।

- **फाल्गुन सुदी ९ शनिवार २३–२–९१**
  नारोली (गुचरात) में भगवान श्री धर्मनाथजी एवं पार्श्वनाथजी की प्रतिष्ठा एवं अभिषेक

- **चैत्रवदी ७ गुरुवार ७–३–९१**
  भीनमाल (राज). में सेठ श्री बाबुलालजी तगराजजी बाफना को भगवती दीक्षा प्रदान कर नूतन मुनि का नाम नयरत्नविजयजी रखा गया।

- **चैत्रवदी १२ सोमवार १३–३–९१**
  सियाणानगर (राजस्थान) में मुमुक्षु कुमारी डिम्पल को दीक्षा प्रदान कर नूतन साध्वी का नामकरण साध्वीजी हर्षितरेखाश्रीजी किया जाकर साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी की शिष्या घोषित किया गया।

- **चैत्रसुदी १२ बुधवार २७–३–९१**
  सुराणा (राज.) निवासी शा. पुखराजजी खेताजी भंडारी परिवार द्वारा चैत्री पूनम की आराधना विविध धर्मानुष्ठान, चतुर्दिवसीय कार्यक्रम के साथ सानन्द सम्पन्न।

- **प्रथम वैशाख सुदी ११ बुधवार २४–४–९१**
  धानेर (गुजरात निवासी) शा. अमृतलाल भीखाभाई सवाणी परिवारकी ओर से धानेरा से श्री जीरावला तीर्थ छ रि पालक मात्रा संघ का प्रमाण।

- **द्वि. वैशाख वदि १ सोमवार २९–४–९१**
  धानेरा से प्रस्थित संघ का आगमन एवं संघपाति का परिवारसहित मालारोपण समारोह।

- **द्वि. वैशाख सुदि १० गुरूवार २३–५–९१**
  थलवाड (राज.) में अंजनशलाका एवं भगवान श्री आदिनाथ, शांतिनाथ आदि जिन-बिम्बों एवं गणधर गौतम स्वामीजी गुरूराजेन्द्रसुरिजी आदि बिम्बों का प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न।

- **ज्येष्ठ सुदि ११ शनिवार २६–६–९१**
  रतलाम (म.प्र.) में श्री सुविधीनाथजी आदि जिनबिम्बों एवं श्री गुरूगौतमस्वामी, श्री राजेन्द्रसूरिजी आदि बिम्बों का प्रतिष्ठा महोत्सव एवं श्रीमति झमकुबाई कश्यप का सन्मान समारोह सम्पन्न।

- **आषाढ वदी ६ बुधवार ३–७–९१**
  बडनगर (म.प्र.) में राजेन्द्रसूरि ज्ञान मन्दिर का उदघाटन एवं श्री राजेन्द्रसूरि की प्रतिमा स्थापित।

- **आषाढ सुदि ४ सोमवार १५–७–९१**
  बड़ाबदा में राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर योजना साकार

- **आषाढ सुदी ६ बुधवार १७–७–९१**
  जावरा (म. प्र.) में चातुर्मास हेतु भव्य चलसमारोह के साथ प्रवेश।

- **श्रावण सुदी ६–७ गुरू–शुक्रवार १५–१६ अगस्त १९९१**
  अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का १५ वां अधिवेशन समारोह सम्पन्न जिसमें श्री सेवंतीलालजी मोरखीया अध्यक्ष एवं श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा महामंत्री निर्वाचित किये गए। मध्य प्रदेश शासन द्वारा गोवंश हत्या बन्दी के निमित्त तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा का अभिनन्दन।

- **श्रावण सुदी १३ शुक्रवार २३–८–९१**
  जावरा में राज राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर का शिलान्यास श्री शांतिलालजी कावेड़ीया (जावरा) द्वारा शिलान्यास उन्हीं के द्वारा मुदत्त जमीन पर।

■ **भाद्रपद सुदी १० बुधवार १९–९–९१**
आचार्य श्री जयंतसेन सूरिजी म.सा.के ५५ वर्ष के उपलक्ष में मुनिराज श्री पद्मरत्नविजयजी म.सा.द्वारा ५५ उपवास, मुनिराज श्री नयनरत्नविजयजी म.सा.द्वारा ३१ उपवास, मुनिराज श्री अपूर्वरत्नविजयजी म.सा.द्वारा १६ उपवास मुनिराज श्री विश्वरत्नविजयजी म.सा.द्वारा ८ उपवास एवं साध्वीजी श्री चारुदर्शनाश्रीजी म.सा.द्वारा २१ उपवास की तपश्चर्या निमित्त अष्टान्हिका महोत्सव।

■ **कार्तिक सुदी ११ सोमवार १८–११–९१**
जावरा में श्री राज राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर का बम्बई निवासी श्री चंद्रकांतभाई वोरा (थराद) द्वारा उद्घाटन।

■ **मार्गशीर्ष वदी १ शुक्रवार २२–११–९१**
पिपलौदा (जावरा) में स्थानीय श्री संघ के सम्पूर्ण योगदान से – श्री राजेन्द्रसूरि दादावाड़ी निर्माण योजना साकार।

■ **मार्गशीर्ष वदी ३ रविवार २४–११–९१**
सरसी में राजराजेन्द्र ज्ञानमंदिर निर्माण योजना साकार।

■ **मार्गशीर्ष वदी ६ बुधवार २७–११–९१**
नागदा (म.प्र.) से नागेश्वर तीर्थ हेतू शा. हस्तीमलजी धीरजमलजी नान्देचा परिवार की ओर से छः रि पालितसंघ का प्रस्थान।

■ **मार्गशीर्ष वदी ७ गुरुवार २८–११–९१**
खाखाकला में राजेंन्द्रसूरि ज्ञानमन्दिर निर्माण योजना साकार।

■ **मार्गशीर्ष वदी ९ शनिवार ३०–११–९१**
नागदा से प्रस्थित संघ का श्री नागेश्वरतीर्थ में प्रवेश जहां संघपति परिवार का तीर्थमाला द्वारा बहुमान।

■ **मार्गशीर्ष सुदी १, २ शनिवार–रविवार ७, ८–१२–९१**
अ.भा.सौधर्म वृहत्त्यागच्छीय जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ का दो दिवसीय अधिवेशन संघ अध्यक्ष जैन रत्नसेठ श्री गगलदासभाई हालचंद भाई संघवी की अध्यक्षता में जावरा में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वानुमति से पूनः अध्यक्ष श्री गगलदासभाई को उपाध्यक्ष – श्री चैतन्यजी काश्यप एवं मंत्री श्री भवरलालजी छाजेड़ को निर्वाचित किया गया। ८ दिसम्बर को अधिवेशन का समापन एवं श्रीमद् जयंतसेनसूरी अभिनन्दन ग्रंथ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयालजी शर्मा के कर कमलों द्वारा सम्पन्न किया जाकर अभिनन्दन ग्रंथ की एक प्रति आचार्य श्री को अर्पण की गई। काम्बली ओढ़ा कर राष्ट्रसंत की उपाधि का प्रशस्ति पत्र अर्पित किया गया।

■ **मार्गशीर्ष सुदी १० सोमवार १६–१२–९१**
बाग (जिला–धार) निवासी शा केसरीमल रूपचंद चांदमल राजमल पोसीत्रा परिवार की ओर में उपधान तप का आयोजन रखा गया जिसमें १५७ आराधकों नें उपधान तप में भाग लिया।

■ **पौष वदी २ सोमवार २३–१२–९१**

राजगढ़ जि. धार (म.प्र.) निवासी शा. शैतानमल फतेचंदजी बाफना परिवार की ओर से राजगढ़ से श्री लक्ष्मणीजी तीर्थ हेतु छः रि पालित संघ का प्रस्थान।

■ **पौष वदी ९ रविवार २९–१२–९१**

राजगढ़ प्रस्थित संघ का श्री लक्ष्मणीजी तीर्थ में आगमन एवं संघपति परिवार का मालारोहण के साथ सम्मान।

■ **पौष वदी ११ मंगलवार ३१–१२–९१**

खट्टाली में बीस स्थानक तप उजमणा।

■ **पौष सुदी ७ रविवार १२–१–९२**

आचार्य श्री की निश्रामें श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर पू.गुरुमहाराज श्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा की जन्म एवं स्वर्गारोहण जयंती विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ सानन्द मनाई गई।

– शाश्वत धर्म को भेंट –

५५/– महिद्पुर निवासी श्री नरेन्द्रकुमारजी मोतीलालजी धाड़ीवाल (प्रतिनिधी शाश्वत धर्म) की ओर से सप्रेम।

१०१/– नीमच (म.प्र.) निवासी श्री बसंतीलालजी नागोरी (संजय एन्टरप्राइजेस) की ओर से सुपुत्र चि. संजय नागोरी के विवाह उपलक्ष पर सप्रेम।

११००/– राजगढ़ निवासी श्री शेतानमलजी नाथूलालजी द्वारा राजगढ़ से श्री लक्ष्मणीजी तीर्थ की छः 'रि' पालक संघ यात्रा की स्मृति निमित्त सप्रेम।

३००/– राजगढ़ से श्री लक्ष्मणीजी तीर्थ छः 'रि' पालक यात्रा निमित्त यात्री संघ की ओर से।

२०१/– जूना जोगापुरा (राज.) निवासी शा. चन्द्रभानजी श्रीरवजी श्री श्रीमाल की ओर से श्रीमती शांतिबाई के पद्मावती आराधना श्रवण करने के उपलक्ष में पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी आदि ठाणा की प्रेरणा से सप्रेम।

५०१/– जूना जोगापुरा (राज.) श्री सकल जैन संघ की ओर से श्री गुरुसप्तमी के उपलक्ष में पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी आदिठाणा की प्रेरणा से सप्रेम।

११११/– वर्तमानाचार्य श्रीमद् जयन्तसेनसूरिजी म.सा. की निश्रा मे गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा निमित्ते श्री संघ टाण्डा (म.प्र.) द्वारा सप्रेम।

१०१/– डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय, श्री महेश भंडारी, श्री विनोद भंडारी, श्रीमती कुसुम भंसाली तथा डॉ. हंसादीप की मातुश्री श्रीमती धापूबाई के स्वर्गवास पर स्मृति स्वरुप।

५०/– पू. आचार्य श्री अशोकरत्नसूरिजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न भक्तामरपूजन एवं शांति स्नात्र पूजन महोत्सव निमित्ते श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ यादगिरी की ओर से।

समाचार दर्शन

टाण्डा के इतिहास में एक स्वर्णिम पृष्ठ जुड़ गया
गुरुप्रतिष्ठा महोत्सव–एक रिपोर्ट

(शाश्वत धर्म के विशेष प्रतिनिधी श्री जिनेन्द्र बांठिया द्वारा)

विन्ध्याचल पर्वत की तलहटी में महातीर्थाधिराज मोहनखेड़ा के चरणों में। मालवा की पंचतिर्थी के मध्य बसा ग्राम टाण्डा आचार्य श्री की परिभाषा में –

टामटीम से मुक्त, न्याय निती से युक्त।
डॉट डपट से दूर, ऐसा टाण्डा है मशहुर॥

कहते है जहां बन्जारे अपना डेरा डालते थे उस स्थान को टाण्डा कहते थे। आज यहां बन्जारों के अवशेष पाए जाते है। ग्वालियर स्टेट में अमझेरा जिला के अन्तर्गत टाण्डा बाकानेर तहसील में आता था। वर्तमान में मध्यप्रदेश के धार क्षेत्र के अन्तर्गत है जहां आदिवासी का बाहुल्य है, स्थित है।

यहां करीब १५० डेढ़ सौ वर्ष पुराना भव्य अजितनाथ जिनालय है। श्रेष्ठीवर्य लालचंदजी कस्तुरचंदजी एवं चम्पालालजी द्वारा निर्मित आकर्षक सिद्धचक्र मन्दिर है। स्व. गेन्दालालजी चौधरी द्वारा अपने पूर्वजों की स्मृति में लाई गयी इस क्षेत्र की विशालतम गुरूप्रतिमा है जो करीब १० वर्ष पूर्व लाई गयी थी, एवं इन्हीं के द्वारा प्रतिष्ठित की गई थी। उस समय उचितस्थान के नहीं होने से परिवर्तित किया गया।

यह वह सौभाग्यशाली गांव है जहां पर इस पाट परम्परा के छट्टे आचार्य ने एक ही माह में छः (६) बार प्रवेश किया। परम पूज्य श्री आचार्यदेव, राष्ट्रसंत, वचन सिद्ध, दिवाकर श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज सा. की पावन निश्रा एवं मुनिमंडल व साध्वी मंडल के सानिध्य में एतिहासिक गुरू प्रतिष्ठा महोत्सव १६–१७ व १८ जनवरी ९२ को सम्पन्न हुआ।

जैसे ही गुरूदेव की प्रतिमा की प्रतिष्ठा का मुहूर्त आचार्य श्री द्वारा दिया गया पूरे गांव में उमंग का वातावरण छा गया व हर्ष की लहर दौड़ गयी।

आचार्य श्री द्वारा जाजम विधिपूर्वक बिछवाई गई गांव के सभी श्रेष्ठीवर्य का पदार्पण हुआ। कुंभस्थापन, दीपस्थापन, नवग्रह पूजा, अष्टमंगल पूजा व दशदिग्पाल पूजा के चढावे बोले गए। जो सर्व श्री सागरमलजी चौधरी, कांतिलालजी गादिया, प्रकाशचंदजी माणकचंदजी लोढ़ा एवं जिनेन्द्रकुमारजी बांठिया द्वारा लिये गए।

श्री उम्मेदमलजी बाफना द्वारा पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा पढ़ा कर कार्यक्रम की शुरू आत की गई।

दूसरे दिन कार्यक्रम की शुरूआत आचार्य श्री के गौरवमयी मंगल प्रवेश के साथ जलयात्रा से की गई। जुलूस गांव के मुख्य मार्गों से होता हुआ मंदिरजी के सभा मंडप में धर्मसभा में परिवर्तित हो गया, प्रवचन के पश्चात अट्ठारह अभिषेक एवं भगवान को सूर्य–चन्द्र दर्शन कराने के चढ़ावे बोले गए, जो सर्वश्री कान्तिलालजी गादिया, उम्मेदमलजी बाफना, सम्मीरमलजी तलेसरा, प्रकाशचंदजी लोढ़ा, जिनेन्द्रकुमारजी बांठिया द्वारा लिये गए। मंगल दिपक, गुरूआरती व आरती का लाभ–राजस्थान के मेंगलवा निवासी गुरूभक्त श्री मिश्रीमलजी केशाजी द्वारा लिया गया।

रात्रिकालिन सभा की शुरूआत श्री चम्पालालजी के मेहताजी बनने के चढ़ावे से शुरू हुई। गुरूदेव की प्रतिमा को बिराजमान करने का लाभ गुरूभक्त चण्डालिया परिवार के श्री दुलीचंदजी रमेशचन्द्रजी, सुभाषचंद्रजी द्वारा लिया गया व कलश चढ़ावे का लाभ श्री सौभाग्यमलजी नखेत्रा के पुत्र श्री तेजमलजी प्रकाशचन्दजी द्वारा लिया गया।

१० जनवरी टाण्डा के इतिहास का वह गौरवमयी दिन था जिसमें प्रातः ९ बजकर ११ मिनिट पर ॐ पूण्याहं–पूण्याहं व जय–जय गुरूदेव की जय–जय घोषों के साथ गुरूदेव को गादीनसीन किया गया। पश्चात गुरूदेव के समक्ष गहुँली का लाभ श्री शांतिलालजी गादिया द्वारा लिया गया।

श्री समीरमलजी तलेसरा, राजेन्द्रकुमारजी व अशोकजी श्रीश्रीमाल द्वारा मंदिर में मंगलमूर्ति भेंट की गई जिसमें श्री रतनलालजी डूंगरवाल, राजेन्द्रकुमारजी नखेत्रा, एवं प्रविणकुमार बोहरा द्वारा चढ़ावा लेकर स्थापित की गई।

गुरूदेव की प्रतिमा विराजमान करने के पश्चात प्रतिमाजी में आकर्षक परिवर्तन देखा गया। वातावरण में न थमनेवाली बोलियों की शुरूआत हुई जो बुजुर्गों के सत्तर वर्ष के रेकॉर्ड को तोड़ गयी। सर्वाधिक बोली बोलकर मन्दिरजी में गेट बनाने का लाभ जिनेन्द्रकुमारजी बांठिया ने लिया। वर्तमान आचार्य श्री को काम्बली वोहराने का लाभ श्री समीरमलजी पारसमलजी तलेसरा द्वारा लिया गया।

गुरू मन्दिर में भंडार, पाट द्वार एवं अलमारी, गुरूदेव एवं आचार्य के फोटो की भी बोलियां लगाई गई जिसे गुरूभक्त श्री अशोकजी डूंगरवाल, सौभाग्यमलजी लोढ़ा, शांतिलालजी कोठारी, मनोहरलालजी बाफना, पारसमलजी हरण, शैतानमलजी चौहान, श्रीमती चन्चलाबाई चण्डालिया, रतनलालजी नखेत्रा, शांतिलालजी बांठिया एवं अन्य गुरूभक्तों ने दिल खोलकर चढावों का लाभ लिया। क्रिया कारक श्री कांतिभाईजी इन्दौर से पधारे थे।

दोपहर में शांतिस्नात्र पूजा का कार्य सम्पन्न हुआ जिसमें आचार्य श्री की प्रेरणा से जीव दया में अच्छी राशि एकत्रित हुई। टाण्डा संगीत मंडल ने अभिषेक व पूजा में चार चाँद लगा दिये।

स्वामीवात्सल्य के पश्चात रात्रिकालिन समापन समारोह की शुरूआत हुई जिसमें आचार्य श्री ने कहा जैसे बुढ़े बाप को नौकर के भरोसे नहीं छोड़ा जाता वैसे ही

भगवान को पुजारी के भरोसे नहीं छोड़ा जाना चाहिए। प्रकट प्रभावी पूज्य गुरूदेव की तनमन से सेवा करके मन वांछित पाया जा सकता है।

टाण्डा के इतिहास में यह पहला धार्मिक कृत्य है जो निर्विघ्न–निर्विवाद एवं ऐतिहासिक चढ़ावे के साथ सम्पन्न हुआ। मोहनखेड़ा से राज राजेन्द्र तीर्थ दर्शन ट्रस्ट के पांच फाउन्डेशन मेम्बर बनाए गए व दो पट्ट भी लिखे गए।

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के सदस्य नवयुवकों ने पूरे कार्यक्रम में उत्साह बनाए रखा व कार्यक्रम की सफलतम इति श्री की।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अशोक श्रीश्रीमाल ने किया।

तालनपुर तीर्थ में श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विहार का भूमिपूजन, खनन एवं शिलान्यास

श्री तालनपुर तीर्थ – गुरूदेव श्रीमद्विजयराजेन्द्रसुरीश्वरजी के उपदेश से उद्धरित श्री तालनपुर तीर्थ में साहित्य मनीषी राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा से निर्मित होने जा रहे श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विहार का भूमिपूजन व खनन मुहूर्त श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप – (रतलाम) एवं शिलान्यास श्री सेवन्तीभाई मोरखिया (बम्बई) द्वारा माघ वदि १३ दि. १/२/९२ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री बाग में उपधान तप सम्पन्न करवाकर पधारे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री चैतन्यकुमारजी काश्यप ने की। श्री मनोहरलालजी पुराणिक द्वारा लिखित 'तालनपुर तीर्थ एक परिचय' की तीसरी आवृत्ति का विमोचन किया गया। (विस्तृत समाचार अगले अंक में)

खारवा कला में ज्ञान मन्दिर का भूमिपूजन

जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिजी के सदुपदेश से निर्माणधीन श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर का भूमिपूजन भूतपूर्वविधायक श्री आनन्दीलालजी छजलानी के कर–कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

मन्दिर में वर्क का निषेध

वर्क के उत्पादन में हिंसाचार को जानकर प्राप्त समाचारों के अनुसार पालीतणा के समवसरण मन्दिर, भीवंडी कल्याण एवं सांगली आदि नगरों में वर्क के उपयोग पर पाबन्दी लगा दी गई है।

पं. दलसुखभाई मालवणिया का सम्मान एवं अभिनन्दन ग्रंथ विमोचन

वाराणसी – जैन विद्या के बहुश्रुत विद्वान पं. दलसुखभाई मालवणिया के अभिनन्दन समारोह का आयोजन श्री दीपचंदजी भूरा अमृत महोत्सव समिति–कलकत्ता की ओर से किया गया श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित 'पं. दलसुखभाई मालवणिया अभिनन्दन ग्रंथ' का विमोचन प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैयालालजी सेठिया

ने किया। इस अवसर पर श्री दीपचंद भूरा परिवार की ओर से पन्डितजी को इकतीस हजार रुपये की सम्मान निधि प्रदान की गई।

संस्थान के निदेशक डॉ. सागरमल जैन ने विद्याश्रम परिवार की ओर से शाल ओढ़ाकर स्वागत किया।

पालसोड़ा में प्राचीन जिनमंदिर जिर्णोद्धार हेतु खनन मुहूर्त सम्पन्न

पालसोड़ा (नीमच) – आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा से यहाँ स्थित लगभग ८०० वर्ष के प्राचीन नेमिनाथ जैन मंदिर का जिर्णोद्धार हेतु खनन मुहूर्त पौष सुदि १५ रविवार दि. १९ जनवरी को श्री सागरमलजी सांभर – नीमच के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

मालवभूमि जय–जय गुरूदेव के नारों से गूंज उठी राष्ट्रसंत वर्तमानाचार्य श्रीमद् जयन्तसेनसूरिजी के गुरू सप्तमी अवसर पर श्री मोहनखेडा तीर्थ पदार्पण से गुरु भक्तों की अपूर्व भीड़

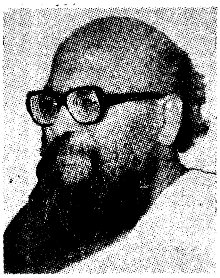

श्री मोहनखेडा तीर्थ – बीसवीं शताब्दि के महान् युग प्रवर्तक, कलिकाल कल्पतरू, प्रातःस्मरणीय, अभिधान राजेन्द्र कोष के निर्माता प. पूज्य श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी की जन्म व स्वर्गारोहण तिथि गुरूसप्तमी (पौष सुदि सप्तमी) को प्रतिवर्ष, पूज्य श्री के समाधिस्थल श्री मोहनखेडा तीर्थ पर हजारों गुरू भक्तों का दर्शनार्थ आगमन होता है, किन्तु इस वर्ष राष्ट्रसंत, वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा का पदार्पण होने से गुरूभक्तों के आगमन ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये। जो लोग पिछले २० या २५ वर्षों से इस अवसर पर यहाँ आते हैं वे कह रहे थे कि आज के जैसी गुरू भक्तों की भीड़ तो कभी भी नहीं देखी गयी। पिछले वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष गुरूसप्तमी के अवसर पर मंदिरजी में आवक का भी नया रेकार्ड बना। इस वर्ष आचार्यश्री के पदार्पण से दोपहर ११ बजे गुरू गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। आचार्यश्री के मुखार्विंद से गुरूचरित सुनकर हजारों गुरूभक्तों ने नतमस्तक होकर श्रद्धांजली अर्पित की। तीर्थ ट्रस्ट मंडल, अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के कार्यकर्ताओं एवं अन्य मंडलों का व्यवस्था में सराहनीय योगदान रहा। इस अवसर पर परिषद के तत्वावधान में श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विक्री स्टॉल भी लगा था।

राज राजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन निर्माण का ऐतिहासिक निर्णय

परमश्रद्धेय आचार्य श्री के गुरूसप्तमी अवसर पर मोहनखेड़ा तीर्थ पधारने की ऐतिहासिक उपलब्धि यह रही कि तीर्थ के पास श्री राज राजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन निर्माण का निर्णय लिया गया। इस हेतु राजगढ़ निवासी श्री मोतीलालजी हरण ने छः बीघा जमीन

भेंट देने की घोषणा की। प्रस्तावित राज राजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन में ऐतिहासिक कथानकों, विविध तीर्थों के चित्रण एवं जैन दर्शन संबंधी आलेखों व जैन धर्म से संबंधित विविध अप्राप्य शास्त्रों, उपकरणों आदि द्वारा जनता को ज्ञान प्राप्ति का प्रयत्न किया जायेगा। प्रस्तावित निर्णय जानकर उपस्थित गुरुभक्तों में हर्ष की लहर व्याप्त हो गयी। सभी ने गगनभेदी नारों से गुरुदेव की जय-जयकार की। विविध महानुभावों ने इस कार्य को शीघ्र आगे बढाने के लिए मुक्त हाथ से आर्थिक सहयोग की घोषणाएं की।

पुस्तक व दर्शन डायरी का विमोचन

गुरु सप्तमी के अवसर पर श्री राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'मनवा पल पल बीती जाए' पुस्तक का विमोचन श्री वाड़ीभाई गगलदास संघवी के करकमलों से एवं देव-गुरू दर्शन डायरी का विमोचन श्री चेतनजी कश्यप (रतलाम) द्वारा सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के व्याख्यानों को 'मनवा पल पल बीती जाए!' में संकलित किया गया है।

बम्बई के गुरूसप्तमी के अवसर पर विविध आयोजन

श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ थराद (बम्बई) व अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के तत्वावधान में गुरूसप्तमी विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनायी गयी। परिषद द्वारा दीपावली में पटाखे नहीं छोडनेवालों को पुरस्कृत किया गया। गुरू सप्तमी निमित्त १०८ प्रश्नों की प्रश्नावली आयोजित की गयी थी। आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी द्वारा लिखित साहित्य भी स्टॉल पर रखा था। अष्ट प्रकारी पूजा व रात्रि भावना रखी गयी थी। इस अवसरपर उस दिन ४०० आयंबिल श्री संघ द्वारा करवाये गये।

विविध नगरों में गुरू सप्तमी हर्षोल्लासपूर्वक मनायी गयी

(प्राप्त समाचारों के आधार पर)

बैंगलोर – प्रातः ८ बजे भव्य शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्गों से होती हुयी निकली, जिसके समापन पर एक आम सभा आयोजित कर विविध वक्ताओं द्वारा गुरूदेव के जीवन के विविध पहलुओं पर विश्वास प्रकाश डाला गया। दोपहर अष्टप्रकारी पूजा एवं रात्रि भावना रखी गयी।

मोहने – सिद्धचक्र महापूजन, अष्टप्रकारी पूजा एवं स्वामीवात्सल्य का लाभ शा. अमीचन्दजी हंजारीमलजी ने लिया।

भरतपुर – ध्वजारोहण, पुरस्कार वितरण एवं गुरु जीवनी पर प्रकाश डाला गया। 'श्री जयन्तसेन चेरीटेबल ट्रस्ट' की स्थापना कर प्रति वर्ष इस फंड में से गुरूसप्तमी के अवसर पर अनाथालय में फलवितरण, अस्पतालों में मरीजों को अल्पाहार आदि वितरीत किये जायेंगे।

जुना जोगापुरा – पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी, प्रियदर्शनाश्रीजी, सुदर्शनाश्रीजी की

निश्रा में दो दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत शोभायात्रा गुणानुवाद सभा, अष्टप्रकारी पूजा, एक सौ आठ दीपक की आरती आदि कार्यक्रमों के साथ मनायी गयी।

नीमच – प्रभातफेरी, प्रार्थना, गुरू गुणानुवाद, अष्ट प्रकारी पूजा आदि कार्यक्रमों के साथ अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् एवं त्रिस्तुतिक जैन संघ–नीमच के संयुक्त तत्त्वावधान में मनायी गयी।

मदुराई – साध्वीजी श्री मुक्तिश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में १०८ पार्श्वनाथ पूजन सह अष्टान्हिका जिनेन्द्र भक्ति एवं गुरू सप्तमी मनायी गयी।

नैलोर – गुरू सप्तमी निमित्त शोभायात्रा, भावना व अष्टप्रकारी पूजन पढाया गया।

सियाणा – प. पू. मुनिराज श्री जयानंदविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में गुरूसप्तमी विविध कार्यक्रमों के साथ मनायी गयी।

मोहनखेड़ातीर्थ (राजगढ़) से लक्ष्मणी तीर्थ छः 'रि' पालक संघ का आयोजन

राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. आदिठाणा की निश्रा में राजगढ़ निवासी श्री शैतानमलजी बाफना परिवार द्वारा मोहनखेड़ातीर्थ से लक्ष्मणीतीर्थ तक छः 'रि' पालक संघ का आयोजन किया गया। छः 'रि' पालक संघ राजगढ़ रिंगनोद, टाण्डा, बाग, कुक्षी नानपुर होता हुआ लक्ष्मणी तीर्थ पर सानन्द पहुंचा। संघ में साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका सहित लगभग ५०० पैदल यात्री थे। संघ का स्थान स्थान पर भाव भीना स्वागत किया गया, तथा संघवी श्री शैतानमलजी बाफना एवं उनके परिवार के सदस्यों का बहुमान किया गया। संघ के कुक्षी पहुंचने पर गुरूदेव श्री की प्रेरणा से तालनपुर तीर्थ पर विशाल स्तर की एक नवीन धर्मशाला बनाने की योजना को मूर्त रूप प्रदान किया गया। शीघ्र ही धर्मशाला का निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया जाएगा। संघ को मालापरिधान का कार्यक्रम लक्ष्मणतीर्थ पर भव्य रुप से सम्पन्न हुआ। लक्ष्मणतीर्थ पर गुरूदेव की शुभ प्रेरणा से एक विशाल भोजनशाला बनाने की योजना बनाई गई। जिसमें कई भाग्यशालियों ने भाग लिया।

लक्ष्मणीतीर्थ पर गुरूदेव श्री की प्रेरणा से एक भव्य प्रवेशद्वार बनाने की योजना बनाई गई जिसका लाभ टाण्डा निवासी श्री जिनेन्द्रकुमारजी बांठिया (फर्म–कस्तुरचंद लालचंद) ने लिया। लक्ष्मणीतीर्थ पर संघपति श्री शैतानमलजी बाफना का बहुमान राजगढ़ निवासी श्री फूलचंदजी अम्बोर ने किया। इस अवसर पर संघपति का स्वागत ट्रस्ट मंडल लक्ष्मणीतीर्थ एवं संघ के यात्रियों द्वारा भी किया गया। संघ के बाग नगर में प्रवेश पर आनन्दीलालजी जैन ने अगवानी की और नगर को स्वागतद्वारों, वन्दनवारों तथा पताकाओं द्वारा आकर्षक रूप से सजाया गया था।

बाग नगर में भव्य उपधान तपाराधना
३१ जनवरी को माला परिधान

राष्ट्र संत जैनाचार्य पू. श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज साहब की शुभ निश्रा में

बाग नगर में भव्य उपधान तप महाराधना आनन्दपूर्वक चल रही है। उपधान तप में १५८ आराधकों ने भाग लिया। जो विभिन्न नगरों से यहां पधारे हैं। प्रतिदिन व्याख्यान हो रहे हैं एवं भगवान की आंगी प्रतिदिन श्री गेंदालालजी (काकाजी) द्वारा रची जा रही है।

व्याख्यान में जैन तथा जैनेत्तर बन्धु भी भाग ले रहे हैं तथा धर्म की ज्ञान गंगा से जीवन में सद्प्रेरणा ग्रहण कर रहे हैं गुरूदेव श्री के अलावा मुनि श्री नित्यानंदविजयजी म. सा. द्वारा भी व्याख्यान दिया जा रहा है। गुरूदेव, श्री साधुमंडल एवं साध्वीमंडल के नगर प्रवेश पर बाग नगर को भव्य रुप से सजाया गया था।

उपधान तप का आयोजन संघवी श्री केशरीमलजी रूपचंदजी, चांदमलजी, राजमलजी पोसीत्रा परिवार की ओर से किया गया।

उपधान का समापन एवं माला परिधान का कार्यक्रम ३१ जनवरी को सम्पन्न होगा। (समापन विवरण अगले अंक में प्रकाशित होगा)

खट्टाली में वीशस्थानक तप उद्यापन

परम श्रद्धेय आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में मिति पौष वदि ११ को वीशस्थानक तप का उजमणा हुआ।

जावरा में राज राजेन्द्र जैन ज्ञान मंदिर का उद्घाटन

पूज्य आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा एवं प्रेरणा से जावरा में श्री राज राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर का शिलान्यास श्रावण सुदि १३ को स्थानीय निवासी श्री शांतिलालजी कावेड़िया के वरद् हस्तों से सम्पन्न होकर, उद्घाटन कार्तिक सुदि ११ को श्री चंद्रकान्तभाई वोरा (बम्बई) के द्वारा सम्पन्न हुआ। ज्ञान मन्दिर हेतु जमीन श्री शान्तिलालजी कावेड़िया ने भेंट दी।

खारवा, पिपलौदा, सरसी, बडावदा में ज्ञान मन्दिर निर्माण योजना

प. पू. आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के मालव प्रदेश में पदार्पण के बाद यहाँ के श्री संघो में अभूतपूर्व जागृति आयी है। श्री संघ की अनेकानेक योजनायें आचार्यश्री की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से साकार रूप ले रही है।

खारवा में श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर योजना साकार रूप ले रही है।

पिपलौदा में राजेन्द्रसूरि दादावाडी का निर्माण स्थानीय श्री संघ के सम्पूर्ण सहयोग से प्रारंभ हो गया है।

यादगिरी में विविध कार्यक्रम सम्पन्न व विहार

यादगिरी – आचार्य श्री अशोकरत्नसूरिजी, आचार्य श्री अभयरत्नसूरिजी आदि ठाणा

की निश्रा में पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक आराधना, गुरूदेव राजेन्द्रसूरिजी की जन्म स्वर्गारोहण तिथि (पोष सुदि ७), संघपूजन, स्वामीवात्सल्य, तपस्वीयों का सन्मान, अठारह अभिषेक, भक्तामर महापूजन, शान्तिस्नात्र, वर्धमान तप की ८५ वीं ओली का पारणा आदि कार्यक्रम उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुए। आचार्य श्री माघ वदि ५ को विहार कर साहपुर, शोरापुर, नालतवाडी, मुद्देबिहाल, पधारेंगे।

शताब्दि वर्ष निमित्त दशान्हिका महोत्सव

शिवगंज – प. पू. मुनिराजश्री जयानंदविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री अजितनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका/प्रतिष्ठा को एक सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में २ फरवरी से ११ फरवरी तक दशान्हिका महोत्सव के अंतर्गत शान्तिस्नात्र एवं विविध महापूजन आयोजित किये गये।

श्री सौधर्म वृहत्त्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के अधिवेशन में पारित प्रस्ताव व नये पदाधिकारियों की सूची

*(जावरा में श्री सौधर्मवृहत्त्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ का दो दिवसीय अधिवेशन ७ व ८ दिसम्बर १९९२ को सम्पन्न हुआ, जिसकी जानकारी शाश्वतधर्म के जनवरी ९२ अंक में पृष्ठ ३५ पर प्रकाशित की गयी थी। अधिवेशन में पारित प्रस्ताव व पदाधिकारियों की सूची संघ के महामंत्री कार्यालय से अब प्राप्त हुयी है, जिसे इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं। – **सम्पादक**)*

प्रस्ताव क्रमांक – १
''समाज के मध्यम वर्गीय लोगों के लिये आर्थिक योजना पर विचार''

यह अधिवेशन सर्वानुमति से निर्णय करता है कि पूर्व में गुरू राजेन्द्र जन कल्याण ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। उसे मजबूत बनाया जाये। जन कल्याण की भावना से स्थानीय स्तर पर योजनाएं कार्यान्वित की जाएं जो भी कार्य हो वह गुरू राजेन्द्र जन कल्याण ट्रस्ट के माध्यम से किये जायें। की गई कार्यवाही की सूचना – अखिल भारतीय ट्रस्ट को दी जावे। आवश्यक होने पर कल्याण ट्रस्ट से मांग होने पर रजिस्टर्ड ट्रस्ट को सहायता देकर पूर्ति की जावे। स्थानिय संघ अपने कोष से गुरू राजेन्द्र जन कल्याण ट्रस्ट को आर्थिक सहायता भेजे। जन कल्याण ट्रस्ट को अपनी वार्षिक रिपोर्ट अखिल भारतीय संघ को भेजने हेतु लिखा जाए!

प्रस्ताव क्रमांक – २
छोटे ग्राम व नगरों में जिन मंदिरों व पौषधशालाओं के निर्माण व जीर्णोद्धार की स्थाई योजना पर विचार –

सर्वानुमति से यह निर्णय किया जाता है कि नव निर्माण व जीर्णोद्धार के लिये गुरू राजेन्द्र फाउण्डेशन ट्रस्ट के माध्यम से जिन गांवों व नगरों को आवश्यकता हो

आवेदन करने पर इस कार्य के लिये व्यवस्थित रुप से ट्रस्ट अपनी जाँच के आधार पर रजिस्टर्ड ट्रस्टों को आर्थिक सहायता प्रदान करेगी। ट्रस्ट की आर्थिक रिपोर्ट अखिल भारतीय संघ को भेजें।

प्रस्ताव क्रमांक – ३
''देश में बढ़ रही हिंसा व अभक्ष्य भोजन के विरुद्ध अभियान पर विचार''

सर्वानुमति से यह निर्णय लिया जाता है कि अभक्ष्य भक्षण के विरुद्ध तथा अहिंसा का प्रचार करनेवाली संस्थाओं को सहयोग किया जाये। जो संस्थाएं इससे संबंधित अच्छा व सस्ता साहित्य प्रकाशित करती हो उनसे साहित्य मंगवाकर वितरित किया जावे व हिंसा के विरोध में जो संस्थाएं कार्य कर रही हों उन्हें पूरा सहयोग किया जाये।

प्रस्ताव क्रमांक – ४
समाज के तीर्थों की व्यवस्था पर विचार

सर्वानुमति से यह निर्णय किया जाता है कि समाज में जितने भी तीर्थ स्थान हैं उनमें किसी भी जैन तीर्थयात्री के साथ भेदभाव की व्यवस्था अनुचित है। ऐसे ट्रस्टों के ट्रस्टियों से यह अधिवेशन आग्रह करता है कि इस प्रवृत्ति को बंद कर दें, अन्यथा समाज उनसे प्रश्न कर सकेगा। यदि किसी तीर्थ पर किसी यात्री के साथ दुर्व्यवहार होता है तो संघ के अध्यक्ष एवं महामंत्री सभी संबंधित व्यवस्थापकों से स्पष्टिकरण लेकर शिकायतकर्ता को सन्तुष्ट करेंगे।

प्रस्ताव क्रमांक – ५
साधु साध्वी समुदाय के लिए सुखशाता समिति का गठन

सर्वानुमति से यह निर्णय किया गया कि प्रांतवार ऐसी समितियों का गठन किया जावे जो साधु साध्वी समुदाय के पास प्रतिवर्ष चातुर्मास में दर्शनार्थ पहुंचकर सुखशाता पृच्छा करे। इस हेतु श्री सोमतमलजी डोसी को राजस्थान प्रान्त, श्री भंवरलालजी छाजेड़ को मध्यप्रदेश प्रांत एवं श्री हरिभाई भणसाली को गुजरात प्रांत के लिये संयोजक नियुक्त किये जाते हैं। ये सभी संयोजक अपने साथ सहयोग हेतु ४–४ सदस्यों का मनोनयन करेंगे, इनके साथ समिति भ्रमण करेगी। संयोजक नामों का मनोनयन कर इसकी सूचना अ. भा. जैन त्रिस्तुतिक संघ के महामंत्री कार्यालय को एक माह में भेजेंगे।

प्रस्ताव क्रमांक – ६
संघ के प्रतिनिधियों के सम्मेलन के संबंध में

सर्वानुमति से यह निर्णय लिया गया कि संघ का अखिल भारतीय प्रतिनिधि सम्मेलन प्रतिवर्ष आचार्य भगवन्त के चातुर्मास में आयोजित किया जावे।

प्रस्ताव क्रमांक – ७

वर्तमानाचार्यदेव श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. को संघ के द्वारा राष्ट्रसंत की उपाधि से विभूषित किया जावे तथा प्रशस्तिपत्र प्रस्तुत किया जावे

प्रस्तावक – श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप, रतलाम, तथा श्री सुरेन्द्रकुमारजी लोढा, मंदसौर।
अनुमोदक – श्री भंवरलालजी छाजेड़, नीमच।

यह प्रस्ताव अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया। उपस्थित जन समुदाय ने हर्षध्वनि से सर्वानुमति से पारित किया कि वर्तमान आचार्यदेव साहित्य मनीषी तीर्थ प्रभावक आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. को राष्ट्रसंत की उपाधि से महामहिम उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयालजी शर्मा के कर कमलों द्वारा विभूषित किया जावे तथा प्रशस्ति पत्र भी अर्पित कराया जावे।

प्रस्ताव क्रमांक – ८

आगामी ३ वर्षों के लिये संघ के अध्यक्ष के निर्वाचन के संबंध में

अध्यक्ष पद के लिये श्री गगलदास हालचंद संघवी के नाम का प्रस्ताव श्री सोमतमलजी डोसी ने किया। अनुमोदन श्री शांतिलालजी राजमलजी उज्जैन ने किया। और कोई नाम नहीं आने से सर्वानुमति से जैन रत्न गगलदास हालचंदजी जैन संघवी अध्यक्ष पद पर निर्वाचित घोषित किये जाते हैं। श्री गगलदासभाई द्वारा अपने पदाधिकारियों की घोषणा की गई।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष –	श्री चैतन्यकुमारजी कश्यप, रतलाम
कोषाध्यक्ष –	श्री शांतिलालजी राजमलजी जैन, उज्जैन
महामंत्री –	श्री भंवरलालजी छाजेड़, नीमच
गुजरात के उपाध्यक्ष –	श्री हरिभाई भणसाली, अहमदाबाद
राजस्थान के उपाध्यक्ष –	श्री सोमतमलजी डोसी, भीनमाल
म. प्र. के उपाध्यक्ष –	श्री शांतिलालजी दसेड़ा, जावरा
महाराष्ट्र के उपाध्यक्ष –	श्री चंद्रकांत भाई वोरा, बम्बई
गुजरात के मंत्री –	श्री हिम्मतभाई वोरा, अहमदाबाद

मध्य प्रदेश से केन्द्रिय कार्यकारिणी समिति के सदस्य

१) श्री केशरचंद्रजी तातेड़, राजगढ़ जि. धार, २) श्री कनकमलजी लुणावत, रिंगनोद (राजगढ़) जि. धार, ३) श्री कुन्दनमलजी काकड़ीवाला – आलीराजपुर, जि. झाबुआ, ४) श्री सुजानमलजी जैन – राणापुर, जि. झाबुआ, ५) श्री प्रदीप कुमारजी वोरा – मेघनगर, जि. झाबुआ, ६) श्री सुरेशचंदजी लुणावत – कुशलगढ, जि. झाबुआ, ७) श्री कन्हैयालालजी पटेल सा. – जावरा, जि. रतलाम, ८) श्री सौभागमलजी संघवी – मन्दसौर, ९) श्री राजमलजी नागोरी – नीमच छावनी, १०) श्री सागरमलजी सांभर – नीमच सिटी, ११) श्री हिम्मतमलजी पटवारी – निम्बाहेड़ा, १२) श्री प्रतापजी

मेहता – उज्जैन, १३) श्री बापुलालजी मेहता – खाचरोद, जि. उज्जैन, १४) श्री बापुलालजी तलेसरा – बड़नगर, जि. उज्जैन, १५) श्री भंवरलालजी बांठिया – महिद्पुर, जि. उज्जैन, १६) श्री मोहनलालजी जुहारमलजी – पिपलोदा, जि. रतलाम, १७) श्री मदनलालजी सुराणा – कचनारा, जि. मंदसौर, १८) श्री भुपेन्द्रकुमारजी, डुंगरवाल – नयागांव, जि. मन्दसौर, १९) श्री हिम्मतमलजी पारेख एण्ड कं. – तिजोरी गली, इन्दौर, २०) श्री पारसमलजी चोपडा – रिंगनोद, जि. रतलाम, २१) श्री ज्ञानचंदजी पंवार – जोबट, जि. धार, २२) श्री माणकलालजी बोहरा – नागदा जंक्शन, जि. उज्जैन, २३) श्री भेरूलालजी जैन – खरसोद कला, जि. उज्जैन, २४) श्री माणकलालजी सकलेचा – बड़ावदा, रतलाम, २५) श्री रमेशचंद्रजी वोरा – बालोदा, जि. उज्जैन, २६) श्री बसंतीलालजी तलेसरा – महिद्पुररोड़, जि. उज्जैन, २७) श्री शांतिलालजी गिरीया, भाटचलाना, जि. उज्जैन, २८) श्री कालूरामजी माणकचंदजी – खट्टाली, २९) श्री राजमलजी डांगी – सरसी, जि. रतलाम

राजस्थान प्रांत के सदस्य

१) श्री चम्पालालजी मनोहरलालजी सुराणा, २) श्री मांगीलालजी धन्नाजी, डुमरिया, ३) श्री टीलाजी गेलाजी – भीनमाल, ४) श्री सुमेरचंदजी नाहर – भीनमाल, ५) श्री मेघराजजी जुगराजजी – सुराणा, ६) श्री मिट्ठालालजी मनोहरलालजी, ७) श्री गेलाजी सवाजी – जिवाणा, ८) श्री जावन्तराजजी – पांथेड़ी

जिन ग्रामों व नगरों को प्रतिनिधित्व नहीं मिला है, तथा गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत आदि प्रान्तों के लिए मनोनयन पूरक सूचियों द्वारा किया जाएगा।

शब्दसागर इनामी स्पर्धा ५ के परिणाम एवं उत्तर

परिणाम – प्राप्त उत्तरों में से एक प्रतियोगी कु. संगीता जे. संघवी (आहोर) के सही उत्तर पाए गए।

शब्दसागर इनामी स्पर्धा ५ – उत्तर

	व	डा	ली				डा	कु	
पा	ट	ल		प्रा	सु	क		ल	ब्धि
र्व			नि	य	म		लो	क	
	आ	न	न्द		ति	त्थ	य	र	
	द	य	नि	य					उ
चा	र		य	क्ष	ना	य	क		त्पा
रू		र		रा	णा		थ	रा	द
	र	त्न	रा	ज		पा	नी		
ब्रा	स	पू	जा		न	ट		नि	न्दा
		री		च	न्द	न	बा	ला	

स्वाध्यायी प्रश्नावली में भाग लेकर इनाम पायें

आचार्यदेवेश श्रीमद्‌विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तिनी पूज्य साध्वीजीश्री महाप्रभाश्रीजी की प्रेरणा से पू० साध्वीजीश्री डा. प्रियदर्शनाश्रीजी एवं डा. सुदर्शनाश्रीजी द्वारा संपादित 'रा' अक्षर पर चिन्तनात्मक स्वाध्याय प्रश्नावली प्रकाशित की गयी है। विजेताओं को 5100/- इकावन सौ रुपये के पुरस्कार प्रदान किये जावेंगे। उत्तर 15 एप्रिल 1992 तक स्वीकार्य होंगे। प्रश्नावली-पत्र मंगवाने एवं अन्य जानकारी हेतु निम्नांकित पते पर सम्पर्क करावें —

'स्वाध्याय प्रश्नावली पत्र'

C/o श्री कानराजजी मेहता / सूरजपोल / जालोर (राजस्थान) - 343001

एक दृष्टि : समाचार पत्रों पर

- **बम्बई की विख्यात पारसी डेरी से खरीदी गयी महंगी चॉकलेट में से जीवित जंतु निकला। – (गुजरात समाचार ८–१–९२)**

विख्यात दूकान या उंची कीमत की चीज शुद्ध आती है ऐसी विचारधारा वाले जरा सोचें कि यह धारणा या मान्यता कितनी गलत है। प्रस्तुत उपरोक्त जानकारी के साथ समाचार पत्र में जंतु का फोटो भी छपा है। बाहर की तैयार चीज लाकर खानेवालों के लिये विचारणीय प्रश्न है।

- **साडी रंगाई व छपाई कारखानों ने मथुरा की पवित्र यमुना नदी में भारी तवाही मचा दी है। कारखानों के प्रदुषित पानी से यमुना की लाखों मछलियाँ एकाएक मर गई। – (जनसत्ता ११–१–९२)**

औद्योगिक विकास के नाम पर विनाश का तो यह एक मात्र छोटा सा उदाहरण है। कारखानेदारों द्वारा छोडे जानेवाले रसायनयुक्त विषैले पानी ने कितनी ही भूमि बंजर की है व पवित्र नदियों को दूषित किया है। उद्योग पर्यावरण को बिगाडने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

'चकोरदृष्टि'

अध्यक्ष की ओर से

आदरणीय बन्धुओं,

सादर जयजिनेन्द्र !

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद अपने प्रेरणादाता परमपूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के आशीर्वादों से सतत् अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कदम–कदम अग्रशील है। परिषद द्वारा निर्णय किया गया है कि प्रत्येक शाखा के अंतर्गत स्वयंसेवक दल का गठन किया जाए। हर परिषद में कम से कम दस स्वयं सेवकों का समूह ठोस, सक्रिय तथा निष्ठावान कार्यकर्ताओं का हो। यह स्वयंसेवक दल समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में अपना सहयोग देगा। किसी भी संगठन के लिए सेवा को मूलमंत्र मानना आवश्यक है। परिषद भी सेवा को साकार करने के लिए कई बार कसौटियों पर खरी उतर चुकी है। हमारा मैदानी संगठन सेवा के आधार पर ही सर्वव्यापकता प्राप्त कर सका है, अतएव प्रत्येक परिषद शाखा से अनुरोध है कि वह अपने यहां स्वयंसेवक दल का गठन कर, उनकी सूची राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढा, धानमण्डी, मन्दसौर की ओर भेजें। व इन कार्यकर्ताओं के लिए वर्ष में तीन बार राजगढ परिषद भवन पर शिबिर लगाए जाने हैं। आशा है हमारी शाखाएं यह कार्य शीघ्र करेंगी।

शाश्वत धर्म हमारे समाज का ऐसा पत्र है जो न केवल पठनीय सामग्री की दृष्टि से कीर्तिमान स्थापित कर रहा है बल्कि समाज व परिषद की गतिविधियों की सूचना लेकर भी प्रतिमाह आप तक पहुंचता है। हर परिषद साथी का कर्तव्य है कि परिषद द्वारा संचालित इस पत्र को समाज के घर–घर पहुंचाने का प्रयत्न करें। आशा है पुराने ग्राहकों का नवीनीकरण तथा नए ग्राहकों को बनाने का कार्य हम सभी अभियान के रूप में छेड़ देंगे। शाश्वत धर्म संबंधी ग्राहक राशि व सूची श्री जे. के. संघवी सम्पादक शाश्वत धर्म, जामली नाका ठाणे को भेजने का अनुग्रह करें।

आप सभी के सहयोग से परिषद द्वारा प्रकाशित 'श्रीमद् जयन्तसेनसूरि अभिनन्दन ग्रंथ' का विमोचन समारोह उपराष्ट्रपतिजी महामहिम श्री शंकरदयालजी शर्मा के करकमलों से जावरा में विशाल समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। अतः जावरा श्री संघ, शाखा परिषद जावरा, संयोजक श्री चेतनजी काश्यप एवं ग्रंथ के सम्पादक मंडल श्री सुरेन्द्रलोढ़ा, श्री जे. के. संघवी, श्री कीर्तिभाई वोरा, श्रीमती डॉ. कोकिला भारतीय, श्री भँवरलालजी छाजेड़, श्री सौभाग्यमलजी सेठिया एवं श्री अचलचन्दजी जैन एवं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से कार्यक्रम को सफल बनाने वाले सभी साथियों का हार्दिक आभार मानता हूँ।

आशा है हमारी परिषद शाखाएँ परिषद के उद्देश्यों को समुज्ववलित करने की दिशा में अग्रसर होंगी।

सेवंतीभाई मणीलाल मोरखिया

राष्ट्रीय अध्यक्ष अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

महामंत्री का प्रतिवेदन

हर परिषद् शाखा को अपने यहां शाकाहार प्रकोष्ठ का गठन करना है तथा शाकाहार के प्रचार प्रसार में जुटना है, जो कि आज की मांग है। मध्य प्रदेश प्रान्तीय सम्मेलन म.प्र. इकाई द्वारा तालनपुर तीर्थ पर १–२–१९९२ को केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सेवंतीभाई मोरखिया की अध्यक्षता में आमंत्रित किया गया है। जिसमें अधिकाधिक प्रतिनिधि महानुभावों को पधारना है। परिषद की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक भी शीघ्र ही होने जा रही है।

परिषद् की राष्ट्रीय कार्यसमिति (२)

गत अंक में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की प्रकाशित राष्ट्रीय कार्य समिति में निम्न नाम भी सम्मिलित हैं :–

- श्री शांतिलालजी सुराना, मधुकर जनरल स्टोर्स – लक्ष्मीबाई मार्ग, जावरा, (जिला रतलाम)
- श्री राजेन्द्र कुमारजी इन्दरमलजी छजलानी – पेटलावद, जि. झाबुआ (मध्यप्रदेश)
- श्री मणीलालजी पुराणीक – महात्मागांधी मार्ग, कुक्षी, जि. धार, (म. प्र.)
- श्री जयंतीभाई वोरा – नवसारी (गुजरात – ३९६४४५)
- श्री वाघजीभाई गगलदास वोरा – अहमदाबाद, गुजरात
- परिख श्री रसीकलाल हरिलालजी चौकसी – थराद
- संघवी श्री प्रवीणचंदजी चमनलालजी जैन – थराद
- वोरा श्री अमृतलालजी पोपटलालजी नारोलीवाला – थराद
- धरू श्री प्रवीणकुमारजी हरिलालजी जैन – पीलुड़ा
- संघवी श्री प्रवीणचंदजी पूनमचंदजी जैन – आणंद, गुजरात
- वोरा श्री बाबुलालजी लल्लुभाईजी जैन – नडियाद, गुजरात
- पारिख श्री सतीशभाई बादरमलजी – गांधीनगर – गुजरात
- संघवी श्री अरविंदभाई गगलदासजी – नवसारी, गुजरात
- वोरा श्री महासुखलालजी चुन्नीलालभाई – मेहसाना, गुजरात
- देसाई श्री महेन्द्रजी भोगीलालजी – पालनपुर, गुजरात
- मोरखिया श्री कीर्तिलालजी गगलदासजी – लाखणी, गुजरात
- श्री बाबुलालजी भीमराजजी छाजेड़ नेनावावाला – बम्बई–४
- श्री पोपटलालजी पूनमचंदजी सवाणी – जैन देरासर पासे, धानेरा
- मोरखिया श्री भिखालालजी जयसिंहजी भाई – लवाणा

कार्यसमिति में शीघ्र ही रिक्त स्थानों की पूर्ति हेतु और नामों का समावेश किया जाएगा।

कई स्थानों पर परिषद शाखाएं गठित

☆ मन्दसौर में साध्वीश्री दर्शितकलाश्रीजी आदि ठाणा तीन के सानिध्य में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की शाखा स्थापित की गई जिसकी तीस सदस्या बनीं। श्रीमती निर्मलाबहन लोढा (अध्यक्ष), श्रीमती भारतीबहन पोरवाल (उपाध्यक्षा), श्रीमती इंद्राबहन संघवी (कोषाध्यक्षा), श्रीमती बदामबहन चपरोत (प्रधानमंत्री), श्रीमती आभा

दूगड़ (प्रचारमंत्री), तथा श्रीमती सरेकुंवर दोशी (संगठन मंत्री), निर्वाचित हुई।

☆ **निम्बाहेडा :** राजस्थान : में महिला परिषद का गठन, केन्द्रीय उपाध्यक्षा – श्रीमती डॉ. कोकिलाजी भारती, श्रीमती पारसजी मारवाडी, श्रीमती ताराजी सुराना की प्रेरणा से परिषद पदाधिकारियों के दौरे के समय, किया गया। श्रीमती कमलाबहन विराणी (अध्यक्षा), श्रीमती शांताबाई बडारा (उपाध्यक्षा), श्रीमती सुरजबाई नायक (कोषाध्यक्षा) बनाई गयी।

इसी दौर में धुंधड़का में महिला परिषद का गठन किया गया जिसमें श्रीमती राजकुमारी जैन (अध्यक्षा), श्रीमती चंद्रकांता जैन (उपाध्यक्षा), श्रीमती साधनाबहन संघवी (मंत्री), श्रीमती अनिताबहन जैन (उपमंत्री), श्रीमती वल्लभबहन जैन (कोषाध्यक्ष) मनोनीत की गई।

☆ दौरे के अन्तर्गत ही रिंगनोद (जिला–रतलाम) में महिला परिषद की स्थापना की गई जिसमें श्रीमती मनोरमा बहन (अध्यक्षा), श्रीमती बेबीबहन (उपाध्यक्षा), श्रीमती आजाद कुवर बहन (मंत्री), श्रीमती मोहन बहन (कोषाध्यक्षा), श्रीमती विमला बहन (प्रचारमंत्री) तथा श्रीमती ललिता बहन (केन्द्रिय प्रतिनिधि) बनाई गई।

☆ **बाग (जिला–धार)** बाल परिषद तथा बालिका परिषद की स्थापना की गई है। श्री आशीष कुमार जैन बाल परिषद के तथा सुश्री शीतलकुमारी जैन बालिका परिषद के क्रमशः अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

☆ **अलीराजपुर (जिला–झाबुआ)** बाल परिषद के चुनाव सम्पन्न हुए। मनीष कुमार जैन (अध्यक्ष) निर्वाचित किए गए।

☆ **खाचरौकला (जिला–उज्जैन)** नवयुवक परिषद की स्थापना की गई। श्री अनोखीलालभंडारी को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

बम्बई शाखा परिषद का गठन

बम्बई (प्रार्थना समाज) यहां दो सौ नवयुवकों की विशाल बैठक में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक की शाखा का गठन किया गया जिसमें श्री रमेशजी गांधी (अध्यक्ष), श्री बाघजीभाई राजमलभाई संघवी उपाध्यक्ष, श्री अरविंदभाई कीर्तिलाल वोरा (मंत्री), श्री बाघजी भाई कालिदास वोरा (उपमंत्री), श्री कीर्तिलाल हीरालाल मोदी (कोषाध्यक्ष), श्री रमणीकलाल भोगीलाल (प्रचारमंत्री) तथा श्री चीनुभाई वाडीलाल देसाई (शिक्षामंत्री) मनोनीत किए गए। श्री अरविंद छोटालाल देसाई, श्री प्रकाश कीर्तिलाल देसाई, श्री जिनेन्द्र वाड़ीलाल बोहेरा, श्री अरविंद जयंतिलाल परिख कार्यसमिति में लिए गए। श्री सेवंतीभाई मोरखिया, श्री वाड़ीलाल संघवी, श्री रसीकलाल भूदरमल संघवी तथा श्री चंदूलाल छोटालाल केन्द्रीय प्रतिनिधि निर्वाचित हुए।

अनुकरणीय सेवा

झाबुआ : पर्युषण के दो दिन बाद झाबुआ गुजरात सीमा पर जो झाबुआ से पन्द्रह किलोमीटर दूर है, कटनी के लिए भेजे जा रहे है गाय, बछड़े, बैल आदि २५७ पशु बारह ट्रकों में रोके गए। पुलिस का प्रकरण बनाया गया। झाबुआ में गौशाला नहीं होने से झाबुआ परिषद शाखा के कार्यकर्ताओं ने दस दिन तक पूर्ण रूप से घाँस दवाई आदि की व्यवस्था कर सेवा का अनूठा परिचय दिया। अदालत से सभी पशुओं को जीव दया मण्डल (जैन समाज) झाबुआ के नाम से पशुओं को कब्जे में लिया। दो सौ पशु पचास प्रतिशत डिपाजिट रखकर पशु पालनेवाले लोगों को दे दिए गए। जो अदालत के फैसले तक अपने पास इन्हें सुरक्षित रखेंगे। ५१ पशु परिषद की पारा शाखा को बिना डिपाजिट रखे गए। सभी पशुओं का बीमा करवाया गया। डिपाजिट रकम आई १३ हजार ४ सौ रूपये जिसे बैंक में जमा करवा दिया गया। इस तरह झाबुआ परिषद ने एक उच्चस्तरीय सेवा कार्य किया।

– मनोहर भण्डारी

☆ **तालनपुरतीर्थ (जिला–धार) के दर्शनार्थ अवश्य पधारिये।** ☆

शोक श्रद्धांजली

- **चापड़ा (म. प्र)** – निवासी श्री शांतिलालजी दुगड़ का स्वर्गवास १२–१–९२ को हो गया। पूर्व घोषणानुसार मरणोपरान्त स्वर्गस्थ के नेत्र परिवार द्वारा दान किये गए।

- **मेघनगर** – अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय की मातुश्री श्रीमती धापुबाई वजेचंदजी भंडारी का दुःखद निधन ७५ वर्ष की उम्र में हृदयगति रूकने से हो गया।

  आपका जीवन धार्मिक रुचियों और संस्कारों से सरोकार था। सामाजिक कार्यों में आपकी अनन्य रूचि थी। विधवा महिलाओं में सामाजिक धार्मिक चेतना के लिए आपने जीवन पर्यन्त कार्य किया। स्थानीय जिनमन्दिर के लिए आपने भूदान किया।

  स्वर्गस्थ की स्मृति में परिवारजनों द्वारा धर्मादा तथा शासकीय अस्पताल में एक कमरा निर्माण करवाने की घोषणा की गई।

- **चूरा** – शा. हूकमीचन्दजी जवानमलजी भन्डारी का हृदयगति रूक जाने से दुःखद निधन हो गया। आप अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के कर्मठ कार्यकर्ता थे।

समाचार सार

● **अहमदाबाद** – आहोर प्रवासी संघ का अहमदाबाद में गठन किया जाकर, उसका प्रथम सम्मेलन कोबा तीर्थ में सम्पन्न हुआ। पदाधिकारियों में अध्यक्ष – श्री घेवरचंदजी तलावत; उपाध्यक्ष – श्री गणेशमलजी चौपडा; मंत्री – श्री चम्पालालजी जीवावत; कोषाध्यक्ष श्री कांतिलालजी जैन, कार्यकारिणी के सदस्य श्री अमृतलालजी, श्री बाबुलालजी, श्री इन्द्रमलजी, श्री महेन्द्रकुमारजी श्री भबुतमलजी, श्री कान्तिलालजी चुने गये।

● **उदयपुर** – श्री छन्दराज पारदर्शी के सुपुत्र श्री जगदीप का विवाह जालोर निवासी श्री उगमसी मोदी की पौत्री बबीता के साथ बिना किसी दहेज रस्म के आदर्शविवाह के रूप में सम्पन्न हुआ।

● **तेनाली** – पू. आ. श्री वारिषेणसूरिजी आदि ठाणा की निश्रा में वासुपूज्य जिनालेय की ५० वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण निमित्ते विविध महापूजन सह अष्टान्हिका महोत्सव मनाया गया।

● **गुन्टुर** – आचार्य श्री वारिषेण सूरिजी की निश्रा में १८ अभिषेक ४ पुदगल वोसिराने की विधी आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

● **हुंकारतीर्थ** – चैत्रमास की ओली आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी की निश्रा में सम्पन्न होगी।

● **चापड़ा (म. प्र.)** – स्व. श्रीपाल दुग्गड़ की स्मृति में निःशुल्क नैत्रशिविर का आयोजन दुग्गड़ केमिस्ट के द्वारा किया गया जिसमें लोगों की आंखों की जांच कर ५१ लोगों के आपरेशन किए गए।

● **वाराणसी** – श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के निदेशक डॉ. सागरमलजी जैन के निर्देशन में जैन विद्या से सम्बद्ध विषयों पर शोध कार्य हेतू वर्ष १९९१ में शोध कर्ताओं को पी. एच. डी. की उपाधि प्रदान की गई।

● **कर्नुल** – साध्वीजी श्री सुलोचनाश्रीजी की निश्रा में श्री शांतिनाथजी जैन धार्मिक पाठशाला का वार्षिक पारितोषिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

● **पेदअमीरम** – मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित उपधान तप का समापन एवं मालारोपण २९ जनवरी को सम्पन्न हुआ।

● **जयपुर** – श्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष ग्यारह हजार रुपये का पुरस्कार आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान जैन धर्म सम्बन्धी दर्शन, इतिहास, कला, संस्कृति साहित्य को दिया जाएगा।

● **इन्दौर** – कुन्द–कुन्द ज्ञानपीठ के तत्वावधान में जैन विद्या संगोष्ठी एवं अर्हत वचन पुरस्कार वितरण समारोह १२–१३ जनवरी को सम्पन्न हुआ।

● **मैसूर** – पन्यास श्री पदमविजयजी की

निश्रा में आयोजित उपधानतप, मालारोपण २६ जनवरी को सम्पन्न हुआ।

- **नैल्लुर** – आचार्य श्री नयप्रभसूरिजी आदि ठाणा की निश्रा में १८ अभिषेक एवं शांतिस्नात्र सह अष्टान्हिका महोत्सव मनाया गया।

- **काकटुर (नैल्लुर)** – आचार्य श्री नयप्रभसूरिजी आदि ठाणा की निश्रा में शा. शंकरलालजी आयदानजी परिवार द्वारा आयोजित उपधान तप मालारोपण २९ जनवरी को अष्टान्हिका महोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ।

- **पालीताणा** – थाना निवासी श्रीमती बदामीबाई तेजराजजी बोराणा (बिजोवा) द्वारा राजेन्द्र भवन में आचार्य श्री अरिहंतसिद्धसूरिजी की निश्रा में नव्वाणु यात्रा आयोजित की गई। मालारोपण १६ जनवरी को सम्पन्न किया जाकर पूर्व संध्या को आयोजक परिवार का बहुमान किया गया।

- **हुबली** – राजस्थान यूथ फेडरेशन द्वारा जरूरत मंद अपाहिजों को जयपुर कृत्रिम पैर वितरित किये गए।

- **विजयवाड़ा** – भारत विकास परिषद शाखा विजयवाड़ा की तरफ से प्रतिदिन गरीबों को निःशुल्क दवाई का वितरण किया जाता है।

  श्री राजेन्द्र जैन सेवा संघ द्वारा जनवरी में विशाल नैत्रशिबिर आयोजित किया गया।

- **दिल्ली** – जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म. सा. की ११४ वी जन्म जयंती प्रवर्तक श्री रमेशमुनिजी, कमलेशमुनिजी, आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न हुई।

- **दिल्ली** – श्री कमलेशमुनिजी के द्वारा जनजागरण अभियान के अन्तर्गत अहिंसा आदि गतिविधियों के संचालन हेतु श्री मुन्नीलालजी जैन चूड़ीवाले ने अपना तीन मंजिला भवन संस्था को भेंट किया।

- **पालितणा** – स्व. श्री रजनीकान्त देवड़ी परिवार की ओर से ९, १० व ११ जनवरी को गिरिराज पर प्रत्येक प्रतिमाजी को अष्ट प्रकारी पूजा, वरघोड़ा आदि कार्यक्रम आयोजित किया गया।

- **अहमदाबाद** – उत्तर अमेरिका से अंग्रेजी में प्रकाशित 'जैन डायजेस्ट' त्रिमासिक के भारत के संवाददाता के रूप में श्री डॉ. शेखरचंदजी जैन को नियुक्त किया गया है। समाचार लेख आदि इस पते पर भेजे जा सकते हैं – डॉ. शेखरचंद जैन, ६ उमिया देवी सोसायटी नं. २, अमराईवाडी, अहमदाबाद : ३८० ०२६

- **कलकत्ता** – श्री स्थानकवासी जैन सभा द्वारा २० दिसम्बर को जैनभवन में 'जैन साधना' पर एक विद्वद संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें पं. दलसुखभाई मालवणिया, प्रो. सागरमलजी जैन, प्रो. ए. के. बॅनर्जी आदि अनेक विद्वानों ने भाग लिया।

- **औरंगाबाद** – अ. भा. महाराष्ट्रीय जैन संघटना द्वारा संस्था की विशिष्ट शाखाओं व कार्यकर्ताओं के प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार वितरण समारोह २९ दिसम्बर को आयोजित किया गया।

પ્રેરક વાણી પૂજ્યવરની...

(પૂ. આ. શ્રી જયંતસેન સૂરજી મ. ના. પ્રવચનથી.
અવતરણકાર-મુનિ શ્રી પ્રશાંત રત્નવિજયાજી

—જ્ઞાન એ શબ્દોની સપાટી પર જીવે છે, જ્યારે આચરણ (ચારિત્ર) એ અનુભૂતીના અંતરાલમાં વસે છે. ક્યારેક માત્ર સપાટીપર સ્પર્શ કરવાથી અંતર ચુકી જવાય છે. જ્ઞાન પ્રાપ્ત તો થાય છે. પણ ધ્યાન ચૂકાઈ જાય છે.

—માણસ સફલતાની ક્ષણોમાં સ્વજનો, પરિવારજનો, મિત્રો, નિ:સ્વાર્થમદદગારો, શુભેચ્છકો અને સહયોગ દાતાઓને એટલા માટે ભૂલી જતો હોય છે કે તે સમયે "વ્યાધિરળ્યોને વૈદ્ય વૈરી" જેવી તેની સ્વાર્થ સીમિત દ્રષ્ટિ હોય છે.

—જેમ જેમ ભૌતિક સાધનો દ્વારા સુખ અને શાન્તિની ઝંખના કરીએ તેમતેમ મુંઝવણો, ચિંતાઓ, વ્યાથાઓ અને મુશ્કેલીઓનો બોજ વધતો જાય છે.

—રોગગ્રસ્ત કે બિનતંદુરસ્ત હોજરીને કદી સાચી અને શુદ્ધ ભૂખ લાગતી નથી પછી તે ગમે તેવો ઉત્તમ કે ઉમદા ખોરાક ખાય તો પણ તેની અસલ સ્વાદ તે માણી કે જાની શકતો નથી. મનનું પણ કાંઈક આવું જ છે. વિકૃતિઓ, અશુદ્ધિઓ કે કુત્સિત ભાવનાઓનો શિકાર બનેલું મન પણ રોગીષ્ટ બને છે. તેનું સત્વ અને તેજ ગુમાવી બેસે છે. પછી આત્મહિતકર માર્ગ ને તે જાણી પિછાણી શકતું નથી.

—જીવનને સાદાઈ અને સંતોષના તાણાવાણા વડે ગુંથી લેવાથી સુખ શોધતું આવે છે. સ્નેહ-સમતા અને સેવા નો ત્રિવેણી સંગમ જીવનને સાચા આનંદમાં ગરકાવ કરી દે છે.

—જિન શાસન એ ભયંકર ભવઅટવી માં માર્ગ ભૂલેલા મનુષ્યોને પાપમય અંધકારમાંથી બહારલાવી મોક્ષમાર્ગે વાલનાર પાવન પુન્યક્ષેત્ર છે.

—અસત્યએ વાણીનો મળ છે.
દગોપ્રપંચ એ કાયાનો મળ છે.
નિન્દાએ મનનો મળ છે.

—અપરાધને દ્વિગુણકર્તા કે વજ્રલેપ સમાન નિકાચીતકર્તા જો કોઈ તત્વ હોય તો તે માત્ર નાસ્તિકતા છે. નાસ્તિકતા નો જન્મ મિથ્યાત્વ માંથી થાય છે, જૈન શાસન માં મિથ્યાત્વ ને જ નાસ્તિકતા ગણવામાં આવી છે.

—ઈચ્છિત વસ્તુ તરત નમલે ત્યારે જે દુ:ખ થાય પરિણામે ઈસ્ટ સંયોગની ઈચ્છાનું તીવ્રતમ થવું અથવા મલેલું સુખ પૂરૂં ન થાય ત્યાંસુધી અધિકાધિક ઈચ્છા થવી તેને તૃષ્ણા કહેવામાં આવે છે.

—પુણ્ય-પાપ, પરલોક કે મોક્ષ પ્રત્યે અરૂચિ ધરાવવાથી તે તત્વો નાબૂદ થઈ જનાર નથી. પુણ્ય અને પાપની વાતો સામાજીક ઉન્નતિના આડે આવનાર છે એમ બોલી જતાં પહેલાં પુણ્ય અને પાપ, સ્વર્ગ અને નરક જેવાં તત્વો જો વિદ્યમાન ન હોત તો પરાર્થ કે પરોપકાર ગુણની શું આવશ્યકતા રહે છે એ વિચારવાની તાતી જરૂર જણાય છે.

—મિથ્યાત્વ એ બુદ્ધિનો વિપર્યાસ છે, આત્માની વિચારસરણીને વાસ્તવિકતાથી વિપરીત કરનાર છે. સર્વ દોષોના રાજાસમાન છે. આત્માની ઉન્નતિનો ભયાનક માં ભયાનક શત્રુ છે.

—જ્યાં સુધી પોતે સ્વયં ઉત્તમ ધર્માનુષ્ઠાનો આચરવાનો પ્રયાસ નથી કરતા ત્યાં સુધી તેઓને અનુષ્ઠાનો આચરવાની ટીકા કે નિંદા કરવાનો અધિકાર ન્યાયની દ્રષ્ટિએ પણ પ્રારત થઈ શકતો નથી.

—જેમ આંખો વિનાના અંધને દર્પણ નકામું છે. તેમ સર્વથા મન શુદ્ધિ વિનાના તપસ્વીનું ધ્યાન પર ખરેખર નકામું જ છે.

—પાંડિત્યથી પરમાત્માની ચર્ચા થઈ શકે છે. પરમાત્માની વાત પણ કરી શકાય છે. પરન્તુ પરમાત્માના સાક્ષાત્ અનુભવ માટે પાંડિત્યનો પાંગલું છે. પરમાત્મ પ્રતીતિના અભાવે એ માત્ર બાહ્યસ્તરે અટકી જાય છે. જ્યારે ધ્યાન દ્વારા પરમાત્માનો સાક્ષાત્કાર અવશ્ય થાય છે.

—જીવનમાં સુખ કે દુઃખનું આવાગમન એ સ્વોપાર્જિત શુભાશુભ કાર્યોનું પરિણામ છે તેનું આવન-જાવન કર્મસત્તાના હાથમાં છે. પણ આવેલ સુખ કે દુઃખ ભી ખૂશ રહેવું કે વ્યથિત થવું એ આપણા હાથની જ વાત છે.

—સફલતા પચાવવી એ ઘણું કઠિન છે. જ્યારે સફળતા નથી પચાવી શકાતી ત્યારે માણસ અભિમાની, છીછરા, તુંડમીજાજી, અને બડાશપ્રિય બને છે.

—માનવ જીવનની તૃષ્ણાઓજ અહંકાર, વ્યામોહ, દિશાશૂન્યતા, મત્સર, રાગદ્વેષ સર્જીને જીવનને છિન્નભિન્ન કરી નાંખે છે.

—વીતરાગ દેવની નિરન્તર પૂજા, નિર્ગ્રન્થ ગુરૂઓની ભક્તિ અને શાસનની ધર્મપ્રભાવનાનાં કાર્યોમાં વ્યસ્ત રહેનારા પણ પોતાના જીવનને સુંદર ન બનાવી કતા હોય તે તેમનોજ દોષ છે. નહિં કે ધર્માનુષ્ઠાનોનો.

—તપેલા લોખંડના તવા ઉપર પડેલા જલબિંદુઓની જેટલી હયાતિ છે. તેટલીજ હયાતિ અયોગ્યમાર્ગે વપરાઈ રહેલાં વચન અને કાયા ઉપર ના જ્ઞાન બિંદુઓની છે. તે તરત જ અસ્તિત્વહીન થઈ જાય છે. જ્ઞાન પોતાનું કાર્ય કરે તે પૂર્વે જ તે નષ્ટ થઈ જાય છે.

—મનુષ્યવૃત્તિ અને પશુવૃત્તિ વચ્ચે જે તફાવત છે તે પરોપકાર વિગેરે ગુણોના વિકાસને વિષેજ છે. પરોપકાર વિગેરે ગુણો જયાં વિકસ્યાનથી ત્યાંજ પશુવૃત્તિ નું પ્રતિપાદન જ્ઞાની ભગવંતે કર્યું છે.

—જ્ઞાનીઓનાં વચન અજ્ઞાનતારૂપી સર્પનું ઝેર ઉતારી નાંખવા માટે ગારૂડી મંત્ર સમાન છે.

અજ્ઞાનતારૂપી સર્પનું ઝેર ઉતરતાંજ મિથ્યાત્વરૂપ અંધકાર પલાયન થઈ જાય છે.

—જગતના જીવો ઉપર માતાપિતાનો અમાપ ઉપકાર છે. એ ઉપકારો નો બદલો સામાન્ય ઉપાયોથી વળી શકે તેમ નથી. એ કારણે માતા-પિતા જીવે ત્યાં લગી સર્વોત્તમ રીતે તેમની ભક્તિ કરવી. એ ગૃહસ્થો નો પ્રથમ ધર્મ છે.

—પારકા ના હિતનું ચિંતન તે મૈત્રી, ગુણનો પક્ષપાત તે પ્રમોદ. દુ;ખ, દર્દથી પીડિતોનાં દુ:ખ-દર્દ દૂર કરવાની ઈચ્છા તે કરૂણા. અને દુષ્ટ બુદ્ધિવાળા જીવોની ઉપેક્ષા કરવી તે માધ્યસ્થ ભાવના કહેવાય.

—અતિ સ્નિગ્ધ પ્રણિતરસને ભોગવવાથી શુક્રનો સંચય થાય છે. શુક્રના સંચયથી કામવાસના ઉત્તેજિત થાય છે. કામવાસના જેની ઉત્તેજિત છે. તેને બ્રહ્મચર્ય વ્રત પાલવું દુષ્કર થાય છે.

—સ્વ-પરને અપકારક ન બની જવાય, એટલા માટે પણ સુખનો યોગ્ય નિર્ણય કરવો પરમાવાશ્યક કર્તવ્ય છે. પરોપકાર કરવાના આવેશમાં જે આટલો નિર્ણય પણ કરવા ઉભા રહેતા નથી. તેઓ તો પરોપકાર ના બદલે પરોપઘાત કરનારા થાય તેમાં લેશમાત્ર પણ આશ્ચર્ય નથી.

—ધનમાલને લૂટી લેનાર ધાડપાડુઓથી બચવા માટે જેટલી જાગૃતિ જરૂરી છે. તેના કરતાંયે અધિક સાવધગિરિ શ્રદ્ધા ધનને લૂંટી જનારા ધાડપાડુઓથી બચવા માટે રાખવાની જરૂર છે.

અવતરરકાર-મુનિશ્રી પ્રશાન્તરત્ન વિજયજી

આગમવાણી...

(ઉત્તરા. સૂત્ર-સાતમાં અધ્યયનો સારાંશ)

૧..જે રીતે ખાવા-પીવામાં મસ્ત બનેલો બોકડો મહેમાનનો ઈંતઝાર કરે છે એટલે કે મહેમાનના આવવા પર તેના માથાને ધડથી અલગ કરી પકાવીને ખાવામાં આવે છે એજ રીતે અધર્મી આત્મા નરકની ઈચ્છા કરે છે.

૨..તે અજ્ઞાની પ્રાણી હિંસા, જુડ, ચોરી લુંટેરો, માયાવી, સ્ત્રી-વિષય લંપટ, મહાઆરંભી મહાપરિગ્રહી અને માંસ મદીરાનું સેવન કરનાર, મોટી ફાંદવાળો અને જાડા શરીરવાળો થઈ નરકની ઈચ્છા કરે છે.

પરંપરા અને પરિવર્તન

– મુનિ શ્રીભુવનચંદ્રજી 'ચિન્મય'

ગચ્છ મત-સંપ્રદાયના નાના-મોટા સર્વ વિવાદોનું સંપૂર્ણ સમાધાન જેનાથી થઇ જાય એવી કોઇ 'ફોર્મ્યુલા' હશે કે કેમ તે ન કહી શકાય; કિંતુ વિવાદના સર્વ વિષયોને સ્પર્શે એવા કેટલાક "પાયાના સર્વમાન્ય વિચાર" જો તારવી શકાય તો ઉકેલની દિશામાં એક ડગલું આગળ જઇ શકાય.

કોઇ પણ ચર્ચામાં શાસ્ત્ર, પરંપરા, ઈતિહાસ વગેરે મુદ્દા તરત સામેલ થઇ જવાના. આ બધાં વિશે બંને પક્ષોના ખ્યાલ જો પરસ્પર મળતાં નહિ આવતાં હોય તો ઉકેલની આશા વાંઝણી જ રહેશે. આવા આનુષંગિક મુદ્દા પર ઉભય પક્ષે સંમતિ પ્રવર્તતી હોય તો અડધું કામ થઇ ગયું એમ કહી શકાય.

વિવાદોની સાથે સંકળાયેલ બે મુખ્ય બાબતો છે : શાસ્ત્ર અને પરંપરા. પરંપરા વિશે અહીં વિચારણા કરીએ.

શ્વેતાંબર વર્તુળોમાં પરંપરા માટે 'આચરણા' શબ્દ પ્રયોજન છે. આચરણા એટલે કે પરંપરા. એ જિનાજ્ઞા જેટલી જ માન્ય અને પવિત્ર છે. એવી માન્યતા લગભગ દરેક પક્ષે સ્વીકારી છે. પરંપરા છોડાય નહિ. પરંપરા બદલાય નહિ. વડીલોએ કર્યું હોય તેનાથી જુદું આપણે કેમ કરી શકીએ? વર્ષોથી જે થતું આવ્યું છે એ ખોટું હતું એમ આપણાથી કેમ કહેવાય? પરંપરાની રક્ષા કાજે ગમે એટલું સહન કરવું પડે તો તો તે કરીને પણ પરંપરા જાળવવી જ જોઇએ. આ પ્રકારના ખ્યાલોથી વિવાદના ઉકેલ પર છેલ્લો પડદો પડી જાય છે ને દરેક ચર્ચા "પાણીનું વલોણું" બનીને રહી જાય છે.

પ્રણાલિકામાં ફેરફાર થાય જ નહિ - એમ કહેતા હોવા છતાં અસંખ્ય ભિન્ન ભિન્ન પરંપરાઓ તો ઊભી થઇ જ ગઈ! "આચરણા એ આજ્ઞાતુલ્ય છે" એ સૂત્રના આધારે હવે પોતપોતાની પરંપરાને છોડાય પણ નહિ! આ આખી બાબત 'જ્યાંથી પાછા ફરી ન શકાય એવી અંધારી ગલી' જેવી બની ગઇ છે. વર્તમાન જૈનસંઘની અનિર્ણાયક અવસ્થાનું એક કારણ આ પણ છે. શાસ્ત્રનું માર્ગદર્શન પણ આપણને મુંઝવનારું બને તો એનું દેખીતું કારણ એક જ સંભવી શકે - તાત્પર્યનું અજ્ઞાન. વિદ્વત્તાભરી શાસ્ત્રીય ચર્ચાઓએ આ કોયડાને ઉકેલવાને બદલે વધુ ગૂંચવ્યો છે.

'નિષ્કપટ વ્યક્તિએ આચરેલી કોઇ નિર્દોષ પ્રવૃત્તિ, જેને ગીતાર્થોએ નિષેધી ન હોય, તેને મધ્યસ્થજનો બહુમાનપૂર્વક અપનાવે છે. કારણ કે એવી આચરણા એ જિનાજ્ઞારૂપ જ છે'. પરંપરાની પૂજ્યતા - પવિત્રતાનું અસંદિગ્ધ શબ્દોમાં પ્રતિપાદન આ રીતે થયું છે. પરંપરાના બચાવ માટે ખપમાં આવતું આ વચન પરિવર્તન પણ સૂચન કરે છે - એ તથ્ય કેમ કોઇના ધ્યાનમાં નથી આવતું એ વિચારે નવાઇ ઊપજે છે. શિષ્યવર્ગનું નેતૃત્વ જેમના શિરે હોય તેવા કોઇ આચાર્ય આદિને ક્યારેક એવી પ્રવૃત્તિ કે યોજના વિચારવી પડે છે, જે શાસ્ત્રથી અથવા ચાલી આવતી પ્રણલિકાથી દેખીતી રીતે જુદી પડતી હોય, પરંતુ શાસ્ત્રના હેતુ કે ભાવને બરાબર સાચવી લેતી હોય. શાસ્ત્રના મર્મને પિછાણનારા વિદ્વાનો તેવી પ્રવૃત્તિનો વિરોધ નહિ જ કરે, ઊલટું એનો આદર કરશે. 'આચરણા જિનાજ્ઞા સરખી છે' એમ કહીને શાસ્ત્રને પરિવર્તન પણ ધર્મક્ષેત્રમાં સન્માનિત સ્થાન આપ્યું છે. પ્રણાલિકામાં પરિવર્તન અસંભવ હોય તો આવી જોગવાઈ કરવાનો પ્રસંગ જ ક્યાંથી ઊભો થાત? કાળના પ્રવાહમાં એવા અવસર ફરી ક્યારેય ન આવે - એવું કેમ મનાય?

ધર્મક્ષેત્રે જુદા જુદા સંપ્રદાયોમાં જે જે રીતરિવાજ, પદ્ધતિ, પરંપરા વગેરે દેખાય છે તે બધી જ શાશ્વત/સનાતન જ હશે એમ સામાન્ય જનતા માનતી હોય છે. વસ્તુત: આજે પણ પ્રચલિત છે તેવી પરંપરાઓ અઢી હજાર વર્ષના ગાળામાં જુદા જુદા તબક્કે અસ્તિત્વમાં આવી છે. કેટલીયે પુરાણી પરંપરાઓ વિસ્મૃતિની ગર્તામાં સરી ગઇ છે. સંયોગો બદલાતાં પદ્ધતિ કે રિવાજ પણ પરિવર્તનપાત્ર બને છે. આજે પ્રચલિત છે તેમાંની ઘણી પદ્ધતિઓ સમયાનુરૂપ નથી રહી. શ્રમણસંઘના નેતાઓએ પરંપરાઓનું પુનરાવલોકન કરી કાળબાહ્ય થઇ ગયેલી - વિવિધ કારણોસર અસંગત કે અકાર્યસાધક બની ગયેલી - પરંપરાઓને સમાપ્ત કરી, નૂતન પગરણ માંડતાં અચકાવું જોઇએ નહિ. □□□

નિર્દોષ પશુઓની બેફામ કતલને રોકવા પશુ રક્ષણના વિકલ્પો

શ્રી સેવંતીલાલ સંઘવી

ક્રુર નિષ્ઠુર અને કાતિલ હિંસાને રોકવાના ૨ વિકલ્પો છે. માંગને ઘટાડી નાખવી. માંસનો ઉપાડ જ ન થાય તેવી પરિસ્થિતિનું નિર્માણ કરવું. એટલે કે માંસાહારની સામે જોરદાર ઝુંબેશ ચલાવી એનાથી થંતા નુકસાનની માહિતી આપી પ્રજાને જાગૃત કરવી, અને એ રીતે પ્રજાને માંસ ખાતી અટકાવવી. અલબત્ત આ કામ અતિ કપરું અને દુશ્કર છે. આજે માંસાહારી પ્રજા માંસ ખાય છે એટલું જ નહીં કેટલાક અહિંસાના ઉપાસકોના વારસદારો પણ ટેસથી માંસાહારી વાનગીઓ આરોગે છે.

૨. પુરવઠો માંસનો મળે જ નહીં, તે માટે કત્તલ કરવા પશુઓ જ ન મળે એવી ગોઠવણ કરવી એવું આયોજન કરવું.

આ માટે પશુપાલન એ શ્રેષ્ઠ માર્ગ છે. જ્યાં પણ આપણી ભારતીય પરંપરા પ્રમાણેનું પશુપાલન થતું હોય ત્યાં પ્રોત્સાહન આપો. શક્ય હોય એ રીતે સહાય કરો. સારાં ઢોરને યોગ્ય માવજતથી ઉછેરવાં જોઈએ. અને નબળાં-દુબળાં અશક્ત પશુઓ થતાં અટકે તે માટે દેશી (પરદેશી નહી) સાંઢ ઉછેર કેન્દ્રો સ્થાપી તેમની ઓલાદને નિરોગી. સશક્ત અને મજબુત કરવા પ્રચંડ પુરૂષાર્થ આદરી કતલ માટે પશુના પુરવઠાને તોડી નાખવો જોઈએ. જેથી આર્થિક રીતે કતલખાના ચલાવવા પરવડે જ નહીં.

ગ્રામપંચાયતો દ્વારા ભરાતા પશુમેળાઓ હાલ પુરતા તો બંધ જ થાય તે માટેના પ્રયાસો આદરવા જોઈએ કેમ કે કસાઈઓના દલાલોને પશુઓ ખરીદવામાં આ મેળાઓ ઘણા ઉપયોગી રહે છે.

ઘેંટા બકરાં ઉછેરવાં પરવડે તે માટે ઉનનું બજાર ઊભું કરવું જોઈએ. ઘેંટા-બકરા ઉછેરનારા માલધારીઓ વગેરેની લોન-સબસીડી વગેરે રાહતો આપવી જોઈએ.

પ્રજાએ ડેરીના બટર ઓઈલ-ચરબી મિશ્રીત અભક્ષ્ય દૂધ-ઘીને તિલાંજલી આપી દેશી પદ્ધતિ પ્રમાણે જ્યાં ઘી બનાવાનું હોય ત્યાનું જ ઘી વાપરવાનો ખાસ આગ્રહ રાખવો જોઈએ.

પરંતુ આ બધુ ત્યારે જ શક્ય બને કે જ્યારે પશુઓને બચાવવાની પાયાની વ્યવસ્થા પાણી-ઘાસચારો અને ખોળ પુરતા પ્રમાણમાં સુલભ રીતે મળી રહે. પશુઓના જીવનનિર્વાહની આ વ્યવસ્થા કરવામાં આવે તો મોટા ભાગના પશુઓ કત્તલખાને જતાં બચી જાય. આ વ્યવસ્થા કરવામાં સરકારને રસ નથી. સરકારને તો એ વ્યવસ્થા તોડવામાં અને કતલ વધારવામાં તેમજ માંસની નિકાસ વધારવામાં જ રસ છે. આ વ્યવસ્થા ઉભી

કરવા પ્રજાએ સરકાર ઉપર પ્રચંડ દબાણ લાવવું જોઈએ. તેમ છતાં સરકાર ન કરે તો છેવટે પ્રજાએ સરકારની જે કાંઈ સવલત મળતા હોય તે લઈને પણ આ વ્યવસ્થા ઉભી કરવી જોઈએ.

પશુઓ માટે ખોરાક-પાણી વગેરે સગવડો ઉપલબ્ધ થાય તે માટે અહિંસા-પ્રેમીઓએ સહિયારો પુરુષાર્થ કરી સમગ્ર પ્રજાનું ધ્યાન તે તરફ કેન્દ્રિત કરાવવું જોઈએ. પાણી અને ઘાસચારાની વ્યવસ્થા કરવાથી ઢોરોને યોગ્ય પ્રમાણમાં પોષણ મળશે. અને તેથી તેઓ દૂધ વધારે આપશે. તેમજ બળદ-પાડા-ઉંટ-ઘોડા વગેરે ભાર-વહન સારી રીતે કરી શકશે. આમ દુબળાં-પાતળા નકામાં સરકારની ભાષામાં બિનઉપયોગી લાગતાં પશુઓ સક્ષમ અને શક્તિશાળી બનશે. જેથી પશુ પાલકોને તે પાળવાં આસાનીથી પરવડશે.

આજે ઘેર ઘેરમોટર-સ્કૂટર વગેરે વાહનોને આપણે વસાવી રહ્યા છીએ. અને તેના દ્વારા થતા પ્રદુષણનો ભોગ પણ આપણે જ બની રહ્યા છીએ. આપણા બાપ-દાદાઓ પશુઓને પોતાની સાચી મિલ્કત ગણાય. પરિણામે પશુરક્ષા સહજ રીતે થતી હતી. આજે સરકારની અમૂક પ્રકારની વહીવટી નીતિઓને કારણે ચરીયાણાની જમીન વગેરેનો ઉદ્યોગોને હવાલે કરવાને કારણે શહેરોમાં તો શું ગામડાઓમાં પણ પશુ પાળવાનું અઘર બની ગયું છે. ગામડે ગામડે પાણીની રોકકળ અને ચીસાચીસ છે. ખુદ પ્રજા-માનવો જ પાણી માટે ટળવળતાં હોય ત્યારે પશુઓને પાણી કોણ પીવડાવશે?

પાણીની સમસ્યાને હલ કરવા કુદરત આપણને છૂટે હાથે જે મફત પાણી આપે છે તે પાણીને ગામડે ગામડે તળાવો ઊંડા કરાવીને તેમજ નદીઓને પ્રજાના શ્રમથી ઊંડી કરીને સંઘરી લેવું જોઈએ. વળી જમીનના ધોવાણથી ફરીને પુરાઈ ન જાય તે માટે કાંઠાને મજબુત કરી આજુબાજુમાં ઘાસ વાવી ઝાડ ઉછેરી જમીનના ધોવાણથી તળાવો-નદીઓની રક્ષા કરવી જોઈએ.

ઘાસચારા માટે રોકડીઆ પાકોને બદલે બાજરી-જુવાર-રાગી-મકાઈ વગેરે બરછટ અનાજ વાવવા ખેડૂતોને પ્રોત્સાહન આપવું. ખેડૂતો આવા પ્રકારનું અનાજ ઉગાડવા લલચાય તે માટે સરકાર તરફથી સબસીડી લોન વગેરે રાહતો અપાવવી જોઈએ. અથવા યોગ્ય ભાવે મહાજન તે અનાજ ખરીદી લે તેવી વ્યવસ્થા કરવી જોઈએ. જુવાર-બાજરાના સાંઠા (કડબ)માં ઘઉંના સાંઠા કરતાં પૌષ્ટિકતા વિપુલ પ્રમાણમાં હોય છે. તે ખાવાથી પશુઓ હુષ્ટ-પુષ્ટ બને છે. ખોળની નિકાસ સરકાર તાત્કાલિક બંધ કરે તે માટે સરકારને સમજાવવી જોઈએ. ખોળના નિકાસથી જે હુંડિયામણ મળે છે તેના કરતાં અનેકગણું હુંડિયામણ દૂધનું ઉત્પાદન વધારવાથી બચાવી શકશે. આ નક્કર હકીકતો સરકારના ધ્યાન ઉપર લાવવી જોઈએ.

આ બધી પાયાની ચીજો છે. હાલના સંજોગામાં માત્ર પાંજરાપોળો કરવાથી પશુઓને બચાવી શકશે નહીં. પાંજરાપોળો બાંધવી-લચાવવી અને તેમાં ભૂખે મરતા

દુષ્કાળગ્રસ્ત પશુઓને ઘાસચારો વગેરે આપી એમનું રક્ષણ કરવું એ આપણી હજારો વરસની પરંપરા છે. પણ પાંજરાપોળો તો ખોડાં-ઢોર એટલે કે લૂલાં-લંગડાં-બિમાર-રોગી અસહાય-નિરાધાર, અશક્ત, નબળાં પશુઓ ને-નિભાવવા માટે છે. હવે તો તમામ અથવા મોટા ભાગનાં પશુઓને ચોક્કસ આયોજન દ્વારા અશક્ત-નબળાં બિમાર બનાવી દેવાયાં છે. આ બોજો પાંજરાપોળો કદાપી ઉઠાવી શકે નહીં. જેથી છેવટે તે તમામ પશુઓ કતલખાને જ જાય, અથવા પાણી-ઘાસચારા વિના તરફડીને પાંજરાપોળોમાં જ મૃત્યુને શરણ થાય.

આ વાસ્તવિકતા સામે લાપરવાહ કે બેદરકાર રહીને માત્ર પૈસા આપીને કતલખાને જતા શુંને બચાવવાથી કે અમુક દિવસ કતલખાનાં બંધ કરાવવાથી કે તે દિવસે કપાનારાં પશુઓને બચાવી લેવાથી પણ યોગ્ય હેતુ સિધ્ધ થશે નહીં. કેમકે એ બચાવેલા પશુઓને પીવા માટે પાણી અને ઘાસચારાની વ્યવસ્થા નહીં હોય તો એ પૈસા ખર્ચીને બચાવેલાં પશુ પણ ભૂખમરાથી અને પાણી વિના રીબાઈ-રીબાઈને મરી જશે. ત્યારે આપણે મોં વકાસીને જોયા કરશું.

"આપણા દેશમાં આપણું રાજ એવા આપણા જ દેશના અર્થતંત્રનો કૃષિ નીતિનો-શિક્ષણનો ઢાંચો જ એવી રીતે ગોઠવાયો છે કે કટ્ટર જીવદયા પ્રેમી વ્યક્તિ વડાપ્રધાન બને તો પણ આજની વિષમ હિંસા ને અટકાવી ન શકે। આવી પરિસ્થિતિ આપણી સામે નિર્માણ થઈ છે ત્યારે જીવદયાની પશુરક્ષાની વ્યૂહરચના એવી હોવી જોઈએ કે જેથી ખરેખર જીવોને બચાવવામાં આપણે સહભાગી બની શકીએ.

ટૂંકમાં પશુરક્ષા માટે-એના જીવન નિર્વાહ માટે પાણી-ઘાસચારો અને ખોળ જેવી પાયાની સુવિધા કર્યા વગર જીવદયાની પશુઓને બચાવવાની વાતો કરવી તે હવામાં બાચકાં ભરવા જેવી મુર્ખામી ભરી વાતો છે. ફરી-ફરીને સમસ્ત અહિંસક ભારતીય આલમનું એ વાત પર ધ્યાન કેન્દ્રિત કરવા માગું છું કે પશુરક્ષા માટે પાણીની વ્યવસ્થા (ટ્યૂબવેલ કે બંધ બાંધીને નહીં. પણ વરસાદના પાણીનો સંગ્રહ કરીને) કરી ઘાસચારા માટે જુવાર-બાજરાનું વાવેતર વધારતા જવું એ પાયાની મુખ્ય બાબતો છે. એ બાબતોનો અમલ ન થાય તો વિશ્વની કોઈપણ તાકાત આ દેશના પશુઓને બચાવી શકશે નહી.

કોમભોગની સામગ્રી પોતે સમતા કે વિકાર પ્રત્યે જતી નથી, પરંતુ તેમને ગ્રહણ કરતી વખતે મનની જે સ્થિતિ હોય છે, તે પ્રમાણે સમતા કે વિકાર પ્રાપ્ત થાય છે. જે તેને આના સક્ત ભાવે ભોગવે તેને સમતા પ્રાપ્ત થાય છે. અને આસક્તિ પૂર્વક ગ્રહણ કરે તથા ન મળે તો તેના તરફ દ્વેષ કરે એનો મોહ વૃદ્ધિ પામતાં વિકાર પ્રાપ્ત થાય છે.

[ઉત. અ. ૩૨, ગા. ૧૦૧]

स्वास्थ्य–चर्चा

टीन फुड की तैयार खुराक कितनी सलामत!

पश्चिमी अंधानुकरण के कारण फास्ट फुड में भी टीन–फुड की संस्कृति अब जोरों का विकास कर रही है। इसके उत्पादन से संबंधित लोग इसके शुद्ध और हवा रहित (एअर–टाइट) होने का दावा करते है और विभिन्न प्रकार के विज्ञापनों द्वारा उपभोक्ताओं को इस ओर प्रेरित करते हैं। किन्तु क्या आप जानते हैं कि टीन फुड में साइनाइड से भी ज्यादा खतरनाक जहर हो सकता है?

अमेरिका आदि पश्चिमी देशों में टीन फुड का प्रचलन ज्यादा है। यद्यपि वहाँ पर आवश्यक स्वच्छता एवं शुद्धता पर ध्यान रखने के बावजूद भी टीन फुड में जहर प्रसार की घटनायें बनती है जब कि शुद्धता व स्वच्छता का ख्याल हमारे यहाँ कितना रखा जाता है यह तो सब जानते ही हैं। जिस राष्ट्र में दवाईयाँ एवं इंजेक्शन की गुणवत्ता जांचने के लिये कायमी एवं व्यवस्थित तंत्र नहीं अथवा स्टाफ व व्यवस्था नहीं है, तो टीन फुड की जांच के लिए अधिकारी गण योग्य कार्य करेंगे, ऐसी अपेक्षा कैसे रखी जा सकती है?

क्लोस्ट्रीडीयम बोटुलीझम, जिसका संक्षिप्त नाम है सी–बोटुलीझम। मात्र तीन या चार माइक्रोमीटर यह जीवाणु लम्बा होता है। एक मीटर का दस लाखवां भाग एक माइक्रोमीटर होता है। यह जीवाणु हवारहित टीनफुड डिब्बे में आ जाने के बाद उसमें ऑक्सीजन न होने से चयापचय की क्रिया द्वारा बोटुलीनस नामन जहर उत्पन्न करता है, जो खुराक में शामिल हो जाता है और पैक टीन खरीदनेवाला अनजाने में उसे खरीदता है।

इसका उपयोग करने पर व्यक्ति को प्रथम पक्षाघात (लकवा) का हमला होता है। शरीर में प्रवेश किया हुआ जहर ज्ञान तंतुओं के संचार को बंद कर देता है। फेफड़े एवं हृदय की गति कन्ट्रोल में रखने का कार्य ज्ञानतंत्र का है अतः मृत्यु जल्दी आती है।

पिछले कई वर्षों से वैज्ञानिक इस जहर को समाप्त करने के लिये संशोधन कर रहे हैं। जिस हेतु अमेरिकी सरकार ने करोड़ों रुपये का बजट रखा है, किन्तु रोबर्ट हाइक नामक एव वैज्ञानिक ने कहा है कि २१२ डिग्री फॅरेनहाइट तापमान पर भी सी–बोटुलीझम जीवाणु मरते नहीं है। टीन फुड के कौनसे डिब्बे में यह हानिकर जीवाणु छुपे हुए है, यह जानना असंभव है।

अपना देश गर्म प्रदेश है, यहाँ ताजे फल, सब्जियाँ प्रतिदिन ठंडे पानी से धोकर उपयोग में लेने का रिवाज हैं। तैयार पेक टीन फुड हमारी संस्कृति, रिवाज या आरोग्य के साथ खिलवाड़ है, अतः उससे दूर रहना ही हितकरी है।

'धर्ममित्र'

साहित्य मनिषी आचार्य देव श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा लिखित / सम्पादित उपलब्ध साहित्य आज ही मंगवाइये ।

* नमो मन से नमो तन से — पांच रूपये
  नवकार पर आधारित प्रवचनों का सुन्दर संकलन (द्विरंगी मुद्रण)
* जीवन ऐसा हो — पांच रूपये
  (मार्गानुसारी के पेंतीस गुणों का वर्णन, द्विरंगी आकर्षक मुद्रण)
* जयन्तसेन सतसई — चार रूपये
  (विविद विषयों पर ७०७ दोहों का संकलन)
* ज्योतिष प्रवेश — सात रूपये
  (ज्योतिष सम्बन्धी प्रारंभिक जानकारी)
* नवकार गुण गंगा — पांच रूपये
  (नवकार पर सुन्दर / भाववाही स्तवनों का संकलन)
* चिर प्रवासी — चार रूपये
  (जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर उपदेशात्मक मुक्तक)
* गुरूदेव पुष्पांजलि — तीन रूपये
  (श्रद्धेय गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के भक्ति गीतों का संग्रह)
* तीर्थ - वंदना — तीन रूपये
  (विविध तीर्थों के मूलनायक भगवंतों के स्तवन)
* भगवान महावीर ने क्या कहा ? (हिन्दी/ गुजराती) — बीस रूपये
  (आगम ग्रन्थों से चुनी हुई २५० सुक्तियों पर सुन्दर विवेचन)
* भक्ति सागर — दो रूपये
  (स्तवनों का संकलन)
* अरिहंते शरणं पवज्जामि (हिन्दी/ गुजराती) — दस रूपये
* यतीन्द्र मुहुर्त दर्पण — इक्कावन रूपये
  (मुहूर्त संबंधी वृहद् संकलन)
* भक्ति प्रदीप (स्तवन) — दो रूपये
* हेम मुक्ति स्वयं सुधा (गुजराती) — पांच रूपये
* नवकार आराधना (हिन्दी / गुजराती) — पांच रूपये
  (नवकार पर मननीय प्रवचन)
* अष्टान्हिका व्यख्यानम् — दस रूपये
  (पर्युषण व्याख्यान)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (वृहद्) (गुजराती) — इक्कीस रूपये
  (विविध पूजायें रंगीन चित्रो के साथ)
* जिनेन्द्र पूजा संग्रह (लघु) — दस रूपये
  (विविध पूजाये रंगीन चित्रो के साथ)
* पंचप्रतिक्रमण विधी सह (पॉकिट साईज) — दस रूपये
  (प्रतिदिन आवश्यक क्रिया में उपयोगी)

उपरोक्त पुस्तकें मंगवाने हेतु मूल्य के साथ प्रति पुस्तक पोस्टेज एक रूपया जोड़कर मनीआर्डर निम्नांकित पते पर भिजवायें —

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं?

कि आज के प्रचलित टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जाने वाले फॉस्फेट और जिलेटिन का निर्माण मृत प्राणी की हड्डिओं से किया जाता है? कई लोगों को इस का पता नहीं है. मृत प्राणी की हड्डियों का इस्तेमाल जिस टूथपेस्ट या टूथ पाउडर में किया जाता हो, इसको उपयोग में लाना उचित नहीं है.

अमर टूथपेस्ट — टूथपाउडर में

किसी भी अभक्ष्य पदार्थ का इस्तेमाल नहीं होता. आयुर्वेदिक जड़ी बुट्टियों का इन में बहुत ही सावधानीभरा उपयोग किया जाता है

आयुर्वेदिक
अमर
टूथपेस्ट - टूथपाउडर

**नये युग की हर्बल-लहर
जो दांतों को निरोगी, मज़बूत और
चमकता रखे.**

अमर टूथ पाउडर, एक्स्ट्रा स्ट्राँग के नियमित उपयोग से पायोरिया तक के दांत और मसूड़ों के विविध रोग मिट सकते हैं. और श्वास की दुर्गंध भी दूर होती है.

आदर्श दंत-रक्षक — रेग्युलर टूथपेस्ट. रु. ७.५०
आदर्श दंतरोग-निवारक — स्ट्राँग टूथपेस्ट. रु. ८.५०
पायोरिया के इलाज के लिए आदर्श — एक्स्ट्रा स्ट्राँग टूथपाउडर. रु. ११.५०

भारत का एकमात्र अहिंसक आयुर्वेदिक उत्पादन.

निर्माताः स्वामि औषधालय प्रा. लि., ४९७, एस.वी.पी. रोड, बम्बई-४०० ००४.
फैक्ट्रीः ४६४, न्यू जी.आई.डी.सी., कतारगाम, सुरत-३९५ ००८.

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।